॥ सू.सा ॥ की लीला ॥ राग केदारो ॥ मदन मुरति मुहाई आई राति ॥ चहूं दिसि फूलि र
॥ १५२ ही वन जाति ॥ १ ॥ देखि स्यांम मन सुख भयो ॥ ससि गो मुंडित न मु
नोरयो ॥ त्रय विधि पवन देवन हैं नु ॥ श्री राधा रमन वजायो
वेंनु ॥ ३ ॥ सुनि धुनि गोपिन उपज्यों मेंनु ॥ जहां तहां ते ठठि चली मे
नु ॥ ४ ॥ चलत न काहूं दियों जनाव ॥ हरि प्यारे ते वाढों भाव ॥ ५
रासरसिक गुन गाय हों ॥ १ ॥ घर डर विसरी वढ्यों उछाह ॥ मन ची
त्यों पायों हरि नाह ॥ पति सुत की छांडी सब आस ॥ गोधन भर
ता कियों निरास ॥ सांचो हे तन हूं पिसो कियो ॥ खान पान तन क
िन समसार ॥ हिलमिल छुटायो गृह व्योंहार ॥ सुधि बुधि मोहन
हरि लियो ॥ मंजन अंजन श्रृंगार सिंगार ॥ पट भूषन छूटे परिवा
र ॥ रासरसिक गुन गाय हों ॥ २ ॥ एक दुहावन ते उठि चली ॥ पति
सेवा कछु करि न भली ॥ जाके ठाहूं पिसो वाढ्यों ॥ उफनत दूध
न धर्यो उतारि ॥ सीपी पुलरी लुल रहूं डारि ॥ पाछें जाने वन हूं
ते ॥ पेप्या वन वालक धरि चली ॥ धर्यो रहे जन मय भली ॥ ते
ल फुलेल उवटना भूल ॥ भाग पन पायो जीवन मूल ॥ रासरसि
क गुन गाय हों ॥ ३ ॥ अंजन नाक नेंन विसर्यो ॥ कर्त्विकें चुकि ल
हूंगा उर धर्यो ॥ हार लपेटे चरन सो ॥ श्रवणनि पहिरे उलटे गा
ता ऊपर चोकी सिंगार ॥ चतुर चतुरता हरि लिए ॥ ताकों मन
मोहन हूं पिल्लियो ॥ जाकों वा हून कछु कियो ॥ ज्यों पति सों वि
परुषि करें ॥ भवां भरि सांच्यो मुरली नार ॥ सुनि धुनि छांडे गोवि
षें सवार ॥ रास रसिक गुन गाय हों ॥ ४ ॥ मात पिता पतिरो की
आंनि ॥ सही न जाय प्रेम रस नवी हांनि ॥ सव हि के आप मांन क
रि ॥ नाकों मन जासों अटक्यो ॥ रहे न न ता विनु जिए हटक्यो
कठिन प्रीति को फंद रहे ॥ जैसें सलिता सिंधुहि भजें ॥ कोरि गि
रि भेदत ना हि न लजें ॥ ऐसी गति उनकी भई ॥ एक जो मन हू ने
निकसी न दही ॥ हू पिकरुणा कपि आपे न दही ॥ रासरसिक गुण
गाय हों ॥ ५ ॥ जो रस कवि न कहे हूं रस रीति ॥ रस की लीला रस प
रतीति ॥ इह मति सुक मुख जानी वाँ ॥ ब्रज वनिता आई पियपा
स ॥ चितए नेंननि भृकुटि विलास ॥ हरि पूछी हरि मान दें मी
वें आई मारग मांझ ॥ कुल की नारिन निकसें सांझ ॥ कहां कहें
तुम जे मगाहो ॥ ब्रज की कुशल कहो बड़ भाग ॥ कोंन तुम छांडे सु
वन सुहाग ॥ रासरसिक गुन गाय हों ॥ ६ ॥ अब ज हूं फिरि अपने

www.vallabhacharya-agrahara.org

गहुजाहु ॥ परमेश्वरकरि मानोनाहु ॥ वनमें निशि वसियें नहीं
श्रीवृंदावन तुमरेंछोंपाय ॥ सुखरूक मोरिनि प्रफुलित जा
इ ॥ जमुनाजल सीकर घना ॥ परमाहिं जुवती धर्म छिपनें ॥ जावि
नुमुन पतितृपितें सबें ॥ पहुविधनारचनारवा ॥ भरताकी सेवा
सतसार ॥ कपट तजे झूटें संसार ॥ रासरसिक गुन गायहें ॥ ७ ॥ वि
रघ अभोगी जो पति होइ ॥ मूरख रोगी तजे न जोइ ॥ पतितन विल
तकरि छांडियें ॥ तजि भरतारहि जारहि लीन ॥ ऐसी नारि नहिं
यकुलीन ॥ जसविहून नरकहि परें ॥ बहुत कहूं समुझाउ आजु
हमसूं कछु कपिवेग टहुकाजु ॥ तुमनें को अजिं जानिहें ॥ श्रीमुख
वचन सुनत विलखाय ॥ व्याकुल धरनि परी मुरझाय ॥ रासर
सिक गुन गायहें ॥ ८ ॥ दारुणचिंता वश्यों नथ्योर ॥ क्रूर वचन
कहें नंदकिसोर ॥ अब मरन सहूंनहीं ॥ रुदन वरतिन खिर्दी ॥
गंभीर ॥ हरिकपि अंतरनहिं जानें पीर ॥ सुचपां वलि अपवलं नहें
तुमरी बहुत पियकआस ॥ विन अपराध कहा रहु निरास कैन
वरूषाई छांडियें ॥ निठुर वचन जनि बोलहु नाथ ॥ छिनदासी
जनि करहु अनाथ ॥ रासरसिक गुन गायहें ॥ ९ ॥ मुख देखन
सुख पावत नैंन ॥ श्रवण सिरात सुनत मृदुवेंनु ॥ सेंन निहाप
सब सहु हरुयौ ॥ मंदहहसनिप जायो कांम ॥ अधरसुधाधुनि
करि विश्राम ॥ वरषि सांचि विरहानला ॥ जब तें हमरे खेईपा
य ॥ तब तें औरन कछु सुहाय ॥ कहो घोष हम जाहिं कौं ॥ सज
नबंधु कोक हिंकांनि ॥ तुम निठुरत पिय आनतम हांनि ॥ रास
रसिक गुन गायहें ॥ १० ॥ वेंनु बजाय बुलाई नारि ॥ साहि आई कु
लसव की गारि ॥ मन मधुकर लंपट भयो ॥ मोउ सुंदरि चतुर
सुजांन ॥ आरज पंथ तजे सुनि गांन ॥ तिन देखत पुरुषउलजें
बहुत कहूं वरनों यह रूप ॥ औरन त्रिभुवन सरन अनूप ॥ व
लिहारी यारी तिहारी ॥ मुनि मोहनविन नी रेंखांन ॥ अपजस कि
एहो यअ पमांन ॥ रासरसिक गुन गायहें ॥ ११ ॥ तुम हम कों उप
देसेउ धर्म ॥ ताको कछु न पायो मर्म ॥ हम अव कागा तिहीनहें
दुखदाता सुत पति ग्रहबंध ॥ तुमरी कृपा विन सव बहुगा अंध
तुमतें प्रीतम और नकों ॥ तुमसों प्रीति करहियें धीर ॥ तिनहि
न लोक वेदकी पीर ॥ पाप पुन्य तिनकें नहीं ॥ आसापास वंधी
हमवाल ॥ तुमहि विमुख कें हैं वेहाल ॥ रासरसिक गुण गायहें ॥ १२ ॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥रास॰ विरहतुम्हारेदीनदयाल॥करसोंकरधरिप्रतिपाल॥भुजदंडनि
॥२५३ खंडहूविथा॥जैमेंगुणरीरिझवेकला॥कपिनकबहूंनहिंमानै
भला॥मरयोहूरयहूमपरकरो॥प्रभकीलाजवडाईतोहि॥क
रहुक्रपाकरुणाकरिजोहि॥तुमहिहमारेगतिसरा॥दीनवच
नजवयुवतिनकहे॥सुनतश्रवणलोचनजववहे॥रासरसिक
गुनगायहूं॥२७॥हसिबोलेहरिबोलाबोडि॥करजोरेंप्रभुनाम
वछोडि॥हूंअसाधुतुमसाधुहूं॥मोकारणतुमभईनिसंक
लोकवेदपुरानकौरंक॥सिंहसरणजंबुकवसे॥विनदाममनि
हूंलीनोंमोल॥करतनिरादरभईनलोल॥आवहुहिलिमिलि
खेलिए॥ब्रजयुवतिनघेरेंहनराम॥मनहुनिशाकरनिसमाम
रासरसिकगुणगायहूं॥२८॥हरिमुखदेखनभूलेनैन॥अउम
गेकछुकहनवैन॥श्यामहिगावतकोंभव[illegible]रसनहसाव
तकरिपरिहास॥मनमेंकहतकरेंअवरास॥अंचलगहिवंधे
नचल्यों॥त्यायोंकोमलपुलिनमझारि॥नरवसिखभूषणअं
गसलारि॥पटभूषनयुवतिनसजे॥अंकुचयरसनपुजईसवसा
ध॥रससागरमनोमगनअगाध॥रासरसिकगुनगायहूं
२९॥रसमेंविरसजुअंतरधान॥गोपिनकेउपजेअभिमान॥वि
रहकथामेंकोंनमुख॥वारसकोसरासपरखान॥ताकोवैसे
होतवखान॥आसपासजमुनाझिली॥तामेंमानसरोवरिताल
कमलविमलजलपरमरसाल॥सवहिखगमगशुभकरे॥नि
कटकलपतरुवंशीवट॥श्रीराधारानियरहकुंजनिअट॥रास
रसिकगुनगायहूं॥३०॥नवकुमकुमसवरखतजहां॥उडतक
पूरधूरितहांजहां॥औरफूलफलकोगणे॥तहांघनस्यामराम
रसरच्यो॥मरकतमणिकंचनसोखच्यो॥अद्भुतकौतुकप्रगट
किए॥मंडलजोरियुवतिजुहूंवनी॥द्वैद्वैहूविचस्यामघनघ
नी॥सोभाकहतनआवई॥घूंघरमुकटविराजतसीस॥सोभि
तससिमनोसहसवतीस॥रासरसिकगुणगायहूं॥३१॥मुनिकुं
डलतांटंकविलोल॥विहसतलज्जितललितकपोल॥अलक
तिलकवेसरिवनी॥केसरीराजमोतिनहार॥चचरिचुरीकिं
किनिझनकार॥चोकीखिमकतउरलगी॥कोसुंभमनिराजति
रुचिपोति॥दशानदमकिदामिनिनिजोति॥सरसअधरपल्लव
बने॥विंबुकमध्यअमलरुचिविंद॥देखिसखनिरीझेगोविंदु

www.vallabhacharya-agrahara.org

रासरसिकगुणगायहों ॥ १९ ॥ सवनबिमांनगगनभरिरहें ॥ कौ
तुकदेखनअमरसुमदे ॥ नेनसुफलसबकेभए ॥ बाजेदेवलो
कनिसांन ॥ बरखतसुमनकरतसुरगांन ॥ मुनिकिन्नरजेधुनि
करें ॥ युवतिन्हूबिसरीपतिगतिगेह ॥ प्रेममगननसबसहितस
नेह ॥ यहसुखहमकोंहोंकहां ॥ सुंदरताससबगुनखांनि ॥ रास
रसिकगुनगायहों ॥ २० ॥ नीलकंचुकीमांडनलाल ॥ भुजनिन
वरपरापुरखनमाल ॥ पीतपिछोरीस्यांमतनु ॥ अंगुरिनमुदरी
पहुंचीपांनि ॥ कछिकटिकछिनीकिंकिनिबांनि ॥ अनितंबबे
नीफरें ॥ नानावंधनसुघनजघन ॥ पाइननूपुरबाजतसघन
नखनिमहाउरखुलिरह्यों ॥ श्रीराधामोहनमंडलमांझ ॥ मनहु
राजतिसंध्यासांझ ॥ रासरसिककुनगायहों ॥ २१ ॥ पगापटकनल
टकनलटबाहु ॥ मस्कनभोंहनहस्तउछाहु ॥ अंसनवंकलफ
का ॥ निरखनदृरिदृरिनेंननिसेंन ॥ मुखमुखावेहसिकहतिम
दुवेंनु ॥ मण्डितगंडप्रस्वेदकन ॥ चोरीउरसिगलितकेश ॥ कुसुम
लटकनमुकटसुदेस ॥ फूलबसनतहिगवने ॥ कुसुमवंधुपावन
जसुगाइ ॥ रिझतमोहनकंठलगाइ ॥ रासरसिककुनगायहों ॥ २२ ॥
बाजतभूषणतालमृदंग ॥ अंगनिस्वावनसरससुगंध ॥ रंगर
ह्योनकछोपरें ॥ नूपरकंकनकिंकिनिचुरी ॥ उपजतमिलिसतधुनि
मधुरी ॥ सुनतसिरातेश्रवनमन ॥ मुरलीमुरजरबावउपंगउघ
टतसबदविहारीसंग ॥ नागरिसबगुनआगरी ॥ गोपीमंडलमं
डितस्यांम ॥ कनककनीलमनिजनुअभिरांम ॥ रासरसिकगुण
गायहों ॥ २४ ॥ निरपलेतिसुंदरभामिनी ॥ मनहुविराजितघन
दांमिनी ॥ पाछविकीउपमानहीं ॥ श्रीराधागातिपरततनलवी
रससागरकीसीवानरी ॥ बलिहारीबारूपकी ॥ लेतिसुघरअै
घरगतितान ॥ देखुंवनआकर्षतिप्रांन ॥ मेटतिभेटतिदुखस
वें ॥ रसबतिपियहिकुचनिविचप्रांनि ॥ देत्रअधरामृतअघिरपरपां
नि ॥ रासरसिकगुनगायहों ॥ २३ ॥ हरषितदेवनबजायोखेल ॥ बे
दहिबिसरीनभकीगेल ॥ ताराणगनमनमेलजे ॥ मोहनधुनिबे
कुंठहिगई ॥ नारायणमुनिप्रीतिजोभई ॥ कहतबचनकमलामु
नों ॥ श्रीकुंजविहारीविहरनदेषिव ॥ जीवनजनमसुफलकरिले
खि ॥ यहसुखतिहुंपुरहेंकहां ॥ श्रीवृंदावनहमतेंअतिदूरि ॥ के
सेंधोंनउडिलागेंधूनि ॥ रासरसिकगुनगायहों ॥ २५ ॥ कोलाहु

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥स॰मा॰॥ लरहुरिछि जाति ॥ कल्पसमान भई सुखराति ॥ नीवजंतु में मत
॥२५॥ सबै ॥ पुलरिव ह्वै जमुना को नीर ॥ बालक वछन पीवें छीर ॥ रा
धा एवन ठौर सवें ॥ गिरवर तरवर पुलकित गात ॥ गोधन थन
तें दूध चुचात ॥ मुनि रषाम्रग मुनि भ्रमत भयो ॥ महि भूली भूल्यौ
गति पवन ॥ सोवत ग्वाल तज तनहि भवन ॥ रास रसिक गुन
गाय हौं ॥ २५ ॥ रागरागिनी मूरति मंत ॥ हूल हूहूलछिनि सरस्मा
संत ॥ चौंसठ कला संगीत गुर ॥ सप्त सुरनकी जाति अनेक ॥ नी
कें मिलवति राधा एक ॥ मनमोहौं पिय को सुघर ॥ वीर धुअ
निकें भेद अपार ॥ नांचत कू आइ मिले रूपनार ॥ कहौं सबें संगी
तमें ॥ सरससु लप धुनि घटत आव ॥ पिक निसि वनगावति
सुपर ॥ रासरसिक गुनगाय हौं ॥ २६ ॥ चलत सुलप मोहति गज
हंस ॥ हंसन फरस गावत गंस ॥ तान मान ग्राम सुथानके ॥ गोरी
बंरन वोर्वित वाहु ॥ लेत सुवास पुलकित तनु वाहु ॥ देखें कनहू रिसु
ख लियों ॥ स्याम ल गोर कपोल सुचार ॥ मेलि परसपर लेत उगार
एक ग्रास नखे हूँ हूँ ॥ नांचत गावत गुन रवनि ॥ भ्रमित भये रे
कत पिय पंनि ॥ रासरसिक गुन गायहौं ॥ २७ ॥ पिक गावत अ
तिनाद हिं दें त ॥ मोर चकोर र त संग हित ॥ घन हाई में मं
नों ॥ कच कुच वि वरन सि स्याम ॥ चलत भोह निनें नैन अ
भिराम ॥ अंगन को अनंग छवि ॥ हस्तक भेद ललित गति लई
अंचल उडत अधिक छवि भई ॥ टुटे वि गलित माला गोरी ॥ हरि
करुणा कर लई उठाय ॥ पोंछत श्रम जल कंठ लगाय ॥ रासरसि
क गुन गाय हौं ॥ २८ ॥ तिनहि लिवाय जमुना जल आए ॥ पुलिन पुनी
त निकुंज नि ठौर ॥ अंग भ्रमित सबके भए ॥ जैसें मद गज कुल वि
हारि ॥ तैसें संग लें सैली नारि ॥ कनका हूकी करी ॥ मेंटी लोक वे
द कुल मेंड ॥ निकसि कुंज करिए उ ॥ पढौ सबें जो मन ध
री ॥ जल थल क्रीडत वृंदावन हीं ॥ तिनकी लीला परमिति न कहीं ॥
रासरसिक गुन गायहौं ॥ कहौं भाग वत शुक अनुराग ॥ कैसे
समुझे विन वड भाग ॥ श्री गुरु वल्लभ कृपा करी ॥ सूर आस करि
वरन्यो रास ॥ चाहत हौं वृंदावन वास ॥ श्रीराधा रतनी करि कृ
पा ॥ निस दिन स्यामा सें उ मोहि ॥ इहै कृपा कीरी जे मोहि ॥ न
व निकुंज सुख पुंज में ॥ हरि वंसी हरि दासी जहां ॥ हरि करुणा
कर रास हूँ तहां गैनि विहार आधार दें ॥ कहत सुनत वाढै रस

www.vallabhacharya-agrahara.org

रीति ॥ वकतओनाहूरिपदृष्टीति ॥ दासदासिवकगुनगायहो ॥ २९ ॥
ग्र थ वि से प व वं दू राग ॥ राग टोडी ॥ मुरलीसुनतभईसबबोरी ॥ म
नहुपरीसिरमांकठगोरी ॥ जोजैसेंसोतैसेंसौरी ॥ तनव्याकुलस
वभईकिशोरी ॥ कोउधरनीकोउगगननिहारें ॥ कोउकरक
रतेंबासनडारें ॥ कोउमनहींमनबुद्धिविचारें ॥ कोऊबालक
नहिंगोदसभारें ॥ ३ ॥ घरघरेंतरुणिसवेंवितनांनी ॥ सुतपा
तिआरजपंथभुलानी ॥ ४ ॥ मनमनकहतिकोंनयहवांनी
दूतिघरणिसवेंवितनांनी ॥ ५ ॥ सुतपतिआरजपंथभुलानी
मनमनकहतिकोंनयहवांनी ॥ ६ ॥ लेंलेंनामसवनिकोथें
मुरलीधुनिघरहीकेनेरें ॥ ७ ॥ कोउजेवजपतिहीतनहेरें ॥ को
ऊदधिमेंजावनपेंफेरें ॥ ८ ॥ कोउउठिचलीजैसेंहीतैसें ॥ पि
हिआवेंघरहीमेंपेसें ॥ ९ ॥ घरपाछेंमुरलीधुनिएसें ॥ आंग
नआएनहींवहतेसें ॥ १० ॥ गृहगुरजनतिनहूंसुधिनाहीं ॥ को
उकतहूंकोउकतहींजाहीं ॥ ११ ॥ कोउनिरखतनहिकाहूमां
हीं ॥ मुरछिमदनतरुणीसवद्याहीं ॥ १२ ॥ व्याकुलभईसवेंव्र
जनारी ॥ मुरलीसोंवोलीगिरिधारी ॥ १३ ॥ चलीसवेंजहांतहां
सुकुमारी ॥ उपजीप्रीतिहृदेंअतिभारी ॥ १४ ॥ मुरलीस्यामअन
पवजाई ॥ विधिमरजादावनिभुलाई ॥ १५ ॥ निसिवनकोंयुव
तिसवधाई ॥ उलटेअंगभूषणनाई ॥ १६ ॥ कोऊचलीचरणहार
लपटाई ॥ काहूंचोलीभुजनिवनाई ॥ १७ ॥ अगियाकटिलहगा
उरलाई ॥ यहहुभावरनीनहिंजाई ॥ १८ ॥ कोऊउठिचलीजानि
हूंकोउ ॥ वेऊमगागईमिलीमगकोउ ॥ १९ ॥ सूरदासप्रभुकुं
जविहारी ॥ सरदरससरसीतिविचारी ॥ २० ॥ राग गुंड मलार ॥ स
रदनिसिदेखिहरिहरषपायो ॥ विपिनवृंदावनसुभगफूले
सुमनरासरुचिस्यामकेमनहिआयो ॥ १ ॥ परमउज्वलरेंनि
छिटकिरहीभूमिपरसदाफरतेरुणप्रतिलटकिलागे ॥
तैसोईपरमरमनीकजमुनापुलिनत्रिविधिवहेंपवना
आनंदजागो ॥ २ ॥ राधिकारवनवनभवनसुखदेखिकेंअध
रधरिवेंनुसुललितवजाई ॥ नामलेंलेंसकलगोपकंन्या
निकेसवनिकेश्रवणवहधुनिसुनाई ॥ ३ ॥ सुनतउपोंमें
नपरतकाहुनचेंनसवसुनिश्रवनभईविकलभारी ॥ सुरअ
मुध्यांनधरिकेंचलीउठिसवेंभवनजननेहतजिघोषनारी ॥ ४ ॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰॥ राग बिहागरो ॥ मुरली सुनत उपजी बाइ ॥ स्यांमसों अति भाव बा
॥२५५ ढ्यों चली सब अकुलाइ ॥१॥ गुरुजन निसों भेद काहू कह्यों नहीं
उघारि ॥ अर्द्ध रेनि चलि घरनि तें जूथ जूथ निनारि ॥२॥ नंदनंद
न तरुणि बोली सरद निसि के हेत ॥ रुचि सहित वन कों च
लीं चे सूर भई अचेत ॥३॥ राग गोड मलार ॥ सुनत मुरली भवन
दुरन कीन्हों ॥ स्यांम पें चित पहुचाए पहिलें ही दियौं आप उ
ठि चली सुधि मन रही न्हों ॥१॥ कहति मन कांमना आजु पूरन
करें नंदनंदन निस बें नन बुलाई ॥ जांनि लायक भजी तरुण
सुत पति तजी कान्ह नहिं लजी अति प्रेम धाई ॥२॥ तस्यों कुल ध
र्म गेह थान थापें ईतजे पगी रस ह्रक रस विन कछु न भावें ॥ सूर प्र
भु सों प्रेम सत्य करिकें कियों मग नयों तहां इन को बुलावें
॥३॥ राग सोरठ ॥ मुरली मधुर बजाई स्यांम ॥ मन हरि लियो भव
न नहिं भावें व्याकुल ब्रज की बांम ॥१॥ भोजन भूषन की सुधि
नाहीं तनु की नहीं संभार ॥ गृह गुरु लाज सुत सों तस्यों तुरन हीं
व्यौहार ॥२॥ करत सिंगार विबस भई सुंदरि अंगनि गई भुला
य ॥ सूर स्याम वन बेंनु बजावत चितहि तन रास रसाइ ॥३॥ राग
गौड मलार ॥ करति श्रृंगार युवति भुलाहीं ॥ अंग सुधि नहीं उल
टे भरन धारहीं एक एकनि कछु सुरति नाहीं ॥१॥ नैन अंजन
अधर अंजहीं हरखसों श्रवण ताटंक उलटे सवारें ॥ सूर प्रभु
मुख ललित बेंनु धुनि वन सुनत चलीं वेहाल अंचल न धारें
॥२॥ राग नट ॥ सुरलि मुख सुनत बेंनु रसाल ॥ बिरह व्याकुल भई बा
ला चलीं जहां गोपाल ॥१॥ पें दुहावति चली कोउ रह्यौं धीय जना
हि ॥ एक रह्यौ नीर धजांवन कों सिरावत जाहि ॥२॥ एक उफनन
हीं चली उठि धर्यो नहीं उतारि ॥ एक जेंवन करत त्यागयों चटे
चूल्हें डारि ॥३॥ एक भोजन करि संपूरन गई वैसेहि त्यागि ॥ सू
र प्रभु के पास तुरत हि मन गयों उठि भागि ॥४॥ राग रामकली
मन गयों चित स्यांम सों लाग्यों ॥ नाना विधि जेंवन करत स्यों
पुरुष जिवावत त्याग्यों ॥१॥ एक पें पिवत तजी चलि बालक
छोह नहीं तब कीन्हों ॥ चली धाइ अकुलाइ सकल तजि बोलि
बेंनु धुनि लीन्हों ॥२॥ एक पति सेवा चली करति उठि व्याकुल
तन सुधि नाहीं ॥ सूर निरखि विधि की मरजादा मिटि वन कों स
बनाहीं ॥३॥ राग जैतश्री ॥ जब हि वन मुरली श्रवण परी ॥ चक

www.vallabhacharya-agrahara.org

तभईगोपकंन्यासबकोंमधांमबिसरी ॥१॥ कुलमरजादबेद
कीआग्यपानेंकहुनहीडरी ॥ ज्यांमासिंधुमलितालनमाणज
लकीढरनिढरी ॥२॥ अंगमरदनकरिवेकोलागीउबटननेल
धरी ॥ जोजेहिभांतिचलीसोतैसेहिनिसिबनकोंजुखरी ॥३॥ सु
तपतिनेहभवनजनसंकललजानहीकरी ॥ सूरदासप्रभुम
नहरिलीनोंनागरनवलहरी ॥४॥ रागकेदारो ॥ सुनिमुरलीस
बब्रजनारि करनश्रृंगारश्रृंगारेभूलीकांमगयोतनुमारि ॥१॥
चरणनसोंगहिहारबांध्योनेननरेखतिनाहि ॥ कंचुकीकटिसा
जिलहगाधरतिहृदेंमांहि ॥२॥ चतुरनाहरिचोरिलीन्हीभई
भोरीबाल ॥ सूरप्रभुरतिकांममोहनरासरुचिनंदलाल ॥३॥
राग रामकली ॥ अनजुबतिनिमनहरोंकन्हाई ॥ रासरंगरसरु
चिमनआंन्योंनिशिबनमेंनाभिबोलाई ॥१॥ तपतनुगारिबहु
तश्रमकीन्होंसोफलपूरणदैंन ॥ वेनुनादरससबबसकराइ
सुनिधुनिकीन्होंगोन ॥२॥ जाकोंमनहरिलियोस्यामघनता
हिसभारेंकोंन ॥ सूरदासयोंनारिबंधमिलिकरेंसुभावेंजोंन
॥३॥ रागधनाश्री ॥ चलीबनवेंनुसुनतजबधाई ॥ मानपितावंधव
एकत्रासनजांनिकहंअकुलाई ॥१॥ सकुचनहीसंकाकहुना
हीरैनिकहांतुमजांनि ॥ जननीकहतिदईकीघालीकाहेकों
इतराति ॥ मांनतिनहीऔरसपावतिनिकसीनातोतोरि
मेंसेंजलप्रवाहभादोंकोसोकोसकेंबहोरि ॥२॥ ज्योंकंचुरीभु
अंगमत्यागतमानपितायोंत्यागे ॥ सूरस्यामकेहाथबिकानी
अलिअंबुजअनुरागे ॥४॥ रागगौडमलार ॥ सुनतमुरलीसकि
नधीरधरिकें ॥ चलीपितमातअपमांनकरिकें ॥१॥ लपतनिक
सीसबैंतोपिफरिकें ॥ भईआतुरबदनरसहरिकें ॥२॥ जोहिजो
भजेंसोताहिरातें ॥ कोउकछुकहैंसबनिरसबातें ॥३॥ नाबिना
ताहिकछुनहीभावें ॥ औरजोजोपिकोटिकरिरखावें ॥४॥ प्रीति
कीकथाबहप्रीतिजानें ॥ औरकरिकोटिबातेंबखांनें ॥५॥ ज्यो
सलिलसिंधुबिनकहूंनजाई ॥ सूरबेंसीरिझाइनहुपाई ॥६॥
राग सूहो बिलावल ॥ घरघरतेंनिकसीब्रजबाला ॥ लेंलेंनाम
सुवतिजनजनबेमुरलीमेंसुनिसुनिततकाला ॥१॥ एकमा
रगएकघरतेंनिकरीएकनिकसनिएकभईबेहाला ॥ एकनों
हीभवनानितेंनिकरिनिकरीतिनपेंआएपरमकृपाला ॥२॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. यहमहिमायेईपैंजानेंकविसोंकहांबरनियेंजाई॥ सूरस्यांमरस
॥५८ रीतिरासमुखबिनुदेखेंआवेंक्योंगाई॥३॥ रागगौडमलार॥ रास
रसरीतिनहिंबरनिआवें॥ कहांवेंसीबुद्धिकहांवहमनलहोंक
हांयहचितजियभ्रमभुलावें॥१॥ जोकहोंकौनमानेंनिगमअ
गमजोकृपाबिननहींयारसहिपावें॥ भांवसोंभजेंबिनभांवमें
एनहींभांवहीमेंभाववहबसावें॥२॥ यहेंनिजुमंत्रयहज्ञांनय
हहेंध्यांनदरसदंपतिभजेनसरसगाउं॥ इहेंमांगोंवारवारप्र
भुसूरकेनेंननिहांरहेंवसरेंहपाउं॥३॥ रागगौडमलार॥ सुनतबन
बेंनुधुनिचलीनारी॥ लोकलज्यानिदरिभवनानजिसुंदरीमि
लीवनजाइकेंवनबिहारी॥१॥ दरसकेंलहतमनहरखसबके
भयोंपरसकीसाधअतिकरनभारी॥ इहेंमनवचकर्मतज्यों
सुतपतिधर्ममेंटिभवभर्मसहिलाजगारी॥२॥ भजेंजेहिभावजो
मिलेंहरितांहिसोंभेदभेदानहींपुरुषनारी॥ सूरप्रभुस्यांमब्रज
बांमअतुरकांममिलेंबनधांमगिरवरधारी॥३॥ रागसहेबि
लावल॥ देखिस्यांममनहरखवढ़यों॥ जैसियसरदचांदनीनि
र्मलतैसोईरासरंगउपजायो॥ जैसियकनकवरणसुंदरियह
सोभापरमनललचायो॥ जैसीयहंसस्तुतापवित्रतटतैसोईक
ल्पवृक्षसमुहायो॥२॥ कर्मेमनोरथपूरनसवके एकअंतरएक
खंडउपायों॥ सूरस्यांमरचिकपटचतुरईयुवतिनकेंमनमनभ
रमायों॥३॥ रागबिहागरो॥ निसिकाहेवनकोंउठिधाई॥ हंसिहंसि
स्यांमकहतिहोंसुंदरिकेंतुमब्रजमारगहिभुलाई॥१॥ गईरहीर
छिवेचनमथुरातहांआजुअवसेरलगाई॥ अतिभ्रमभयोंबि
पिनवेगोआईमारगवहकहिसवनिवताई॥२॥ जाहुजाहुघरतुर
तयुवतिगएखीजतगुरजनकहिडरवाई॥ केंगोकुलतेंगव
नकियोंतुमइनिवानतिहेंहमेंभलाई॥३॥ यहसुनिकेंब्रजबांम
कहतभईकहांकरतगिरधरचतुराई॥ सूरनांमलेंलेंसबज
नकेमुरलीबारंबारबुलाई॥४॥ रागबिहागरो॥ यहजेंनिकहों।
घोषकुमारि॥ हमबहुरईनहींकीनीतुमचतुरसबनमारि॥१॥ क
हांहमकहांतुमरहीब्रजकहांमुरलीनारि॥ करतहोंपरिहासह
मसोंतजोंयहरसवारि॥२॥ बड़ेंकीतुमबहूबेटीनामलेंकोजा
इ॥ अर्धनिसिवनदौरिआईहमहिंदोषलगाइ॥३॥ भलीयहतुम
करीनाहीअजहुंघरफिरिजाहु॥ सूरकौंतुमनिदरिआईनहींतु

www.vallabhacharya-agrahara.org

म्हरैंनाहूं॥४॥राग जैतश्री॥ मातपितातुम्हरेंधोंनाहीं॥ बारंबारकम
लदललोचनयहकहिकहिपछितांहीं॥१॥उनकैंलाजबनेंतु
मकोंआवनदीनीराति॥ सबसुंदरीसबेंनवजोबनिनिठुरअ
हीरकीजांति॥२॥कैंतुमकहिआईवेंऐसेंहिकीन्हीकैसीरीति
सूरतुमहिंयहरहीतुम्हियेंबडीकरीबिपरीति॥३॥रागरामकली
अबतुमकहीहमारीमांनो॥ बनमेंआयरेंनिसुखदेख्यौयहेल
ह्योसुखजानो॥१॥अबऐसीकोजोजनिकबहुजांनतिहोंम
नतुमहूं॥ यहधुनिसुनेंकहूंजोकोऊतुमकोंलाजरहहमहूं॥२
हमतोंआजुबहुतसनमानेमुरलीटेरिबजायो॥ जैसोंकियोंल
ह्योंफलतैंसोंहमहीदोषनआयो॥३॥अबतुमभवनजाहुपति
पूजहुपरमेश्वरकीनाई॥ सूरस्यांमसुवतिनसोंयहकहिकहि
अपराधछमाई॥४॥राग सूहो बिलावल॥ यहयुवतिनकोंधर्मन
होइ॥ धृगजोनारिपुरुषजोलागेंधृगसोपतिजोत्यागेंजोइ॥१
पतिकोंधर्मइहेंप्रतिपालेंजुवतीसेवाहीकोधर्म॥ युवतीसेवा
तौनत्यागेंजोपतिकोटिकरेंअपकर्म॥२॥ बनमेंरेनिवासनहि
कीजेंदेखोंमनोहरंदावनआइ॥ बिबिधिसुमनसीतलजमु
नाजलत्रिबिधिसमीरपरसिसुखदाइ॥३॥ घरहीमेंतुमधर्मस
हाईसुनपतिदुखितहोतुमजाहु॥ सूरस्यांमयहकहियरसो
धतसेवाकरोंजायघरनाहु॥४॥रागबिहागरो॥ यहबिधिवेद
मारगसुनों॥ कपटतजिपतिकरोंपूजाकहांतुमजियगुनों॥१
कंतमांनहुभवनरोगीऔरनाहिंउपाइ॥ ताहितजिक्योंविपि
नआईकहापायोआइ॥२॥बिरधअरुबिनभागहूकोपतित
जेपितुहोइ॥ जोंनमूरखहोयरोगीतजेंनाहींजोइ॥३॥ यहेंमेंपुनि
कहतुमसोंजगतमेंयहसार॥ सूरपतिसेवाबिनाक्योंतरों
गीसंसार॥४॥रागबिहागरो॥ कहांभयेजोहमपेंआइ॥ हमहूंकोंबि
छिकोंडरभारीअबहुजायबडभ्या॥१॥तजिभरतारऔरजोभजि
येंसोकुलीननहिंहोय॥ मरेंनर्कजीवतयाजगमेंभलोकहेंन
हीकोइ॥२॥ हमजोंकहनिसबेंतुमजांनतितुमहूंचतुरसुजां
न॥ सुनोंसूरघरजाहुहमहुंघरजेसेंहोनबिहान॥३॥रागबि
लावल॥ निठुरवचनसुनिस्यांमकेयुवतिबिकलांनी॥ वचन
भईसबेंसुनिरहीनहिंआवेंवांनी॥१॥मनोंतुसारकमलनिपरयो
ऐसेंकुम्हिलांनी॥ मनौंमहानिधिपायकेंखोयपछितांनी॥२

www.vallabhacharya-agrahara.org

ऐसें ह्वै गई तनु दसा पिय की सुनि बानी ॥ सूर बिरह ब्याकुल भ
ई बूडी बिन पानी ॥३॥ राग मारू ॥ स्याम उर प्रीति सुख कपट बांनी
युवति ब्याकुल भई धरनि सब गिरि गई आस गई टूटि नहिं भे
द जांनी ॥१॥ हँसत नंदलाल मन मन करत ख्याल ए भई बेहा
ल ब्रज बाल भारी ॥ रुदन जल नदी सम बहि चल्यो उरज बिच म
नों गिरि फोरि सलिता पनारी ॥२॥ अंग ब्याकुल पथिक नहिं चल
त कोउ पंथ के नाव रस भाव हरि नहीं आने ॥ सूर प्रभु निठुर क
रि आंक द्यौ ह्वै रहे उनहिं बिन और को भेद जांनें ॥३॥ राग जैत
श्री ॥ निठुर बचन बोलहु जिनि स्याम ॥ आस निरास करो जिनि
हमरी ब्याकुल बचन कहति हैं बांम ॥१॥ अंतर कपट दूरि करि
डारौ हम तन कृपा निहारौ ॥ कृपासिंधु तुमको सब गांवत अ
पनौं नांम सभारौ ॥२॥ हमको सरन और नहिं सूझै कापै हम अ
ब जांहिं ॥ सूरदास प्रभु निज दासिनि कों चूक कहौ पछितांहिं
॥३॥ राग गौरी ॥ तुम पावत हम घोषन जांहिं ॥ कहा जाय लेहैं हम ब्र
ज में यह दरसन त्रिभुवन में नांहिं ॥ तुमहूं तें ब्रज हित कोउ न
हीं कोटिक कहौ नहिं मानें ॥ काके पिता मात हैं काके काहू हम न पि
छांनें ॥१॥ काके पति सुत मोह कौन के घर हैं कहा पठावत ॥ कैसो ध
र्म पाप हैं कैसो आस निरास करावत ॥२॥ हम जानें केवल तुम
हीं कों और ब्या संसार ॥ सूर स्याम निठुराई तजियें तजियें ब
चन बिसार ॥४॥ राग जैतश्री ॥ तुम हो अंतरजांन कन्हाई ॥ निठुर भये
कौं रहत सदा पर तुम नहिं जानत पीर पराई ॥१॥ पुनि पुनि कहत
जाहु ब्रज सुंदरि दूरि करौ पिय यह चतुराई ॥ आपु हि कहौ करौ
पति सेवा ता सेवा को है हम आई ॥२॥ जो तुम कहौ तुमहि सब बा
तें कहा कहें हम प्रभु हि सुनाई ॥ सुनहु सूर प्रभु पद जत त्यागें
हम पें घोष गयों नहिं जाई ॥३॥ राग बिहागरो ॥ कैसें हमकों ब्रज
हिं पठावत ॥ मन तौ रह्यौ चरण लपटांनौं जो इतनी यह देह च
लावत ॥१॥ अरु के नैंन माधुरी मुसकनि अम्रत बचन श्रवण
नि कों भावत ॥ इंद्री सबे मन ही के पाछें कहौं धर्म कहि कहा
बतावत ॥२॥ इनकों करि आपने लएलौं कौ हम नाहीं जिय
भावत ॥ सूर सैंन दैं सर्वसु लूट्यो मुरली लैं लैं नाम बतावत
॥३॥ राग कान्हरो ॥ भवन नहीं अब जाहिं कन्हाई ॥ सजन बंधतें
भई बाहिरी अब के सेवे कर न बराई ॥१॥ जो न कबहुं कबें लेहि

www.vallabhacharya-agrahara.org

कृपाकरि धृग हम नारि ॥ तुम बिछुरत जीवन धृग राखें कहेंन
आपावि चारि ॥ २ ॥ धृग वह लाज विमुख की संगनि धनि जीवन
तुम हेत ॥ धृग माता धृग पिता गेह धृग धृग सुत पति हेत जेन ॥
हम चाहत नि मृदु हसनि माधुरी जानत उपज्यो कांम ॥ सूरस्यांम अ
धरनि रस सीचहु जरति विरह सब बांम ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ सुनहु
स्याम अब करत न चतुराई क्यों तुम बेनु बजाइ बुलाई ॥ विधिमर
जाद लोक की लज्या सबें त्यागि हम धाई आई ॥ १ ॥ अब तुम को
एसी न बूझिये आस निरास करो जनि साई ॥ सोई कुलीन सोई
बडभागिनि जे तुव सन्मुख रहें सदाई ॥ ते धनि पुरुष नारि धनि
तेई पंकज चरण रहें हृदय लाई ॥ सूरदास करुणा करहु वचनें पहु
निमिय हरि अंग सुंदरताई ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ विनती सुनि स्याम
सुजांन ॥ अनि हि सुख अपमांन कीनों दहन इन के प्रान ॥ १ ॥ अब
करो दुख दूरि इनको भजों तजि अभिमान ॥ विरह दुख निवारि
डारो अधर रस दें पान ॥ २ ॥ मन हि मन यह सुख करत हरि भए
कृपानिधांन ॥ सूर निहचे भजे मो कों तहीं जानति प्रान ॥ ३ ॥ रा
ग बिलावल ॥ मोहि विना ए और न जानें ॥ विधि मरजाद लोक
की लज्या तृण हू तें घटि मानें ॥ १ ॥ इनि मो कों नीकें पहिचान्यो
कपट न हीं उर राख्यो ॥ साधु साधु पुनि पुनि हरि भाषित हैं मन हीं म
न यह भाख्यो ॥ २ ॥ पुनि हरि सि कह्यो नितुरता धारि कें कियो त्याग्यो प
हु धर्म ॥ सूरस्यांम सुख कपट हृदय रति युवतिन के अति भर्म
॥ ३ ॥ राग गौड मलार ॥ तजो नंदलाल अति निठुरई गहि रहे कहा
पुनि पुनि कहत धर्म हम को ॥ एहीं ढंग रहे वचन सब के दुख कहे
व्याप्यो युवतिन रहे मेरि पवन को ॥ १ ॥ विमुख तुम ने रहे तिन
हि हम क्यों गहें तहां फल कहुं हे दुख देहि भारी ॥ कहां सुत पति
कहां माता पित कुल कहां कहां संसार विन वन विहारी ॥ २ ॥
हम हि समुझाय यह कहें पुरुष नारि कहां तुम कहां नहि मर्म
जानें ॥ सुनहु प्रभु सूर तुम भले कै वे भले सत्य करि कहो हम
अब हि मांने ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ तुम हि विमुख धृग धृग नर ना
रि ॥ हम तो यह जानति तुम महिमा को सुनि योगी रिषि धारि ॥ १ ॥ सां
ची प्रीति करी हम सों तुम सो अंतरजामी जानों ॥ एह जन की न
हि पीर हमारे वृथा धर्म हठ ठानों ॥ २ ॥ पाप पुन्य दोउ परि त्याग्यो
अब जो होइ न होइ ॥ आस निरास सूर के स्वामी अैसें करें न को

www.vallabhacharya-agrahara.org

18

॥सू०सा ६॥ ३॥ रा ग गै न ॥ श्री॥ आसजिनितोरहुस्यांमहुमारी॥ वैंत्रनारसु
॥२५८ निधुनिउठिधाईप्रगटतनाममुरारी॥ १॥ कोंतुमनिठुरनाम
प्रगटायोंकाहेबिरहभुलाने॥ दीनआसुहमनेकोउनाहींजो
निस्यांमसुमिकांने॥ २॥ अपनेभुजदंडनिकरगहियेंविरह
सलिलमेंभासी॥ वारवारकुलधर्मवतावतऐसेतुमअवि
नासी॥ ३॥ प्रीतिवचननवकाकेंराखोंअंकमभरिवेंठावहु
सूरस्यांमतुमविनुगतिनाहींयुवतिनपारलगावहु॥ ४॥ रा
ग नट॥ चितदेंसुनहुअंबुजनेंन॥ कृपिनकोंगथभयोंतुमकों
सरसअमृतवेंन॥ १॥ हमयुनीनववालसिरुवनितुमतरुणि
धनरासि॥ कैसेहुंसुखदेंनदीजेंविरहदासिदनासि॥ २॥ करहुय
हजसप्रगटत्रिभुवननिठुरकोढीखोलि॥ कृपाचितवनिभुजउ
ठावहुप्रेमवचननिबोलि॥ ३॥ दीनवांनीश्रवणसुनिसुनिद्रूए
परमकृपाल॥ सूरएकहुअंगनकांचीधन्यधनिव्रजवाल॥ ४॥
रा ग वि हा गरो॥ हरिसुनिदीनवचनरसाल॥ विरहव्याकुलदेखि
वालाभरेनेंनविसाल॥ १॥ चलिआनवोलीरधारावरानिकांपे
जप्या॥ मनहुसुधातडागउछलेप्रेमप्रगटदिखाइ॥ २॥ चंदमुख
परनिरखिवेंठीसुभगजोरचकोर॥ पिवतमुखभरिभरिसुधा
ससिमिरननापरभोर॥ ३॥ हरसवांनीकइनपुनिपुनिधन्य
धनिव्रजवाल॥ सूरप्रभुककिसिरूपाजोयोंसदयभएगोपा
ल॥ ४॥ रा ग वि हा गरो॥ स्यांमहसिवोलेप्रभुताटारि॥ वारंवारवि
नेंकरजोरनकटिपटगोदपसारि॥ १॥ तुमसनुखमेंविमुखतु
म्हारोंमेंअसाधुतुमसाध॥ धन्यधन्यकहिकहियुवतिनकों
आपकरतअनुराध॥ २॥ मोकोंभजेंएकचितह्वेंकेंनिदरिलो
ककुलकांनि॥ सुतपतिनेहतोरितिनकासोंमोहिनिजकरि
जांनि॥ ३॥ जाकेंहाथपेडफलताकोंसोफललघोंकुमारी॥ सूर
कृपापूरणसोंवोलेगिरिगोवर्द्धनधारी॥ ४॥ रा ग स है ला॥ कहत
स्यांमश्रीमुखयहवांनी॥ धन्यधन्यदृढनेहतुम्हारोंविनदांमनि
मोहाप्यविकांनी॥ निर्दयवचनकपटकेभाखेतुमअपनेजि
यनेंकनआंनी॥ भजोंनिसंकआयतुममोकोंगुरुयस्जनकी
संकनमांनी॥ २॥ सिंहरहेंजंवुकसरणागतदेखीसुनीनअक
थकहांनी॥ सूरस्यांमअंकमभरिलीनीविरहअगिनिझरतुरत
बुझांनी॥ ३॥ रा ग मारू॥ कियोंजिहिकाजतपघोषनारी॥ देउफल

www.vallabhacharya-agrahara.org

ह्वैं तुरत तुम लेहु अवहूं। षचित करहु दुख देहु दूरी॥१॥ रास रस र
च्यौ मिलि संग विलास हु सवें वस्त्र हरि कह्यो जो निगम वांनी॥ ह
सत मुख निरखि वचन अमृत वरषि कृपारस भरे सारंगपानी
॥२॥ ब्रजयुवति चहु पास मध्य सुंदर स्यांम राधिका वाम अति छबि
विराजैं॥ सूर नव जलद तनु सुभग स्यामल कांति इंदु वहु पांति
विच सुभग भ्राजैं॥३॥ रा॥ न ट॥ हरि मुख देखि भूले नैंन॥ हृदै ह
रषित प्रेम गदगद रहत नहीं आंवत वैंन॥१॥ कांम आतुर भजे गोपी
हरि मिले तेहि भाय॥ प्रेम वश्य कृपाल केशव जांनि लेत सुभा
य॥२॥ परस्पर मिलि हसत विहसत हरषि करत विलास॥ उम
गि आनंद सिंधु उछले स्यांम के अभिलाष॥३॥ मिलति एक ए
नि भुजनि भरि भरि रास रुचि जिय आंनि॥ तिहि समें सुख स्या
म स्यामा सूर कों कहें गांनि॥४॥ राग विहागरो॥ रास रुचि जब हि
स्यांम मन आंनी॥ करहु शृंगार सवारि सुंदरी हसन कहत ह
प्रिवांनी॥१॥ गोरे देखें अंग उलटे भूषन तरुनि तरुनि सुमि कांनी
वार वार पिय देखि देखि मुख पुनि पुनि वनि लजानी॥२॥ नव
सत साजि भई सब ठाढी को छबि सके बखांनी॥ बहु छबि निर
षि अधीर जभई तनु कामना विनतानी॥३॥ सुख भुज परसि क
री मन इच्छा कछु तए न तम सकुचानी॥ सुनहु सूर रस रास नायका
सुंदरि राधा रानी॥४॥ रा॥ मा॥ रु॥ अंचल चंचल स्यांम गह्यौं॥ ले
गये सुभग पुलिन यमुना के अंग अंग भेष लह्यो॥१॥ कल्पतरो
वर तरु वंसी वर राधा रति गृह धांम॥ तहं रास रस रंग उपायो
संग सो हत ब्रज वांम॥२॥ मध्य स्यांम घन नोंछित भामिनी अति
राजत सुभ जोरी॥ सूरदास प्रभु नवल छबीले नवल छबीली
गोरी॥३॥ रा॥ टोडी॥ जहां स्यांम घन रास उपायो॥ कुमकुम सुख
जल वृष्टि रमायो॥१॥ धरनी रज कपूर में भारी॥ विविध सुम
न छवि न्यारी न्यारी॥२॥ युवती जुरि मंडली विराजें॥ विच विच
कांन्ह तरुणि विच भ्राजें॥३॥ अनुपम लीला प्रगट दिखायो॥
गोपिनु कों कीयों मन भायो॥४॥ विच श्री स्यांमा नारि विच गो
री॥ कनक खंभ मरकत मनि थोरी॥५॥ सोभा सिंधु हिलोर हिलो
री॥ सूरदास वरनों मति थोरी॥६॥ राग गौंड मलार॥ रास मंडल
वने स्यांम स्यांमा॥ नारी दुहु पास दुहु पास गिरधर वने शशि वी
सद्वादश उपमा॥१॥ मुकर की छबि कहुं उपमा कहों नैंन जान

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू०सा० तनहीरहूजांनें ॥ सुभगनवमेघत्तावीचचपलाचमकिनिर
॥१५८ खिनिर्ततमोरहरखमानें ॥२॥ करतिआनंदपियसंगलल
नापुंजवटत्तरसरंगछिनछिननहिश्रौरें ॥ सूरप्रभुरासरसना
गरीमध्यदेष्ठपरस्परनारिपतिमननहिचोरें ॥३॥ राग गोरी ॥ मला
र ॥ परस्परस्यांमव्रजबांमसोहैं ॥ सीसश्रीखंडकुंडलजटितम
निश्रवणनिनिरखिछबिस्यांममनतरुणिमोहैं ॥१॥ नासिका
ललितवेसरिबनीअधरतटसुभगताटंकछबिकहिनुजा
इ ॥ धरनिपगपटकिकरझटकिभोंहनिमटकिअटकिमन
तहांरीझिकन्हाई ॥२॥ जबचलतहरिमटकिरहीयुवतीभटकि
लटकिपटकीछबिनिहारें ॥ कहतिप्रभुसूरवहुह्यौचलौंवे
सेंहिहमहूवैसेंचलेंजोविचारें ॥३॥ राग गोड मलार ॥ निरखिव्र
जनारिछबिस्यांमलाजें ॥ विविधिवेंनीरचीमांगपारीसुभ
गभालवेंदीविंदुइंदुलाजें ॥१॥ श्रवणताटंकलोचनचारुना
सिकाहंसखंजनकीरकोटिलाजें ॥ अधरविद्रुमदसननहिछ
बिदामिनीसुभगवेसरिनिरखिकांमलाजें ॥२॥ चिबुकतरकं
ठसिरीमालमोतीनछबिकुचभगतहेमगिरिअतिहिला
जें ॥ सूरकीस्वामिनीनारिब्रजभामिनीनिरखिपियप्रेमसोभा
सुलाजें ॥३॥ राग विहागरो ॥ बनिब्रजनारिसोभाभारि ॥ पगनिजे
हरिलाललहंगाअंगियापचरंगमारि ॥१॥ किंकिनीकटिकुणित
किंकिनिकरचूरिझनकार ॥ हृदेंचौकीचदुमुकिवेंठीसुभगमोति
नहार ॥२॥ कंठसिरीदुलरीविराजनिचिबुकस्यांमलविंदु ॥ सु
भगवेसरिललितनासारीझिरहेनंदनंद ॥३॥ श्रवणवरताटं
ककीछबिगौरललितकपोल ॥ सूरप्रभुबसअतिभएहेंनि
रखिलोचनलोल ॥४॥ राग जेतश्री ॥ सुरगनचढिविमाननभ
हेबत ॥ ललनासहितसुमनगनवरखतजन्मव्रजनहिलेखत
॥१॥ धनिब्रजलोगधन्यव्रजवालाविहरतराधागोपाल ॥ ध
निवंसीवटधनिजमुनातटधनिधनिलततातमाल ॥२॥ सब
तेंधन्यधन्यवृंदावनजहांकृष्णकोवास ॥ धनिधनिसूरदास
केस्वामीअद्भुतरास्योरास ॥३॥ राग विलावल ॥ नेंनसुफलअव
भएहमारे ॥ देवलोकनिशांनबजाएवरखतसुमनसुधारे ॥१॥
जेजेधुनिकिंनरमुनिगावतनिरखतयोगविसारे ॥ शिवसा
रदनारदयहभाखतधनिधनिनंददुलारे ॥२॥ सुरसरनामपति

www.vallabhacharya-agrahara.org

गानि विसरानए ॥ रही निहारि निहारि ॥ जो नंनतें रति नेंक सुख हरि कों
श्राई लोक विसारि ॥ ३ ॥ पहुंछाति हूं त्रिभुवन कहूं नाहीं जो वृंदाव
न धांम ॥ सुंदरता गुण रसकी सींवा सूर राधिका स्यांम ॥ ४ ॥ रा
ग मारी ॥ हम कों विधि ब्रज वंधुन की नी कहूं न प्रभ पुरा
वास भए ॥ वार वार पछिताति यहें कहि सुख तों होइ हरि संग
रए ॥ १ ॥ कहां जन्म जो नहीं हमारो फिरि फिरि ब्रज अवतार भ
लें ॥ वृंदावन द्रुम लतानहूं जियें करत तासों मागियें चलें ॥ पहु
वां छना होइ क्यों पूरन दासी व्है वरु व्रज में रलें ॥ सूरदास प्रभु
अंतरजांमी तिन हि विना कासों करलें ॥ ३ ॥ राग विहागरो ॥ धन्य
नंद नंद सुधा के नंदन ॥ धन्य खंड पोत सिर लटकन धनि कुंडल
धनि मृगमद चंदन ॥ १ ॥ धनि राधिका धन्य सुंदरता धनि मोहन
की जोरी ॥ ज्यों घनमें दामिनी की छवि यह उपमा कहें थोरी
॥ २ ॥ धनि मंडली जुरी गोपिन की गावत नंदकुमार ॥ राधा सम स
व गोपकुमारी औ उत्तर रास विहार ॥ ३ ॥ धनि रस समर सघोष कु
मारी घट रस सम हूं स गोपाल ॥ काहूं को कहूं अंतर नाहीं करत
परस्पर ख्याल ॥ ४ ॥ धनि कुंन वाम श्रामय हू पूरण कैसें होत ह
मारी ॥ सूर श्रम रल ललना मा... प्रवर विप्र की लोक विसारी
॥ ५ ॥ राग सहों ॥ तरु तमाल लाल पाल लाल वनमाल ग्रीव धर हृद
य विसाल ॥ कवहूं ... धन संग लें वालक कवहूं फिरत स
ग सखा ग्वाल ॥ धनि व्रजनायक कियों मह ए पोषि व्रज
वाल ॥ कवहूं वनिकें हरि रहें वन गोरस दांन लेत मग गाय पे
छि पत ताल ॥ २ ॥ नाथ्यौ काली का लफन फन प्रति निर्त न वि
विधि ताल ॥ भूषण मुकुट जु स्यों चुनी लाल धन्य सूर प्रभु
ता धरें राजें संग वनिता जाल ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ कुंडल लोल
कपोल विराजत दसन चमक सम माजा लत तिलक सोभित तमि
र केशरि नेंना विंवि वन ॥ कटि कछनी चंदन खोरि श्रपां म
व रंग घन सुंदर श्री सेन टनागर केजैइयें री वारनें ॥ १ ॥ त्रिभं
गी व्है निर्त करत व्रजयुवतिन मंडल विच हू हू हू विच स्यां
म घनें ॥ मोर मुकुट सीस धरें राजत हैं सूर प्रभु निरखि निर
खि श्रम सजें जें धुनि मनें ॥ २ ॥ राग धनाश्री ॥ रास मंडल मध्य
स्यां म राधा ॥ मनो घन वीच दामिनी कोंधति सुभग एक व्है
रूप कें नहीं वाधा ॥ १ ॥ नायका अष्ट हूं दिशा सों हरी वनी चहूं

॥सू॰सा॰ पाससबगोपकंन्या॥ मिलेसबसंगनहि लखतिकोउपरस्पर
॥१६॥ बनेषटदससहसकसमसंन्या॥ सजेअंगअरनवसानजगिम
गिरद्योंअंगभूषणरेंनिबनीजैसी॥ सूरप्रभुनवलगिरिधरन
वलराधिकानवलब्रजसुतामंडलीजैसी॥३॥ राग गौरी॥ जुवति
अंगछविनिरखतस्यांम॥ नंदकुमारश्रीअंगमाधुरीअवलो
कतिब्रजवांम॥१॥ परीदृष्टिकुचउरवनिपियाकीवहसुखकह्यो
नजाय॥ अतियाअनिलमांडनारातीनिरखतनेंनचुराइ॥२
बेनिरखतिकेउरभुजकीछविपहुचिनपहुचीभ्राजति॥ क
रपल्लवनिमुद्रिकासोहतनाछविपरमनलाजति॥३॥ वद
नविंदनिरखिहूरिरिझेससिपरवालाविभास॥ नंदलालब्र
जबालसुछविकोंवरनेंसूरजदास॥४॥ राग गौरी॥ स्यांमतनु
राजतपीतपिछौरी॥ उरवनमालकाछनीकाछेंकटिकिंकि
निछविथोरी॥१॥ बेंनीमुखनिनितेंबनिडोलतिमंदगामिनी
नारि॥ सूथनजघनबांधिनारावंदतिनीपरछविभारि॥२
नखनिरंगजावककीसोभादेखतजीयमनभावत॥ सूरदा
सप्रभुतनुत्रिभंगह्वेजुवतिनमनहिरिझावत॥३॥ राग बिहा
गरो॥ नितनस्यांमनानारंग॥ मुकुटलटकनिभृकुटिमटक
निधरेनटवरअंग॥१॥ चलनगतिकटिकुनितकिंकिनिघूं
घरूरनकार॥ मनोंहंसरसालबांनीअरसपरसविहार॥२
जमनकरपहुंचीउपाजयामुद्रिकाअतिजोति॥ भावसोंभुज
फिरतजबहीतबहीसोभाहोति॥३॥ कबहुनिरतननारिमतिप
रकबहुनितनआप॥ सूरकेप्रभुरसिककीमनिरच्योरासप्र
ताप॥४॥ राग बिहागरो॥ गतिसुगंधनिर्तनव्रजनारि॥ हस्तभा
वनेंननिसेंननिदेंदेरिझवतगिरिधारि॥१॥ पगपगपरधिकि
भुजनिलटकावजिफोराकरणअनूप॥ चंचलचलनझूमि
काअंचलअद्भुतहैंवहरूप॥२॥ हरिनिरखतअंगरूपपरस्प
रहोऊमनहीमनरीझत॥ हसिहसिवदनवचनरसप्रगटत
खेदअंगजलभीजत॥३॥ बेंनीछूटिलटेंबगरानीमुकटलट
किलटकांनों॥ फूलखसतसिरतेंभएन्यारेसुभगस्वांतिसु
तमांनों॥४॥ मांनकरतिनागरीरीझिपियलीनीअंकमला
य॥ सेवकहेलपटायरहेदोउसूरसखीबलिजाय॥५॥ रा
गगौरी॥ नितंनअंगभूषणबाजत॥ गतिसुगंधसोभावहूहे

www.vallabhacharya-agrahara.org

रवन एक तें एक अति राजत ॥१॥ कहू नन वनें रह्यौ रस ए मों
वरनत वरनि न जाय ॥ तैसेइ वने स्याम तैसिय वनि गोपी छवि
अधिकाय ॥२॥ कंगन चुरी किंकिनी नूपुर पग जेहरि विछिया सो
हत ॥ अद्भुत धुनि उपजत इन मिलि कें भ्रमि भ्रमि इत उत जो हत
३ सुनि सुनि श्रवण रीझी मन ही मन राधा रास रस रूपा ॥ सूर स्या
म सब के सुखदायक लायक गुणनि गुणरूपा ॥४॥ राग केदा
रो ॥ उघटत स्याम निर्तत नारि ॥ धरें अधर उपंग उपजें लेत हैं गि
रिधारि ॥१॥ ताल मुरज रवाब बीना किन्नरी रस सार ॥ सब्द संग
मृदंग मिलवत सुघर नंदकुमार ॥२॥ नागरी सब गुणनि आग
रि मिलि चलति पिय संग ॥ कबहुं गावति कबहु निर्तति कब
हुं उघटति रंग ॥३॥ मंडली गोपाल गोपी अंग अंग अनुहारि
सूर प्रभु घन नवल भामिनि दामिनी छवि डारि ॥४॥ राग विहा
गरो ॥ निर्तत हैं दोउ स्यामा स्याम ॥ अंग मगन पिय तें प्यारी अ
ति निरखि चकृत व्रजवाम ॥१॥ तिरप लेति पिय लाग चमकति
झमकत भूषण अंग ॥ या छवि पर उपमा कहुं नाही निरखत
विवस अनंग ॥२॥ श्री राधिका सकल गुण पूरन जाको स्याम
अधीन ॥ संग तें होत नहीं कहुं न्यारे भए रहत अति लीन ॥३
रस समुद्र मानो उछलित भयो सुंदरता की खानि ॥ सूरदास प्र
भु रीझि थकित भए कहत न कछू बखानि ॥४॥ राग कल्यान ॥ क
बहूं पिय हूं राधिका दुलरावें ॥ कबहुं लेलें तान नागरी सुघर
अति सुघर नंद सुवन को मन रिझावें ॥१॥ कबहुं चुंबन देति
आकर्षि सिय लेति कर तिविन चेन वस है तन अपने ॥ मिल
ति भुज कंठ रहति अंग लटकि कें जात दुख दूरि हैं रूझ कि
सपने ॥२॥ लेति गहि कुचनि विच देति अधरनि अमृत एक
कर चिबुक एक सीस धारें ॥ सूर प्रभु की स्वामिनी स्याम स
न मुख ह्वे कें निरखि सुख नेंन एक टक निहारें ॥३॥ राग विहागरो ॥
रस वस स्याम की नें नारि ॥ अधर रस अचवत परस्पर संग
सब व्रजनारि ॥१॥ काम आतुर भजें बाला सब निपुन ई आस
एक एक व्रज नारि एक एक आप कर्यो प्रकास ॥२॥ कब
हु निर्तत कबहुं गावत कबहु कोक विलास ॥ सूर के प्रभु
रास नायक करत सुख दुख नास ॥३॥ राग कल्यान ॥ हरषि मुर
लीना द स्याम कीन्हों ॥ करषि मन तिहु भुवन सुन नत पाकि

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.प्रा. रह्यौंपवनससिरहि भूल्यौंभावन ग्यांनलीन्हों॥१॥ नारकागनलजे
॥३६९ बुद्धिमनमनसजे तबहि तनसुधि तजें शाव लाग्यो॥ नगानर
मुनिगणकेनभधरणि नन तके मारदासिं भुशिव ध्यानजाग्यो
२॥ ध्यांननारद रह्यौंसेस प्रासन चल्यौंगाई वैकुंठधुनिमगा
नस्वामी॥ कहनश्रीप्रियासोंराधिकारवनए सूरप्रभुस्यांमके
दरसकांमी॥३॥रा॥गविहागरो॥ मुरलीधुनिवैकुंठगई॥ नारा
यणकमलासुनिदंपति अतिरुचिहृदेंभई॥१॥ सुनहुप्रियाय
हप्रभुनवांनी अद्भुतवृंदावनहरि देष्यो॥ धन्यधन्यश्रीपति
मुखकहिकेहरि जीवनव्रजकोंलेष्यो॥२॥ रासविलासकर
तनंदनंदन सोहमतेंअतिदूरि॥ धनिवनधांम धन्यव्रजध
रणीउडिलागेंजोधूरि॥३॥ यहसुखतिहूंभुवनमेंनांही जोहरि
संगपलएक॥ सूरनिरषिनारायणएकटक भूलेनेननिमे
ष॥४॥रा॥गआसावरी॥ जोसुखस्यामकरत वृंदावनसोसुखति
हुपुरनाहीहो॥ हमकोंकहांमिलनरजवनकी यहकहिकहि
अकुलाहीहो॥१॥ सुनहुप्रियाश्रीसुखकहनहींमोतेंओरन
कोईहो॥ नंदकुमाररासरससुखबिन वृंदावननाहिंहोईहो॥२
हरनाअकरनाकोंप्रभुमेंहींवहसुखमोतेंन्यारोहो॥ सूरधन्य
राधावरगिरधर धनिसुखवेंरदुलारोहो॥३॥रा॥गकल्यांन॥ज
वहरिमुरलीनादप्रकास्यौं॥ जंगमजडथावरचरकीन्हें पाहन
जलजविकास्यौं॥१॥ स्वर्गपतालदसौंदिशिपूरनधुनिआ
च्छादितकीन्हो॥ निशिचरकल्पसमानबढाई गोपिनकोंसुख
दीन्हों॥२॥ मेंमतभएजीवजलथलके तनकीसुधिनसभार
सूरस्यांममुखवेंनमधुरसुनि उलटेसबब्योहार॥३॥रा॥गपूरवी
मुरलीगतिविपरीतिकराई॥ तिहूंभुवनभरिनादसमान्योंरा
धारवनबजाई॥१॥ बछरापयनन्नाहीसुखपरसत चरतिनहींब
णधेंनु॥ जमुनाउलटीधारबहीचलिपवनथकितसुनिवेंनु
२॥ विह्वलनहींभएसुधिकाहूसुरगंधर्वनरनारि॥ सूरदासस
बचकितजहांतहां व्रजयुवतिनसुखकारि॥३॥रा॥गकेदारो॥
मुरलीसुनतअचलचले॥ थकेचरजलझरतपाहन विफलवे
दृफले॥१॥ पेंस्रवनगोधननिथननतें प्रेमपुलकितगात॥ झुरे
द्रुमअंकुरितपल्लवविटपचंचलपात॥२॥ सुनतखगमृगमोंन
साध्योंचित्रकीअनुहारि॥ धरणिउमगिनमातिधरमेंजतीयो २९

www.vallabhacharya-agrahara.org

गविसारि ॥३॥ ग्वाल एहगएहसहजसोभततउरेंसहजनसुभाय ॥ सूरप्र
भुरसरासकेहितसुखरेंनिबढाइ ॥४॥ राग श्रासावरी ॥ कहुंनपाय
रीसबढूंढिवनघनस्यामसुंदरपरवारोंतनमन ॥ नेंननिबरप
टीमेरेंनवतेंलगीरहतिकहूंप्रानप्यारोंनिरधनिकोंधन ॥१॥
चंपकजायगुलालबकुलबहुलीतरुतरुप्रतिबूझतिकहूंदे
खेनंदनंदन ॥ सूरदासप्रभुरासरसिकबिनरासरसिकिनीसि
रहबिकलकरिभईहेंमगन ॥२॥ राग कांन्हरौ ॥ कोउकहूदेखेरीनंद
लाल ॥ सांवरोंसलोंनोंढोटानेंनविसाल ॥१॥ मोरमुकटवनमा
लविसाल ॥ पतिंबरमनमोहेंगोपाल ॥२॥ निमिषवनगाईसवेंब्र
जबाल ॥ अंतरध्यांनभएरसिकरसाल ॥३॥ द्रुमद्रुमढूंढतभईबेहाल
सूरस्यामबिनबिरहजंजाल ॥४॥ राग बागेश्री ॥ मोहनीमोहन
कोटेरें ॥ एसोंसंगतजिदूरिभएक्योंसमुझिपरीढरिगाईनघेरें
॥१॥ चूकमांनिहमलीनीअपनीकेसेंहूलालबहुरिफिरिहेरें ॥
सूरदासप्रभुरसबिहारीश्रीवनवारीहृदयाकरतकाहेफेरें ॥
॥२॥ राग अडानों ॥ होंकोंनहएबाततिहारीबनवारीसुखहीमेंभ
एन्यारे ॥ एकसंगएकसमीपरहतहेंतिनतजिकहांसिधारे
॥१॥ अबकेंफिरिकृपामिलोंकरुनामयकेहियतहोंसुखकारे ॥
सूरस्यामअपराधछमहुअबसमुझीचूकहमारे ॥२॥ राग पना
री ॥ केंहिमारगमेंजाउंसखीरीमारगबिसरह्यों ॥ नाजानोंकि
तहेंगएमोहिजांनजांनिपरह्यों ॥१॥ अपनोंपियढूंढतिफि
रोंरीमोहिमिलिबेकोचाव ॥ कांटेंभमबोप्रेमकोपियपहपायों
राव ॥२॥ बनडूंगरढूंढतफिरीघरमारगतजिगाउ ॥ बूझेंद्रुमप
तिसखराकोउकहेंनपियकोनाउ ॥३॥ चकृतभईचितवतफि
रोंरीव्याकुलअतिहीनाथ ॥ अबकेंजोंकेसेंहूमिलोंतोंपल
कनतजिहोंसाथ ॥४॥ हरेंमांढपियघरकरोंनेंननिबेठकरेंउ
सूरदासप्रभुसंगमिलोंबहुरिरासरसलेंउ ॥५॥ राग श्री राग
कांन्हप्यारोंकहुंपायोंरी ॥ स्यामस्यामकहिकहतफिरतियह
धुनिवृंदावनछायोंरी ॥१॥ मर्नजांनिपियअंतरदेंरहेसो
मेंनपाबरुआयोंरी ॥ अबबिनुदेखेंकलनपरतिछिनुस्याम
सुंदरगुनगायोंरी ॥२॥ मगीमगनिद्रुमखगमारसपिककाहू
नहीबतायोंरी ॥ सूरदासप्रभुमिलहृकृपाकरिजुवतिनिबे
रिसुनायोंरी ॥३॥ राग बिहागरौ ॥ होंकांन्हमेंतुमचाहोंतुमकाहे

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा॥ नआवौं॥ तुमतनतुमधन तुममनभावौं॥ २॥ कियौंचाहैंअपर
॥ २१॥ सपरसकरौंनहीमांना॥ सुन्योंचाहौंश्रवणमधुरमुरलीकी
ताना॥ २॥ कुंजकुंजप्रतिफिरीतेरेगुननिकीमाला॥ सूरप्रभु
वेतिमिलौंमोहिमोहननंदगोपाला॥ ३॥ राग कान्हरौ॥ सखीमो
हिमोहनलालमिलावैं॥ ज्योंचकोरचंदाकोंएकएकभृंगा
ध्यानलगावें॥ १॥ विनदेखेंमोहिकलनपरेंरीयहकहिसब
निसुनावें॥ विनकारनमेंमानकियोरीअपनेहीमनदूषण
वें॥ २॥ हाहाकरिपाइनपरिपरिहूहरिहूपेटेरलगावें॥ सूरस्या
मविनकोरिकरोजोऔरनहीजियआवें॥ ३॥ राग आसावरी
हौंतौढूंढिफिरिआईरीमाईरीसिगरोंवृंदावनकहूंनही॥
पाएनंदनंदना॥ अननहिरहेजायकोनेंधौंराखिछिपायमो
कोंनकछुसुहायकहांजायरहेकंदना॥ १॥ मोहितेंपरीचू
कअंतरभएहेंजातेतुममोकहेनिवातमैंहींकिवोदंदना
सूरदासप्रभुविनभईहोंविकलआजकहांरहेवनमाली
सुरनरमुनिजनवंदना॥ ४॥ राग विलावल॥ मिलहूस्याममो
हिचूकपरी॥ नेहिअंतरतनकीसुधिनाहीरमनारटलागीनि
टरी॥ १॥ धरनिपरीव्याकुलभईवोलतिलोचनधाराअंसुअ
री॥ कवहूंमगनकवहूंसुधिआवतसरनसरनकहिविरह
जरी॥ २॥ हूकसमहूककहिहेरिउठतिहेंजुगसमवीती॥ तितिपल
कघरी॥ सूरनिरखिव्रजनारिदसावहचकृतभईजहांनहांप
री॥ ३॥ राग विलावल॥ देखिदसासुकुमारिकीजुवतीसवधाई
तरुतमालवूझतिफिरेंकहिकहिमुरराई॥ १॥ नंदनंदनदेखेक
हूंमुरलीकरधारी॥ कुंडलमुकटविराजईतनुसामलभारी
२॥ लोचनचारुविशालहैंनासाअतिलोंनी॥ अरुनअधरदसना
वलीछविवरनेंकोंनी॥ ३॥ विंवपवारेंलाजहीदामिनिदुतिथो
री॥ ऐसेंहरिहमकोंकहोंकहूंदेखेंहेंरी॥ ४॥ अंगअंगछविक
हिकहेंदेखेंविनआवें॥ सूरस्यामपावेंनहींकोकाहिवतावें
५॥ राग विलावल॥ अतिव्याकुलभईगोपिकाढूंढतिगिरिधा
री॥ वूझतिहैंवनवेलिसोंदेखेवनवारी॥ जाहीजुहीसेवती
करुनाकनिआरी॥ वेलिचमेलीमालतीवूझतिद्रुमडारी॥ २॥
खूंझांमरुवाकुंदसोंकहांगोरपमारी॥ वकुलडुलिवटकदमपें
ठाढीव्रजनारी॥ ३॥ वारवारहाहाकरेंवहुरोगिरिधारी॥ स

www.vallabhacharya-agrahara.org

रस्यांमकोंनांमलें लोचनजलढारी ॥४॥ राग विलावल ॥ कहूंन
पायेस्यामकोंकूंतिवनवेली ॥ सवेंभईव्याकुलफिरेंतनुमद
नदुहेली ॥१॥ मृगनारीसोंबूझही वूझैंमधुसापी ॥ कमलसरोवरि
वूझहीविरहानतुमरी ॥२॥ कनककवेलिसी सुंदरीद्रुमकतनारी
मनोंदामिनिधरनीपरीकीधोंपनारी ॥३॥ इजउननेंफिरिश्री
वहीजहांराधाप्यारी ॥ सूरस्यांमप्रजहुंनहीकरिमिलनकृपा
री ॥४॥ राग विलावल ॥ व्रजनिहैं रोपिचरितव्रजनारि ॥ देखिश्र
निहीविकलराधाइहैंबुद्धिविचारि ॥१॥ एकभईगोपालको
वपुएकभईवनवारि ॥ एकभईगिरधरनसमरपएकभईहै
पारि ॥२॥ एकएकभईधेंनुवछराएकभईनंदलाल ॥ एकभ
ईजमुलाउधारनएकत्रिभंगीरसाल ॥३॥ एकभईछविरास
मोहनकहतिराधानारि ॥ एककहतिउठिमिलहुभुजभरिसू
रप्रभुरीप्यारि ॥४॥ राग जेतश्री ॥ सुनतधुनिश्रवणउठीमिल
हुभुजभरिप्रकुलाइ ॥ कहांकपटकरिमोहिदिषावतिकहां
स्यामसुखदाइ ॥१॥ कृष्णकृष्णसमरणप्रानिकहिकेंवहुरिगिरी
महराइ ॥ सुनिदेरीजहांतहांव्रजबालावनद्रुमसोरलगाय ॥२॥
सूरदासप्रभुअंतरजामीविरहनिलेउजिवाइ ॥३॥ राग विहागरो
राधेभूलिरही अनुराग ॥ तरुतररुदनकरतिअलसांनीढूंढि
फिरीवनबाग ॥१॥ कबरीग्रसितसिरवंडीअहिभ्रमचरनिमिली
मुखलाग ॥ वांनीमधुरजांनिपिकबोलतकदमकरारतकाग
॥२॥ करपल्लवकमलेंकुसमाकरजानिअसितभएकीर ॥ राका
चंद्रचकोरजांनिकेंपिवतनेंनकोनीर ॥३॥ विहवलविकला
जांनिनंदनंदनप्रगटभएतेहिकाल ॥ सूरस्यांमहितप्रेमअं
कुरउरलायलईभुजमाल ॥४॥ राग कांन्हरो ॥ नंदनंदनउरलाय
लई ॥ नागरिप्रेमप्रबारतनव्याकुलतवकरुनाकरिहेंभई
॥१॥ देषिनारितरुतरमुरझांनीदेहदसावनभूलिगई ॥ प्रिया
जांनिअंकमभरिलीनीकहिकहिएसीकांमहईं ॥२॥ वदन
विलोकिकंठउठिलागीकनकवेलिआनंदजई ॥ सूरस्यांमफ
लहुकपारसिभएप्रतिहिभईआनंदमई ॥३॥ राग कांन्हरो ॥ प्र
गटभएनंदनंदनआय ॥ प्यारीनिरषिविरहअतिव्याकुला
धरनेंलईउठाय ॥१॥ आभेंभुजाभरिअंकमदीन्हेंराखीकंठ
लगाय ॥ प्राणहुतेंप्यारीतुसरेंयहकहिकहिदषविसराइ ॥२॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. हूसतनभए अंतरहमतुमसों सहजखेलउपजाइ॥ धरनीमुरछि
॥२६३ परीतुमकाहेकहोंगईचतुराय॥३॥ राधामकुचिरहीमनजोंन्यों
कह्योंनकछूसुनाइ॥ सूरदासप्रभुमिलिसुखदीन्होंदुखडा
रयोबिसराइ॥४॥ राग सूहो॥ अबतातेंहूपिप्रगटभए॥ सहज
प्रेमकेवसकन्हाईजुवतिनिकोंमिलिहरषदए॥१॥ वैसोईसु
खसवकोंफिरदीन्होंउहेंभावसवमांनिलिवो॥ पहलोंन
तिहरिसंगतवहीनेंवुहेंबुद्धिसवइहेंहिवो॥२॥ उहेंरासमंड
लउरज्ञांनतजिविचगोपीविचस्यांमधनी॥ सूरस्यांमस्यांमा
माधिनायकउहेंपरस्परप्रीतिवनी॥३॥ राग सारंग॥ वहुरिस्यां
मसुखरासकियो॥ भुजभुजजोरिजुरीव्रजवालावैसेंहीरस
उमगिहियो॥१॥ वैसेंहिमुरलीनादप्रकास्योवैसेंहिसुरनर
वसभए॥ वैसेंहिउडगनसहितनिसापतिवैसेंहिमारगभू
लिगए॥२॥ वैसियदसाभईजमुनाकी॥ वैसेंहिगतितजिपव
नथक्यौ॥ वैसेंहिनिर्तनरंगवढायोवैसेंहिवहुर्यौकामज
क्यों॥३॥ वहैनिसावैसेहिमनजुवतिवैसेंहीहरिसवनिभजे
सूरस्यांमवैसेईमनमोंहनवैसेंहिप्यारीनिरखिलजें॥४॥
राग विहागरो॥ स्यांमछविनिरखतिनागरिनारि॥ प्यारीछवि
निरखतमनमोहनसकुचनेनेंनपसारि॥१॥ पियसकुचनतन
हिहरषिमिलावतनससुरसहोनलजात॥ श्रीराधिकानिरखि
अवलोकनिअनिहिरदेंहरखात॥२॥ अरसपरसमोहनमि
लिमोहनेमिलिसगगोपीगोपाल॥ सूरदासप्रभुसवगुनला
यकदृष्टिनिकेउरमाल॥३॥ राग विहागरो॥ रचिरसरासस्यांम
सुजांन॥ प्रथममुरलीनादकरिहरिहर्योसवकोग्यान॥१॥
सवनिउलटीरीतिकीनीदेवमुरनरआदि॥ व्रजवधूमनकों
मपूरनकियोंपुरुषअनादि॥२॥ सहसमुखनिसिवालसोव
तसोरचीषटमास॥ हेतजुवतीसुखवढावनकियोपूरनआस
३॥ भेंटिअंतरध्यांनकोंदुखउहेंराख्योभाव॥ सूरप्रभुमहिमा
अगोचरनिगमअंतनपाव॥४॥ राग विहागरो॥ मोहनरच्यों
अद्भुतरास॥ संगमिलिवृषभानतनयागोपिकाचहुंपास॥१॥
एकहीसुरसकलमोहेमुरलिसुधाप्रकास॥ जलहुथलके
जीवथकिरहेमुनिमनहुउदास॥२॥ थकितभयोसमीरसु
निकेंजमुनउलटीधार॥ सूरप्रभुव्रजवांममिलिवननिसाके

www.vallabhacharya-agrahara.org

रतविहार ॥ ३ ॥ रागनट ॥ विहरतरासरंगगोपाल ॥ नवलस्या
मासंगसोहतनवलसबब्रजबाल ॥ १ ॥ सरदनिसिअतिनव
लउज्वलनवलनाठनधाम ॥ परमनिर्मलपुलिनजमुना
कलपतरुविश्राम ॥ २ ॥ कोसद्वादशरासपरमितिरच्योनंद
कुमार ॥ सूरप्रभुसुखदियोनिसिरमिकामकौतुकहार ॥ ३
॥ रागललित ॥ रासरसस्त्रममिलतभईब्रजबाल ॥ निसिसुखदेंजमुना
जुलेंगएभोरभयोतेहिकाल ॥ १ ॥ मनकामनाभएपरिपूरनर
हीनएकोसाध ॥ षोडससहसनारिसंगमोहनकीनोसुखअ
गाध ॥ २ ॥ जमुनाजलविहरतनंदनंदनसंगमिलेंसकुमारि
सूरधन्यधरनीवृंदावनरवितनयासुखकारि ॥ ३ ॥ रागगोंड
मलार ॥ संगब्रजनारिहरिरासकीन्हें ॥ सबनिकीआसपूरन
करीलेंतरयनपियहेतसुखमानिलीन्हें ॥ १ ॥ मेंटिकुलकानि
मरजादविधिवेदकीत्यागिगृहनेहसुनिवेनुधाई ॥ पवीजें
जेंकरीमनहिमनसबधरीसंककाहूनकरीआपभाई ॥ २ ॥ ज्यों
महामत्तगजजूथकरनीलिएकूलअगारफोरिडरकाहिमानें
सूरप्रभुनंदसुतनिदरिनिसिरासकर्योनागनरलोकसुरस
बेंजानें ॥ ३ ॥ अथजलक्रीडा ॥ रागगोंडमलार ॥ रैनिरसरासमुख
करतबीती ॥ भोरभयेंतटपावनजमुनकेसलिलन्हातसुख
करतअतिबढीप्रीति ॥ १ ॥ एकएकमिलततिहहरिएकहसिसं
गरासिएकजलमध्यएकतीरठाढी ॥ एकएकडरनिएक
अंकभरिकेलिनिएकसुखलरतिअतिनेहबाढी ॥ २ ॥ काहू
नाहिडरइकजलपलहूंक्रीडाकरतहरतमननिदरिज्योंकें
तनारी ॥ सूरस्यामप्रभुस्यामासंगगोपिकामिटीतनुसाधु
भईमगनभारी ॥ ३ ॥ रागसोरठ ॥ साधनहीजुवतिनमनरा
खी ॥ मनवंछनासबनिफलपायोवेदविपनिषदसाखी ॥ १
भुजभरिमिलीकठिनकुचचापेंअधरसुधारसचाखी ॥ हा
वभावनेंननिसेंननिरेंवचनरचनमुखभाषी ॥ २ ॥ शुकभाग
वतप्रगटकरिगान्योकछूनदुविधाराखी ॥ सूरदासब्रजना
रिसंगहरिवाकोंरहीनकांची ॥ ३ ॥ रागकान्हरो ॥ धन्यशुकमु
निभागवतवखान्यो ॥ गुरुकीकृपाभईजबपूरनतबरसनाक
हिगान्यो ॥ १ ॥ धन्यस्यामवृंदावनकोसुखसंतमयातेंजान्यो
जोरसरासरंगहरिकीन्हेवेदनहीठहरान्यो ॥ २ ॥ सुरनरमुनि

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ मोहितसबकीनें सिवहिसमाधिभुलान्यों। सूरदासतहंनेंनव
॥२९॥ साए औरनकहूं पत्यान्यों॥३॥ रा॰ धनाश्री॥ मैंकैसेंरसरासहि
गाऊं॥ श्रीराधिकास्यामकी प्यारी तुमविनकृपावासब्रजपाऊं
॥१॥ अन्यपरेषवसपनेहुनजांनोंदंपतिकेसिरनाऊं। भजनप्रतापच
रणमहिमातेंगुरुकीकृपादिखाऊं॥२॥ नवनिकुंजवनधाम
निकटएकआनंदकुटीरचाउं। सूरकहांविनतीकरिविनवें
लाभजनमयहध्याऊं॥३॥ राग बिलावल। तुम्हहीमोकोंटीछिक
यों। नैंनसदाचरननिनराखेमुखदेखतनाहिगनतवियों॥१॥
प्रभुतुममेरीसबुजामिटाईजोईसोईमागतपेलि। मागोंवर
नसरनवृंदावनजहांकरतनिजकेलि॥२॥ यहवांनीभजनी
कश्रवणविनसुनतबहुतसरमाऊं। श्रीवृखभानसुतापति
सेउंसूरजगतभरमाऊं॥३॥ रा॰ बि॰ गरो॥ रासरसलीलागा
यसुनाऊं। यहजसकरैंसुनेंसुखश्रवणनितिनचरननिसि
रनाऊं॥१॥ कहाकहोंवकताश्रोतातालएकरसताकोंगाऊं
अष्टसिद्धिनवनिधिसुखसंपतिलघुताकरिदरसाऊं॥२॥ जो
परतीतिहोइहिरदेमेंजगभ्रमयाधृगदेखें। हरिजनदरसहि
रिपिसमपूजेंअंतस्कालनभेखें॥३॥ धनिवकताते ईधनिश्रो
तास्यांमनिचवटहेंभाव। सूरधन्यतिनकेपितुमाताभावभज
नहैंजाकें॥४॥ रा॰ बिलावल। वृंदावनहरिरासउपायों। देषिस
रदनिसिरुचिउपजायों॥१॥ अद्भुतमुरलीनादसुनायों। जुवति
नसुनिमनदसागवायों॥२॥ मिलिधाईमनकोंफलपायों। जं
गमचलेंसुचलनिथिरायों॥३॥ उलटीजमुनाधारबहायों। सु
निधुनिचंचलपवनथकायों॥४॥ सुरनमुनिकोंध्यांनभुला
यों। चंदगगनमारगबिसरायों॥५॥ रूपदेखिमनकांमलजा
यों। रसमेंअंतरविरसजनायों॥६॥ जुवतिनकेमनविरहबढा
यों। बहुरिमिलेहितअतिउपजायों॥७॥ फेरिरासमंडलीबना
यों। हावभावकरिसबनिरिझायों॥८॥ कलपरेंनिरसहेत
उपायों। प्रातसमेंजमुनातटआयों॥९॥ नारिनिकेनिसिस्रम
हिमिटायों। जुवतिनप्रतिप्रतिरूपबनायों॥१०॥ सिंगाररद
मारदयहगायों। ध्यांनदरयोंचितनहांचलायों॥११॥ राधावर
निजुनामकहायों। सूरदासकछुकछुकहिगायों॥१२॥ रमाकें
तजासुखकोंध्यायों। सोसुखनेंदसुवनब्रजभायों॥१३॥ रा

www.vallabhacharya-agrahara.org

गौरी ॥ जमुनाजल क्रीडत नंदनंदन ॥ गोपीजन रमनी हर चहुंदि
सि मध्य आस्थित निकंदन ॥ १ ॥ पकरैं पांनि परस्पर छिरकत सि
थिल सलिल भुजबंदन ॥ मनों जुवती पूजति आहि पति कों लं
पटों अंक करें वंदन ॥ २ ॥ कच भीगि कुटिल मुख सअनु कनक बुवन अं
गगति मंदन ॥ पांन हु भरि गंडूष कमल पर अरत अलि आनंदन
३ ॥ भुज भरि अंक अगाध चलत लें ज्यों लुनचिक खगफंदन ॥ सू
रदास प्रभु सुजस बखानत नेति नेति श्रुति छंदन ॥ ४ ॥ राग कां
नरों ॥ विहरत हैं जमुना जल स्यांम ॥ राजत हैं दोउ बांह जोरी
दंपति अरु ब्रजबांम ॥ १ ॥ कोउ ठाढी जनजानु जंघलों कोउ करि
हिरदैं ग्रीव ॥ यह सुख बरनि सकैं ऐसो को सुंदर ताकी सीव ॥ २ ॥
स्यांम अंग चंदन की आभा नागरि केसरि अंग ॥ मलयज पंक
कुमकुमा मिलिकें जल जमुना एक रंग ॥ ३ ॥ निसि श्रम मिट्यो
मिट्यो ननु आलस परसि जमुन भई पावन ॥ सूर स्यांम जलमा
ध्य जुवतिगन जनजन के मनभावन ॥ ४ ॥ राग कांनरों ॥ जल
क्रीडा अति सुख उपजायो ॥ रास रंग गुन नेनहि भूलत उ है भे
द मन आयो ॥ १ ॥ जुवती कर कर जोरि मंडली स्यांम नागरी बी
च ॥ चंदन अंग कुमकुमा छूटत जल मिलि तट भई कीच ॥ २ ॥
जो सुख स्यांम करत जुवती संग सो सुखनि हूं पुरनांही ॥ सूर
स्यांम देषत नपि लखी रीझि रीझि लपटाहीं ॥ ३ ॥ राग बिलाव
ल ॥ विहरत नारि हसत नंदनंदन ॥ अंकम भरि भरि लेत आनं
दन ॥ १ ॥ निर्मल नीर छूटि तनु चंदन ॥ अति सोभा त्रिभुवन जन
वंदन ॥ २ ॥ कंचन पीट नारी अंग सोभा ॥ वेउन कों वे उनकों लो
भा ॥ ३ ॥ कबहुं अंकम भरि चलत अगाध हि ॥ परस्पर मेंटत म
न साध हि ॥ ४ ॥ कोउ भाजें कोउ पाछें धावें ॥ जुवतिन सों कहि
ता हि मगावें ॥ ५ ॥ ताकों गहि अथाह जल डारें ॥ सुख व्याकुल
ता रूप निहारें ॥ ६ ॥ कंठ लगाय लेत पुनि ताही ॥ देत आलिंगन
रीझत जाही ॥ ७ ॥ सूर स्यांम ब्रज जुवतिन भोगी ॥ ताकों ध्यावत
सिव मुनि जोगी ॥ ८ ॥ राग टोडी ॥ ऐसें वस्य स्यांम राधा के ॥ ना
म लेत पावन आधा के ॥ १ ॥ प्यारी स्यांम अंजुली डारें ॥ वा छबि
को चितलाय निहारें ॥ २ ॥ मनों जलरुह जल डारत तारें ॥ मन मन
ही तन मन धन वारें ॥ ३ ॥ निरखि रूप नहि धीर सभारें ॥ सूर स्यां
म कों अंकम धारें ॥ ४ ॥ राग ललित ॥ राधे छिरकति छैल छबीली

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. कुचकुमकुम कंचुकिबंदटूटेलरकिरह्रीलटगीली॥१॥ बंदन
॥२६५ सिरताटंक गंडपररतनजेरिजमनिलीली॥ गतिगयंदमृग
राजसुकटिपरसोभितकिंकिनिटीली॥२॥ मच्योखेलजमुना
जलअंतरप्रेमसुरतिरसफीली॥ नंदसुवनभुजग्रीवविराज
तभागसुहागभरीली॥३॥ बरखतसुमनदेवगणहरषित
दुंदुभिसरसबजीली॥ सूरस्यामस्यामारसक्रीडतजमुनत
रंगाथकीली॥४॥ राग रामकली॥ स्यांमास्याम सुभगजमुना
जलबिभ्रमकरतबिहार॥ पीतकमलइंदीवरपरमनोंभो
रहिंभएबिहार॥१॥ श्रीराधाअंबुजकरभरिकें छिरकतवा
रंवार॥ कनककलतामकरंदफरतमनुह्वालतपवनसवार
२॥ अतसीकुसमकलेवरबूंदें प्रतिबिंबतमनुहार॥ जोति
प्रकाससुघनमेंखोलतस्वांतिसुवनआकार॥३॥ धायध
रेवृषभांनसुताहरिमोहेसकलसिंगार॥ सिरतजलरस
रमनोंविधुमिलिश्रवतसुधाकीधार॥४॥ राग रामकली
रीझेस्यामनागरिरूप॥ नैसीएलनवुगपिउरपरश्रवतनी
रअनूप॥१॥ श्रवतजलकुचपरसधारानहीउपमापार॥ म
नोंगुगलितराहुश्रमतकनकगिरिपरधार॥२॥ कुचनिपर
सतस्यामसुंदरनागरीसरमाइ॥ सूरप्रभुतनकोंमव्याकुल
गएमोंनजनाइ॥३॥ राग रामकली॥ स्यामास्याम अंकमभरी
उरजउरपरसाअभुजभुजजोरिगाढेंधरी॥१॥ तुरतमनसुख
मांनिलीन्हेंनारितेहिंगढरी॥ परस्परदोउकरतक्रीडाराधि
कानवहरी॥२॥ ऐसेंहीसुखदियोंमोहनसबेंआनंदभरी॥ क
रतिरंगाहिलोरजमुनाप्रेमआनंदझरी॥३॥ रासनिसिश्रमदू
रिकीन्हेंधन्यधनियहघरी॥ सूरप्रभुतरुनिकासिआएना
रिसंगसचखरी॥४॥ राग गूजरी॥ ठाढेस्यामजमुनातीर॥ ध
नापुलिनपवित्रपावनजहांगिरधरबीर॥१॥ जुवतिबनिब
निभईठाढीओरपहिरेंचीर॥ राधिकासुखस्यामदायका
कनकवरनसरीर॥२॥ लालचोलीली लउंडियासंगजुव
तिनभीर॥ सूरप्रभुछबिनिरखिरीझेमगनभयोंमनकीर॥३॥
राग नट॥ ललकतस्यामम नललचात॥ कहूनहेंघरजाहु
सुंदरिसुखनआवतवात॥१॥ घटसहसदसगोपकंन्यारे
निभोगईरास॥ एकछिनुभईकोउनन्यारीसबनिपुरईआस॥२

www.vallabhacharya-agrahara.org

बिहसि सब घर घर पठाई ब्रजनाई ब्रजबाल ॥ सूर प्रभु नंद धा
म हूं चले लखो काहू न ख्याल ॥३॥ राग बिलावल ॥ ब्रजवासी
सब सोवत पाए ॥ नंद सुवन ऐसी मति ठांनी घर लोगनि कों
जाय जगाए ॥१॥ उठे प्रात गाथा मुख भाखत आतुर रैंनि बि
हानी ॥ अंडत अंग गज साल बदन भरि कहत सबै यह बांनी
॥२॥ जो जैसें सो तैसें लागे अपने अपने काज ॥ सूर स्याम के च
रित्र अगोचर राखी कुल की लाज ॥३॥ राग जैतश्री ॥ ब्रज जुव
ती रस रास पगी ॥ कियो स्यांम सब कों मन भायो निसि रति
रंग जगी ॥१॥ पूरन ब्रह्म अकल अबिनासी सब निसं ग सुख
दीन्हें ॥ जितनी नारि भेख भए नितने भेद न काहू चीन्हें ॥२
॥ बहु सुख रजन काहूं मन तें पति हित साधु पुराई ॥ सूर स्या
म दूलह सब दुलहिनि निसि भाँवरि दै आई ॥३॥ राग गूजरी
स्यांमा स्यांम के उर बसी ॥ रैंनि निर्जन सिभोगिय मन मंडि तनें
छबि लसी ॥१॥ स्यांम ना रस मगन डोलत सब नय निमें ज
सी ॥ कोक कला प्रवीन सुंदरि कंत गुन करि कसी ॥ बरनि
सदन सिंगार बैठी अंग अंग प्रति रसी ॥ सूर प्रभु आए अ
चानक देषि तिन कों हसी ॥३॥ राग रामकली ॥ पिय निरखत
प्यारी हसि दीन्हा ॥ रिस स्याम अंग अंग निरखत हसि नाग
रि उर लीन्हा ॥१॥ आलिंगन दे अधर दसन खंडि कर गहि चि
बुक उठावन ॥ नासा सों नासा लै जोरत नैंन नैंन परसावत
॥२॥ एहि अंतर प्यारी उर निरख्यौ झझकि भई तब न्यारी ॥ सू
र स्यांम मो कों रिस रावन उर ल्याए धारि प्यारी ॥३॥ अपरा
धा मान ॥ राग टोडी ॥ अब जांनी पिय बात तुम्हारी ॥ मो सों तु
म मुँह की मिलवत हो भावति है वह प्यारी ॥१॥ राखें रहत ह
दे परजा को धनि भागि है ताके ॥ ऐसी कहों लखी नहि अब
लों बस भए हो याके ॥२॥ भली करी यह बात जनाई प्रगट दि
षाई मोहि ॥ सूर स्याम यह प्रान पियारी उर में राखी पोहि ॥३
॥ राग धनाश्री ॥ सुनत स्याम चक्रत भए बांनी ॥ प्यारी पियमु
ख देखि कछु कह्यो हसि कछुक हृदें रिस आंनी ॥१॥ नागरि हस
त हसी उर छाया जा पर अति हहरानी ॥ अधर कंपि रिस भों
ह मरोरत मनही मन गहरानी ॥२॥ एक एक रही चितै प्रति
बिंब हि सौति साल जिय आंनी ॥ सूरदास प्रभु तुम बड़भागी

www.vallabhacharya-agrahara.org

सू.सा. बडभागिनि जेहि आंनी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ प्यारी सांच कहति की
॥२६६॥ हांसी ॥ काहे कों इतनों रिस पावत कत तुम होहु उदासी ॥ १ ॥ पु
नि पुनि कहति कहां तव हीं तें कहां ठगी सी ठाढी ॥ एक टक
चितै रही हरि हृदें तन मनो चित्र लिखि काढी ॥ २ ॥ समुझी नहीं
कहां मन आई मदन त्रसें तुम आगें ॥ सूरस्याम भए कों मम आ
तुर भुजा गहन पिय लागें ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ मोहि छुवौ जिनि
दूरि रहौ जू ॥ जाकों हृदें लगाय लई है तांकी वांह गहौ जू ॥ १ ॥ तु
म सरवज्ञ और सब मूरख सो रानी अरु दासी ॥ मैं देखति हृदें
वह वैठि हम तुम कों भई हांसी ॥ २ ॥ वांह गहति कछु सरम नि
आवति सुख पावत मन मांही ॥ सुनहु सूर मो तन वह आगट
त चितवति डरपति नांही ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ कहां भई धनि बा
वरी कहि तुमहि सुनाऊं ॥ तुम तें को है भावती जेहि हृदें वसाऊं
॥ १ ॥ तुमहि श्रवण तुम नैंन हौ तुम प्रांन अधार ॥ वृथा क्रोध त्रिय
कौं करों कहि बारंबार ॥ २ ॥ भुज गहि ताहि दिखावहु जो हृदें व
तावति ॥ सूरज प्रभु कहैं नागरी तुम तें को भावति ॥ ३ ॥ राग नट
माधौ नाहि नें दूरति जो हृदें वसति ॥ ऐसी ठौर मेरें जांन तुम ही
कौ नहीं हैं कोन मो सन मुख देखत न त्रसति ॥ १ ॥ मुके तें कुक
ति भाल भ्रकुटी कुटिल किए रूखे रूखे वोढें रहति हूं सैंन तें हस
ति ॥ तव ही तें एक टक चितवत बोहि जिन कवाउ रनें इत उत
न धसति ॥ २ ॥ जाहि सों लगत नैंन ताही सों खगत वैंन नख
सिख लों गात सब ग्रसति ॥ ताके हरि राचे रंग सोई है अंतर सें
गाकों वकी करों नीके जल ज्यों लसति ॥ ३ ॥ विहसि बोले गो
पाल सुनि हो व्रज की बाल उछंग लेत क न धरनि खसति
आपनी छायानि हारि काहे कों करति आरि कांम की कसौ
टी सूर सकतें कसति ॥ ४ ॥ राग कान्हरौ ॥ काहे कों हूं बात ब
नावत ॥ अव तुम कों पिय मे पत्याति हौं छांह आपनी धर
नि वतावत ॥ १ ॥ मारे घत हम कों तुम मिलि हौं काहे कों ता
कों आन सवावत ॥ जैहैं कहूं निकसि हिरदें तें जांनि बूझि कैसौं
तेहि उचरावत ॥ २ ॥ जो उह कहैं करों तुम सोई कहां मोहि पु
नि पुनि समुझावत ॥ सूरस्याम नागर बहु नागरि भले भले
जू मोहि रिझावत ॥ ३ ॥ राग गौडमलार ॥ वृथा हव दृरि खिझा न
करो प्यारी ॥ कहां रिस करति घां घांह आपनी देखि डर कौ

www.vallabhacharya-agrahara.org

उनहीं रिसजरतिभारी ॥ १ ॥ तुमहिं धनरहतिमननेंनमें तुमब
सतिकनकसोकमिलेहु कहांवेंठो ॥ चतुरई कहां बुधिकेसी
भईचूक समुझेविनाभोंह एंठी ॥ २ ॥ यह सुननागरिसभरीरहीन
हिंनहोंरवरी बोटहूंरूरहहरी मानुकीन्हों ॥ नाहूमनमनकह्यो
मेंबहुतसुखलह्योंसोंतिरिषरायमोहि सूरदीन्हों ॥ ३ ॥ राग
कल्यान ॥ कियोंप्रतिमानुहृषभांनुबारी ॥ रेषिप्रतिबिंबपि
यहरेंनारी ॥ मनहीं मनरेंतिअजितनांहिगारी ॥ कहांधांकरत
लेंनाहुप्यारी ॥ १ ॥ सुनतयहवचनपियविरहबाढ्यों ॥ कियों
प्रतिनागरीमानुगाढों ॥ ३ ॥ कांमतनुदहतनहिधीरधारें ॥
कबहुंवेंठतउठतबारबारें ॥ ४ ॥ सूरप्रतिभएव्याकुलमुरा
री ॥ नेंनभरिलेतजलरेंतढारी ॥ ५ ॥ राग विहागरों ॥ मानुकसों
त्रियबिनुअपराधहि ॥ ननुरहूंनिविनुकाजआपनोंकह
तउरतजियबारहि ॥ ५ ॥ कहारहीमुखमूंदिभामिनीमोहिंचू
ककछुनांहीं ॥ रूठिकिरहीक्योंचतुरनागरीदेखि आपनी
छांहीं ॥ २ ॥ अजहूंदूरिकरोंरिसउरतेंहूरदेंसानविचारों ॥
सूरस्यांमकहिकहिपचिहारे हूककीन्हेंजियभारों ॥ ३ ॥ राग
सोरठि ॥ स्यांमकांमतनुचरवकियों ॥ मानुधरयोंनागरिजि
यगाढोंमूरख्योंकमलरिसोंर ॥ व्याकुलभएचलेवृंदावनमि
लीदूतिकआंनि ॥ कोस्यांरहीवरननिहारतसकेनदुख
पहिचांनि ॥ २ ॥ केरीरमाआजुमेंदेखतिकहोंनमोहिंसुनाइ
सूरस्यांमदेखेतुमव्याकुल आएकहांगवाइ ॥ ३ ॥ राग गोरी
व्याकुलवचनकहतहेंस्यांम ॥ हपाभनागरीमानवढायोंजो
रिकियोतनुकांम ॥ १ ॥ यहकहतहिलोचनभरिआएपायों
विरहसहाय ॥ चाहतकह्योंभेदनाआगेंवानीकहीनजाइ
२ ॥ औरसखीलेंगहिअंतरआईव्याकुलदेखिमुरारि ॥ सूरस्यां
ममुखदेखिचकृतभएक्योंतनुरहीबिसारि ॥ ३ ॥ राग विहाग
रों ॥ कहतिदूतिकासखिनबुझाई ॥ आजुराधिकामानुक
रह्योहेंस्यांमगएहुमिलाई ॥ १ ॥ करसोंकरधरिलालगाईले
साथिनसाहितवनधांम ॥ सुखदेंकह्योंलियेंआवतिहोंसं
गविलसाउवांम ॥ २ ॥ मोआगेंकीमहरिविरहनाकहांकरें
वहमांन ॥ सुनहुसूरप्रभुविकितिकवातयहकरोंनपूरनकी
मं ३ ॥ राग भेरों ॥ स्यांमकुंजवेंठेगिरिगई ॥ चतुरदूतिकासखि

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ यनिलीनें आतुरताई जानि लई ॥१॥ मनहीं मन एक रची व
॥२६१ तुराई इहैं कहोंगी बात नई ॥ अवहीं लें आवति हैं ताकों इहों
भई कछु वहुतरई ॥२॥ काहि आई हरि सों परति गया कहा कहौं
वृषभानजई ॥ सूरस्याम सों मातु कह्यो हैं आनहि ऐसी कहैं
भई ॥३॥ राग नट ॥ सखियन संग लें न हूं गई ॥ दूतिका मुख
निरखि राधा जांनि हृदै लई ॥१॥ अति चतुर वृषभान तनया
सहज बोलि लई ॥ सहज वचन प्रकास कीन्हें कहां रूसा
भई ॥२॥ तुरत नहीं यह कहि सुनायो स्यांम बोलत तोहि ॥ सूर
प्रभु वन बोलि पठई तोहि कारन मोहि ॥३॥ राग टोडी ॥ काहे
कों वन स्यांम बुलाई ॥ याही तें तुम धाई आई ॥ कहा कहौं तो
कोरी माई ॥ तुम हूं भली अरु भले कन्हाई ॥१॥ अव एक नई मि
ली हैं आई ॥ नाहिं कों अव लेहि बिलाई ॥२॥ ताके रास ही हरें दु
राई ॥ ताकों हांते टारि पठाई ॥३॥ सूरस्यांम आसे गुन राई उन
की महिमा कही न जाई ॥४॥ राग धनाश्री ॥ आजु कछु घर क
लह भयो री ॥ तउ आजु अनमनी वखानी यह कछु मांन कि
यो री ॥१॥ मोसों कछू कह्यो नहिं मैं हूं न सहज पठाई लैन ॥ कहो
पुकार परी हरि आगें चलौ न री खौं नैन ॥२॥ तेरो नाम लेत ह
रि आगें कहत सुनाउ सुनाउ ॥ सूर सुनहु कहां कों का कों गए
तें धों लियो छिड़ाय ॥३॥ राग सूहो बिलावल ॥ कुंजभवन हरि वै
ठे धांम ॥ काहू कें पायो हरख्यो सवनि कों काहे अपनो कियो कु
नाम ॥१॥ डारि हूं कहि लियो परायो मेरो कह्यो मांनि री वांम
तव ही तें उनि सोर लगायो तो कों बोली हैं एहि कांम ॥२॥ चलौ
तुरत जिनि झिरलगावहु अवहीं आय करो विश्रांम ॥ सूरस्यां
म तेरी घां झगरत तू का है तिन सों करें तांम ॥३॥ राग जैतश्री
यह कछु नोखी वात सुनावति ॥ का कों गायमें धोली नोहें खा
रखारवन मोहि बुलावति ॥१॥ मेरी घां हरि लरत कोन सों इती
मया मोहि कीनी ॥ जैसें हैं हरि तेरें माई मैं नीकी करि चीन्ही ॥२॥ कें
वैठो कें भवन जाहु कें मै उनपें नहि जाउं ॥ सूरदास प्रभु कोरी
सजनी जन मन लेहों नाउं ॥३॥ राग गोरी ॥ मैं कहत तोहि मनावन
आई ॥ प्रगट लियें सब को व्रज वैठी कहा करति अधिकाई ॥१
जाय करो कां चोध सवनि कों मोपर किन सतरानी ॥ स्यांम लर
तत वही ते नसों तिन पर अति हि रिसांनी ॥२॥ वारवार तू कहे

www.vallabhacharya-agrahara.org

कहति री व्रजका कों मेंली न्हों ॥ सूरदास सरधाम हू चरि सों ज्या
वनि हरि कें री न्हों ॥ ३ ॥ राग मारू ॥ तें कछु नहि काहू को लीनों
प्रगट कह्यो तव ही मांनोंगी ज्यावनि हरि मोहि री न्हों ॥ १ ॥ तब
व हिं ह्यों ऐसे हि ह्वां कोंहूं जब बैठे सग नेरी ॥ मेरे कहें बहुत री
सं आवति सं पति सब कों लेंरी ॥ २ ॥ एक एक करि तोहि दिखा
ऊं काहि आव बहुवन जाई ॥ कें री जे कें सब पुनि लीजें सूरस्यां
म पे आई ॥ ३ ॥ राग सूहो बिलावल ॥ जिनि जिनि जाय स्याम के
आगें तेरी चुगली बहुत करी ॥ बार बार तिन सों हरि खीझे ते
री घां छे में हूं लरी ॥ १ ॥ स्यांम भेद करि मोहि पठाई तू मो ही पर ख
री परी ॥ जाय करो रिस वैरिनि आगें जा के जा के गयहि हरी ॥
२ ॥ धरनि अकास बन हू कें आए देखत तिन कों अति हि डरी
सूरस्यांम बिन न्याव चुकें कों तिन पर तू अति ही दुहरी ॥ ३ ॥
राग धनाश्री ॥ ते जन पुकारे हूं पै जाइ ॥ जिनकों यह सब सों
ज राधिका तेरे तनु में लई छिडाइ ॥ १ ॥ इन्द्र वह हों पर न बिगो
यों अलक न अलि समुदाइ ॥ नैंन निमृग बचन नि पिक लूटे
बिलपत हरि हि सुनाइ ॥ २ ॥ कमल बिंब कीर केहू रि कपोत गज च
न कक करलि दुख पाइ ॥ बिद्रुम कुंद भुजंग संग मिलि सरनि गए
अकुलाइ ॥ ३ ॥ अति अनीति जिय जांनि सूर प्रभु पठई मोहि पि
साय ॥ बन बोली अजों पवे गि बलि अब उत्तर दें आय ॥ ४ ॥
राग कान्हरो ॥ मान करो तुम और सवाई ॥ कोटि करो एकें पुनि
हें हों तुम अपने मन मोहूं त माई ॥ १ ॥ मोहन सों सुनि नांम श्रव
न ह्यौं मगन भई सकुमारि ॥ मों सु गयो रिस गयो तुरत ही लजि
त भई मन भारि ॥ २ ॥ धाइ मिली दूति का कंठ सों धन्य धन्य क
हि वांनी ॥ सूरस्यांम वन धांम जांनि कें हरस न कों अतुरांनी ॥
३ ॥ राग बिलावल ॥ हसि कें कह्यो दूति का आगें स्यांमहि सुख
दें री तू जाय ॥ कपि अस्नान अभूषन अंग भारि में आवति तो
पाछें धाय ॥ १ ॥ यह सुनि हरख भई अति ही मन ही माई तहं स्य
हूं स्यांम ॥ अति व्याकुल तन की सुधि नाहीं बिह्वल कीनों
कांम ॥ २ ॥ कें बन में कें घर ही वैठे कें वासर कें जांम ॥ सूरस्यां
म रस नार लागी राधा राधा नांम ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ स्यां
म नारि के बिरह भरे ॥ कबहुक बैठ कुंज द्रुमनि तर कबहुं क
रहत खरे ॥ १ ॥ कबहु क तन की सुरति बिसारत कबहुं कत

www.vallabhacharya-agrahara.org

नसुधिआवत ॥ नवनागरिकेगुनहिंविचारततेईगुनगुनिगा
वत ॥ ४ ॥ कहुंमुकटकहुंमुरलिरहीगिरिकहुंकटिपीतपिछौंरी
सूरस्यामऐसोगतिभीतरआइदूतिकागोरी ॥ ३ ॥ राग बिलाव
ल ॥ स्यांमभुजामाहिंदूतिकाकहिंआतुरवांनी ॥ कांहेकोंकररा
तहोंमेंराधाआंनी ॥ १ ॥ बिरहदूरिकरिडारियेंसुखकरोंकन्हाई
त्रियांगोनश्रवणनिसुनोंचितएअकुलाई ॥ २ ॥ मिलेदूतकरि
अंकवरेंलोचनभरिआई ॥ प्यारीप्यारीबोलिकेंजुवतिहिउरला
ई ॥ ३ ॥ तबबोलीहसिदूतिकापियआवतनारी ॥ सूरस्यांमसु
निबोलबेहरषेबनचारी ॥ ४ ॥ राग गूजरी ॥ धीरधरोंप्यारीअ
बआवति ॥ मेंजुगईपरतिप्पाकरिकेंसोकहिबातजनावति
१ ॥ मनचिंताअबदूरिकरोंतुंकहोंनमोहिकहिदेहों ॥ बनिआव
तिवृखभाननंदिनीभुजभरिअंकमलेंहों ॥ २ ॥ एसुंदरताऔ
रनहींकहुंबडभागीसोपावें ॥ सूरस्यामदूतिकावचनसुनिक
रजगाकाममनावें ॥ ३ ॥ राग जैतश्री ॥ यहसुनिकेंमनस्यांमसि
हात ॥ पुलकतअंगरहतनहिंधीरजुनिरुनिपंथनिहेरत
जात ॥ १ ॥ कुंजभवनकुसुमनकीरचनाअपनेहाथनिबारत
पात ॥ जेंद्रुमलतालरचिकरलागेतेऊचेधरिपुलकितगात
२ ॥ प्यारीअंगआनिकांमतजानतसेजकलीचुनिडारत ॥ सू
रस्यांमरीझनमनहीमनसुधिकरिछबिहिनिहारत ॥ ३ ॥ राग
कल्यान ॥ दूतिचाहमतिहूएंचलितहेरें ॥ कबहुंकरआपनेरच
तसुभगानिसेजकबहुंमगनिरखिकेंहभयोफेरें ॥ १ ॥ कांमआ
तुरभरेकबहुंबेंठतखरेकबहुंआगेंजाइरहतठारे ॥ चतुरस
खिरिसिपुनिराधिकापेंगईफेरकौकरतधनकेंतवारे ॥ २
सुनतप्यारीहसीपियाकेमनवसीरूपगुनकरिजसीप्रेमरा
सी ॥ सूरप्रभुनामसुनिमरनतनुबलभयोंअंगप्रतिछबिउप
रमारस्यसी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ धनिवृखभांनसुताबडभागिनि
कहांनिहारतअंगअंगछबिधन्यस्यांमअनुरागिनि ॥ १ ॥ औ
रत्रियानखसिखसिंगारसजितेसहजनपूरें ॥ रतिरंभाउर्वसी
रमासेंतोहिंनिरखिमनझूरें ॥ २ ॥ एसवकंतसोहागिनिनाहीत
हेंकहिप्यारी ॥ सूरधन्यतेरीसुंदरतातोसीऔरननारी ॥ ३ ॥ राग
धनाश्री ॥ सहजरूपकीरासिनागरीभूखनंअधिकबिराजें ॥
सुखसोसमसंमिलितसुधानिधिकनककलतापरछाजें ॥ १

www.vallabhacharya-agrahara.org

वंदन बिंदु धार मिलि सोभित धमिल नील अगाध ॥ मनहु वा
लरवि रस भिरसंकित तिमिर कूट ह्वै आध ॥२॥ मानिकमय थापं
स बहु मोती पंगति न फलक सिंदूर ॥ रंग्यो तम तम मठ तामराग
न फूगत घेरयो सूर ॥३॥ कैं मनमथ रथ चक्र कित रविन वार बि
तसें साज ॥ श्रवण कूंपकी रह चय घेरिका राजन लसुभ गासमान
॥४॥ नासा नथ मुक्ता विंबाधर प्रतिबिंबित श्रम सूंच ॥ चिब्यो
कनक पाति सिषक सुंदर वकर कवीच गहि हूंच ॥५॥ कहलगि कि
हैं भूषन नि भूषित अंग अंग के रूप ॥ सू सकल सोभा श्रीप
तिके राजिव नैन अनूप ॥६॥ राग कान्हरो ॥ विराजत राधा रूप नि
धांन ॥ सुंदरता कौं पुंज प्रगट ह्वै कोपटतर त्रिय आंन ॥१॥ सेंदु
र सीस मांग मुकतावलि कच कवनी अविनान ॥ मनहु चंद्र सु
खकों पिहन्यों रिपु राहु विष मवलबांन ॥२॥ तरल तिलक
ताटंक पउराउ फलक कनक लविष कांन ॥ मांग ह्व सनि सि सहाइ
करिबेकौं रन विरचे हैं भांन ॥३॥ हीरा घसें नासिका वेसरि
अरून अधर छवि वांन ॥ खंजन सुक सोह विंव समित कोल
लित भए अजान ॥४॥ कोकिल हू मकंद रोजन की छवि कैं चन
मे फूल भांन ॥ श्रीफल मकरिह हरि कांन निसिख रहिवौं
विहरान ॥५॥ रोमावलि त्रिवली छवि छाजत नानु कीन्ही घरू
ठाम ॥ कसकटि मवलहु बंधन मनो विधि दीनो वंधाम ॥६॥
अंग अंग आभूषण की छवि कांपें होय बखांन ॥ सूरदास प्र
भु रसिक सिरोमनि विलसहु स्यांम सुजांन ॥७॥ राग नट ॥ रा
धेरषिते रो रूप ॥ पटइहां हरि संवि मनु रलमज्यो मनसिज
भूप ॥१॥ बाल राज श्रीखला नूपुर विन वरूथि नढाल ॥ किंकि
नी घंटा घोष मांझो भए भें वे हाल ॥२॥ कंचुकि भूरवनक वच
सजि प्रति कुच कसे रन वीर ॥ अंचल ध्वजा अविलो किना ही
धरत पिय मन धीर ॥३॥ भौंह चाप चढाय कीन्हें तिलक सरस
धान ॥ नैनकी तक देषि गिरधर तज्यो हे म [illegible] ॥४॥ चवर
चिकुर सुदेस घूंघट छत्र सोभित छांह ॥ ज्यो कहो तो हूं मिला
ऊं देंद्र पाल हि वांह ॥५॥ राधिका अति चतुर सुंदरि सुनि सु वच
न विलास ॥ सूर रुचि मन सा जनाई प्रगट सुरत मसूहास ॥६॥
राग कल्यान ॥ आजु अंजन दियो राधिका नैंकवे ॥ मृगा मीन
हीन जुगल जित खंजन डोल अधिक चंचल सरसत्यो मसुख

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू०सा० देंनकों ॥५॥ लसनिसिराउमरसनभौंहमनमथफंदसुलपलर
॥१६६ लटकिरहिरहतनाहिचैंनकों ॥ कसनिकंचुकिवंदउरमुकत
मालमुखनिरखिउडराजनजिगयोसुरअैंनकों ॥४॥ रुनित
नूपुरचरनछुद्रकरिघंटिकाकनकतनुगोरछविउमगि
उपरैंनिकों ॥ सूरसुनिश्रवणउठिनवलगिरिधरसेजच
लिहैंगजगतिमलपिमरनगढलेंनकों ॥६॥ राग टोडी ॥ रसि
कसिरमोरटोलिगावतगावतराधाराधानांम ॥ कुंजभ
वनवैठेमनमोहनअलिगोहनसोंहनवोलतमुखतेरोईगु
नग्रांम ॥१॥ श्रवणसुनतप्यारीपुलकितभईप्रफुलिततन
तुमनरोमरोमसुखरासिवांम ॥ सूरदासप्रभुगिरिवरधरकों
चलीमिलनगजराजगामिनीरुनकरुनकवनधांम ॥२॥
राग कल्यान ॥ नवलसुनिनवलपियनवकुंजहैंरी ॥ भावते
लालसोंभांवतीकलीभरि भांवतीभांवतोरसिकरसलेंरी
॥१॥ त्यागिअभिमांनगुनरूपसवभागरसिमानिनीमनुहारि
मेंनसुखदेंरी ॥ एकव्रजवासआवततरातरैंपियतआवनी
जांतिपतिपेंडकोंघेरी ॥२॥ ललितउदारहितपीरकरिकीर
मतिधीरनतुमेंटिमनमथकीभेंरी ॥ कलाचौसठिसंगी
तअंगाररसकोवकविसिरप्रगटभेरसेरी ॥३॥ सुरतसाग
रसाजश्रवणजसलाजअंगअनुकूलरतिराजरनकें
री ॥ कांमसरकठिनकुचप्रगटभंगीविमूरतिमेलेंकेल
आपनोंकेरी ॥४॥ जासुआलापसुनिदंपतीसेपल्लवेंपुहुपम
धुधारफरभारभरमेंरी ॥ मुरलिकागाननुअनाममधुरा
धुनीसुधागुनसिंधुनहिगनतनिनुमेंरी ॥५॥ हीनजलमी
नज्यौंदासविनुकलमलेंप्रांनप्रीतमनहीधीरजुधरेंरी
पूतिकीरीतिगतिहोतिहेंरीहरषिनिरषिरतिकाटिविवु
कअसनिदेरी ॥६॥ तुमेंकामकेलिकवनीअंकपमिनिहंर
चंदवकोरज्यातकस्वांतिनैंरी ॥ सूरसुनिश्रवणतजिभव
नकरिगावनमनखननतुतवहिकलहंसगतिगोरी
॥ राग कान्हरो ॥ मनोंगिरिवरतेंआवतिगंगा ॥ राजतअति
रवनीकराधिकाएहविधिअधिकअनूपमअंगा ॥१॥ गो
रगातदुतिविमलवारिविधिकटितटत्रिवलीतरलतरं
गा ॥ रोमराजिमनोंजमुनामिलीअधभवरापरनमांनोंभुव

www.vallabhacharya-agrahara.org

अंगा ॥ २ ॥ मनिगनभूषनरुचिरनीरवरमध्यधारमोतिनमेंमं
गा ॥ सूरदासमनोंचलीसुरसुरीश्रीगुपालसागरसुसंगा ॥ ३ ॥
रा ॥ गसूहो ॥ नाहिंननैंनलगेनिसिएहीउर ॥ जबतेंजायकह्योंह
सिहंसिसोंसमरसोचउनकेजियधरधर ॥ १ ॥ भोंहकमानतिल
कभलुकाकरिरचिसुदेसश्रीमंतसुरंगसर ॥ वलयताटंकच
क्रनखनेजादामिनसेचमकतरसप्रसिवर ॥ २ ॥ गजउरोजव
रवाजिकिलोचनवंकरविसरविसालमनोहर ॥ लालढाल
अंचलचंचलगतिचवरचिकुरराजततापर ॥ ३ ॥ अंगअं
गसजिसुभटसहायकबनेविविधिभूषनवानेवर ॥ कामि
निआजुहिआंनिरहेंगीकामकटककलेंकुंजनडांनर ॥ ४ ॥ रच
नरुनितनूपुरनतरेंसुनतश्रवणकांपहिंगेथरथर ॥ त
वजोनीवीकिसोरजोरहुपिरहेंनीतिकपिरलेनसवेंफर ॥ ५ ॥
अंचकहेंजोकरोंकिसोपीवेजुभीतरहेंरहेंवीठिघर ॥ रहेंम
नोंमुखजोरहे नहींकरहुपारलेंपकरिपियाहिकर ॥ ६ ॥ सह
चरिचतुरतुरतलेंआईवाहुवोलदेहूंकिकयनवछर ॥ रोमव
सुरतरनमिलीअंकभरिलेंलवकीदेंदंतपियाधर ॥ ७ ॥ जुर
नसुरतसंग्रामभयोंछविछुटिछुटिकुचटदिहारलर ॥ अ
तिसनेहहहुविसरिदेंभरिमेंनमअमुरझायगिरेधर ॥ ८ ॥
विविधिविलासविलासकोसवसराधानगरीनंदनंदनव
र ॥ निगमनितिनेतिकह्योंनिर्गुनसोंकहेंगुनाधिवरानिहेंसुर
नर ॥ ९ ॥ रागगौडी ॥ फूलनिकोंमहलफूलनिकीसज्याफूले
कुंजविहारीफूलीराधाप्यारी ॥ फूलेवेदंपतिनवलमगनफू
लेफूलेकरेंकेलिन्यारी ॥ १ ॥ फूलीलतावेलिविविधिसुमन
गनफूलेआननदोउहेंसुखकारी ॥ सूरदासप्रभुप्यारीपर
वारतफूलेफूलचंपकवेलिनिवारी ॥ २ ॥ रागधनाश्री ॥ आ
जुरंगफूलेकुवरकन्हाई ॥ कवहुंकअधरदसनभरिखंडि
तचाखनसुधामिठाई ॥ १ ॥ कवहुंककुचकर[illegible]ठिन
आनितहांवदनपरसांवत ॥ मुखनिरखनसकुचातिसुकुमा
रीमनहीमनअतिभावत ॥ २ ॥ तवप्यारीकरसांहिसुखदार
तिनेंकलाजनहिआवत ॥ सूरदासप्रभुकोंमनिरोमनिको
ककलारिखआवत ॥ ३ ॥ रागकेदारों ॥ पियभावतीराधानागरि
उलटिचुंबनदेनिरासिकिनिसकुचरीनोंडाटि ॥ १ ॥ परस्परो

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ उभरेश्रमजलपूंकफूंकनुरात॥ मनोंबुझीअंगनंगज्वाला॥
॥२०॥ प्रगटकरतलजात॥२॥ बहुरिउठेसभारिमटक्योंअंगअनं
गसभारि॥ सूरप्रभुवनधामविहरतबनेदोउवरनारि॥३॥
रागरामकली॥ विहरतदोउममएकेंकरें॥ एकभावएकभ
एलपटिकेंउरउरजोरिधरें॥ मनोंसुभटरनएकसंगजुरि
सखिरनहींडरें॥ अधरदसनछतननखछतउरपरधाय
नकरहिपरें॥२॥ यहसुखयहउपमापरतरखकोरतिसंग्राम
लरें॥ सूरसखीनिरखतअंतरभईरतिपतिकाजसरें॥३॥
रागकल्यान॥ सकुचिमनपरस्परवसनलीनें॥ प्यारीपियनि
पुनअतिकोकगनकलामेंउनिधनहिउनिकंतअवला॥
कीनें॥ लेस्कननंडमंडलनिनासानितटपियनिरखिपी
तपटुपौछिडास्यौं॥ निरखिप्यारीपौछिएसेंहीपियवदन
कछुसकुचिकछुहरखिकेंनिहास्यौं॥२॥ नागरीडरनिपिय
ग्रीवपटउरधरेंबहुरिजिनिआपनोंकहूंदेखें॥ सूरप्रभु
स्वामिनीअंगछविरामिनीरूलकुगतिबिंबपरमानभे
खें॥३॥ रागरामकली॥ संगराजतिबृखभांनकुमारी॥ कुंजस
दनकुसममनिसेज्यापरदंपतिसोभाभारी॥१॥ आलसभरेम
गनरसदोउअंगअंगप्रतिजोहत॥ मनहुगौरस्यांमलरासि
नउनमवेंठमनमथसूरवसोहत॥२॥ कुंजभवनराधामनमों
हनचहूंपासवृजनारि॥ सूररहीलोचनएकटकदेडारतितिन
नुमनुवारि॥३॥ रागनट॥ एकटकरहीनारिनिहारि॥ कुंजघर
श्रीस्यांमस्यांमावेंठेकरतविहारि॥१॥ नेंनसेंनकटाछसोंमि
लिकरतरंगविलास॥ नहींसोभापारपावतिवचनसुखमु
खहास॥२॥ तरुनिश्रीवृखभांनतनयातरुननंदकुमार॥
सूरसोक्योंवरनिगावेंरूपरससुखसार॥३॥ रागधनाश्री॥
चितेंरतिराधानागरओर॥ नेंनवदनछविसोंउपजतमनों
ससिअरुरागचकोर॥१॥ सारसरसअंबुवनकोंमानोंत्रि
षितमधुपजुगजोर॥ पानकरनकहुंत्रिषितनमानतपल
कनिदेतअकोर॥२॥ लियेंमनोरथमांनिपरस्परजांनिगई
भयोभोर॥ सूरस्यांमस्यामाआपुसमेंकरतयहतचितचोर॥
३॥ रागरामकली॥ देखिसखीपंचकमलद्वेंसिंभु॥ एककमल
वृजऊपरराजतनिरखतनेंनअचंभु॥१॥ एककमलप्यारी

करलीनेंकमलसुकोमलअंग॥जुगलकमलसुनकम
लविराजतप्रीतिनकवहुंभंग॥२॥खरसुकमलमुखसन
मुखचितवतवहुविधिरंगतरंग॥तिनमेंतीनिसोमवंसीव
सतीनिसुकपिसिसुअंग॥३॥जेईकमलसनकादिदुर्लभ
जिनहीनिकसीगंगा॥तेईकमलसूरनितचिंततनिपटनि
रंतरसंग॥४॥रागनट॥देखिसखिचारुचंद्रएकजोर॥निरख
तिवैठिनितंवनिपियसंगसारसुताकीओर॥१॥देंससिस्याम
नवलघनसुंदरदेंकीन्हेविधिगोर॥तिनकेमध्यचारिसुक
राजतदेंफलआछेवकोर॥२॥ससिससिसंगप्रवालकुंदक
लिअरुफिरह्योंमनमोर॥सूरदासप्रभुआनिरतिनागरवलि
वलिजुगलकिशोर॥३॥रागनट॥देखिरीप्रगटद्वादससमीन
षटइंदुद्वादसअतरनिसोभितविमलउडगनतीन॥१॥षटअ
मृअंवुजकीरखटमुखकोकिलासुरएक॥दसदोइविद्रुमा
दामिनीषटतनिव्यालविशेष॥२॥त्रिवलिषटश्रीफलवि
राजतपरस्परवरनारि॥ब्रजकुंवरिगिरिधरकुंवरपरसूरज
नवलिहार॥४॥रागनट॥दंपतिकुंजद्वारठाढे॥सिथिलअंगगम
रागजेअंवरआनिहीरूपभरे॥सुरतहीसवरैनिवीतीको
कपूरनसंग॥जलदस्यामिनिसंगमोहनभरेआलसअंग॥२
वकृतदेखिव्रजनारिनिरखतमनोंचंदुचकोर॥सूरप्रभुहषभा
नतनयाविलासितपतिजोर॥३॥रागललित॥भोरहीस्यामा
स्यामखरे॥जलदनवीनमिलीमनोंदामिनिवरषिनिसांनफरे॥१॥
सिथिलवसनतननीलपीतदुतिआलसजुतपहिरे॥श्रमजलवूं
दकहुंकहुंउडगनवदनिचरननिकरे॥२॥भूखनविविधिभांति
मिडवारीरतिरसउमगिभरे॥प्रेमप्रवाहचलीमनोंसरितातूटेपा
लगारे॥३॥काजरअधरतमोरनैंनरंगअंगअंगपीलपरे॥सोभा
अमितविलोकिसूरप्रभुकोंसुरतज्ञाततरे॥४॥रागविलावल॥
जोसुखस्यामप्रियासंगकीनों॥सोव्रजवतिनअपनोंकरिली
नों॥दुविधाहरेकछुनहिराख्यों॥प्रतिआनंदवचनमुखभाख्यों
रहेंकहूतिनवतेअवनीके॥सकुचिहसीनागरिसंगपीके॥३
नैंनकोरपियहरेंनिहारयों॥उनिपहलेंहिपीतंवरधारयों॥४॥सू
रदासयहलीलागावें॥हरिपरसरनअछेंफलपावें॥५॥रागन
ट॥धनिव्रजसुंदरीधनिस्यांम॥धन्यधनिवृखभांनतनयारा

॥ सू॰सा ॥ धिकाजेहिं नांम ॥ १ ॥ ऐहूं ग्रेह निगाई तरुनी स्यांम एक नंद धांम ॥
॥ १२२ ॥ वन गाई वृषभांन तनया कोक कला सुजांन ॥ २ ॥ करत मन को
मना पूरन एक निमिस वांम ॥ सूरप्रभु जा सदन जात न षोइ
कर तनु तांम ॥ ३ ॥ प्रथ खंडिता ॥ राग विलावल ॥ नाना रंग उपजा
वत स्यांम ॥ कोउ अंग फत कोउ रवी जत वांम ॥ १ ॥ काहू के निसि वसत
वनाए ॥ काहू सुख हि के आवत जाए ॥ २ ॥ वहु नायक कहें विलसत आ
प ॥ ताको सिव पावे नहि जाप ॥ ३ ॥ ताको व्रज नारी पति जांनें ॥ को
उ आदर कोउ अपमानें ॥ ४ ॥ काहू सों कहि आवत सांझ ॥ रहत और
नागरि घर मांम ॥ ५ ॥ कवहूं रैनि सव संग विहात ॥ सुनहु सूर ऐसे
नंद तात ॥ ६ ॥ राग विलावल ॥ अव जुवतिन सों प्रगटे स्यांम ॥ आप
पर सस व हिन यह जानी हरि लुवधे सवहिन के धांम ॥ १ ॥ नारि
न जाके भवनन भावत सो मन में यह करति विचार ॥ आजु गए
ओरहि काहू के रिस पावति कहि वडे लवार ॥ २ ॥ यह लीला हरि
के मन भावति खंडित वचन कहत सुख होत ॥ सांझ वोल दें नात
सूरप्रभु ताके आवत होत उदोत ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ छटे नंद रूप
सु गम छुन ॥ वोलि लीने देखि ललिता सेन दें ततकाल ॥ १ ॥ हसत
गए हरि ऐसे ग्रेह ताके कोउ न जानत ओर ॥ मिली ह्रदे कों लाय उर
भरि वांपि कठिन कठोर ॥ कह्यो मेरो धाम कवहूं कयों न आव
त स्यांम ॥ सूरप्रभु कहि आजु नागरि आइ हें हम जांम ॥ ३ ॥ राग वि
लावल ॥ ललिता को मुख देखें यह स्यांम ॥ आजु वसे गोरें निजु सारें
प्रांन पियारी के सुम वांम ॥ १ ॥ यह कहि कें मन नहि पग धारे वहुना
यक के भेद अपार ॥ सांझ समें आवन कहि आए सो हें वहुत तके रि
नंदकुमार ॥ २ ॥ वह वेंठी मारग हरि जोवत एक एक पल वीतत
जांम ॥ सूर स्यांम आवन की आसा सेज सवारति व्याकुल कांम ॥
३ ॥ राग गोरी ॥ सांझ हि तें हरि पंथ निहारें ॥ ललिता रुचि करि धाम
आपने सुमन सुगंधिनि सेज सवारें ॥ १ ॥ कवहुं कहति वारनें ठा
ढी कवहुं कगनन निगमान के तारे ॥ कवहुंक आइ गली मग जो
वति अजहु न आए स्यांम पियारे ॥ २ ॥ वे वहु नायक अवन स्यों
भावें ओर वांम के धांम सिधारे ॥ सूर स्यांम विनु विलपति वा
ला तमचुर सह तहं सवद पुकारे ॥ ३ ॥ राग भेंरों ॥ ललिता तमचुर
टेर सुनें ॥ वे वहु नायक अनत लुभाने नहि आए जियकहं गुन
नें ॥ १ ॥ किन कारन रें आस गए पिय वार वार त्रिय सीस धुनें ॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

सेजनसँवारि पंषनि सिजोवत अरुन आनि भयौं चंद पुरयौं ॥ २ ॥ नव
बैठी मनमारि आपनौं कछु रिस कछु मन मोच पर्यौ ॥ सूरस्याम
पानें नहिं आए मात पिता कौ त्रास धर्यौ ॥ ३ ॥ राग नेत श्री ॥ सोवप
र्यौं नागरि मन माहीं ॥ कें काहू कें अनत लुभाने कें पित मात त्रास
मन मांहीं ॥ १ ॥ वेनि सिवसे मह्लसी लाके सुरव सवरें निगवाई
पुहुप अकुलाय भोर भयौं जांन्यों तब नागरि सुधि आई ॥ २ ॥ सहज
चले गोपी सों कहियें जियस कुचत अतिभारी ॥ सूरस्यांम ललि
ता गृह आए चितें रही मुख प्यारी ॥ ३ ॥ राग ललित ॥ प्यारी चितें रही
मुख पिय को ॥ अंजन अधर कपोलनि वंदन लाग्यौं काहू त्रिय
कौं ॥ १ ॥ तुरत उठी दर्पन कर लीनूं देखौं वदन सुधारो ॥ अपनोंसु
खु छिप्रान देखि कें तब तुम कहूं सिधारौं ॥ २ ॥ काजर वंदन वे अ
धर कपोलनि सकुचे देषि कन्हाई ॥ सूरस्यांम नागरि मुख जोव
ति वचन कहे नहिं जाई ॥ ३ ॥ अथ पसीताके मह्लग ललिताकों आए
रागआसावरी ॥ दर्पन लें प्यारी मुख आगें कहति पिया छवि दे
षौ जू ॥ मेरी सों ह्यां ह्यां कहि पुनि पुनि उपकारे मुख फेरौ जू ॥ १ ॥ सकु
चत कहां बोलके सांचे मेरे गृह तें आए जू ॥ रैनि नहीं तो अबतु
कृपा भई धनि जिन स्यांम कहा जू ॥ २ ॥ मेरी कहीं विलग जिनि
मानों में तुम करति बराई जू ॥ सूरस्यांम सन्मुख नहिं चितवत
रहे धरनि सिर नाई जू ॥ ३ ॥ राग ललित ॥ कौं मोहन दर्पन ना हि दे
खौं ॥ कबौ धरनी में नख नी करौं तब कबौं हम तन नहिं तेखौं
॥ १ ॥ कैसो नाटक नव यौं नाही कहां परी हम चूक ॥ पीतांबर कर
गह्यौ वें छिय रहे हूकाकें मूकें ॥ २ ॥ उघरि गयौं उरतें उपरनानख
छत बिन गुन माल ॥ सूर देखि लटपटी पाग पर जावक की छ
वि लाल ॥ ३ ॥ राग ईमन ॥ ऐसी कहां रंगीले लाल ॥ जावक सों क
हुं पंभार गाई रगरे जिनी मिली को बाल ॥ १ ॥ वंदन रंग कपोल
निर्दीन्हें अधर अरुन भये स्यांम रसाल ॥ जिनि तुम सरी मन ईछा
पुरई धनि धनि पिय धनि धनि वह बाल ॥ २ ॥ माला कहां मिली
बिन गुन की उरछ न देखि भई बेहाल ॥ सूरस्यांम छवि सबें वि
राजी रहे देषि जंजाल ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ आवन ही पिय आव
ई कैसो कहां ठगाने ॥ मैं तब ही की वकनि हौं कछु आनु भुलाने
॥ १ ॥ हैं नाहीं तन कहु तन्ह मेरी सौं काहे ॥ आए कैसौं नकृत भए सो
कौं सिसहा हे ॥ २ ॥ कहां रहे कां मोंबन्यों तहाई पगु धारो ॥ सूरस्यां

॥सू॰सा॰ मगुनराखेरेहिंहेंनविचारों॥३॥राग बिलावल॥ काहेकोंकहिग
॥१७२ एआयहेंकाहेंजूठीसोंहेंखाए॥ ऐसेमेंजानेनहि तुमकोंजेगुन
करि तुमप्रगटदिषाए॥१॥ भलीकरीहरमनयहूदीनोंजंनमज
नमकेतापनसाए॥ तबचितएहरिनेंकछियनतेंसवअप्रा
धछिमाए॥२॥ सूरदाससुंदरीसयांनीहसिलीनेंपियअंकम
लाए॥२॥राग बिलावल॥ नेंनकोपहरिहरिकें प्यारीवसकीनी
भावकह्योंआधीनकोंललितालाखिलीनी॥१॥ तुरतगयोंरि
सदूरिकें हसिकंठलगाए॥ भलीकरीमनभावतेंवेसेंहमेंपाए
॥२॥ भवनगईगहिबांहलेंनिसिजागेजानें॥ अंगसिथिलनिधि
श्रमभयोंमनहीमनभांनें॥३॥ अंगसुगंधमरदनकियोंतुरतहि
अन्हवाए॥ अपनेकरअंगपोंछिकें मनसाधपुराए॥४॥ चीरअ
भूषनअंगरेंवैठेंगिरिधारी॥ रुचिभोजनपियकोंदियोंसूरज
बलिहारी॥५॥राग कल्यान॥ कियोंमनकोंमनहरिहवाकी॥ प्रि
यारिसदूरिकें रियोंरसपूरिकेंनंगवलहरिकें गोपजाकी॥१॥
नंदसुतलाडिलेप्रेमकेचांडिलेमोहकेहूतहैंनाषिआगें॥ तु
मपरप्रभावरीप्रानहूतेंखरीसुननहीलहतमेंतुमहिलागें
॥२॥ सुनहुधनितुमहितनतुमहिमनहीबसोंऔरतियनहीमो
मनहिभावें॥ सूरप्रभुचतुरवरचतुरिनागरिनकेचतुरईवच
नकहिमनचुरावें॥३॥राग भैरो॥ रहेंभावसवजुवतिनसों॥ ऐसे
ईवचनकहतसवआगेंभूलिरहेंतमनमोंहनसों॥१॥ विनदेखें
रिसभावबढावें मिलतआईहेंमोंहनिसों॥ मुखदेखततुदुखर
हतनहीतनचितवनमुरिरहेउभोंहनसों॥२॥ औरत्रियाअंगवी
न्हाविराजनतरिसमनहीमनछोहनसों॥ सूरस्यांमसवगोपकुमा
रीटरतिनहींकहुमोंहनसों॥३॥राग बिलावल॥ ललिताकोंसुख
देंचले अपनेनिजुधांम॥ बीचमिलीचंद्रावलीउनिदेषेस्यांम॥१॥
मोरमुकटकछनीकछेंनटवरगोपाल॥ रहीचरननतुहेंपेंकें
प्रतिहितब्रजवाल॥२॥ गालीसांकरीकोउनहीआतुरमिलिधा
ई॥ कहांवहांपियरहतहोंहमकोंविसराई॥३॥ स्यांमकह्योंहसि
बांमसोंतुमरेंनिसिवास॥ सूरहृदेकीकलपनासुनिभईहुलास
॥४॥राग आसावरी॥ स्यांमबांमकोंसुखदेंबोलेरेंनितुमसेंआऊंगे
मातपिताजियत्रासधरतहोंतऊआइसुखपाऊंगो॥१॥ तुमसि
लिवेकीसाधभुजाभरिउरसोंकुचपरसाऊंगो॥ नेंनविसालभा

लिउरवैठ तुव हाथ कठाऊंगो ॥ २ ॥ तुव तन नख सिख कौं मृदरख मेरो
जीवन सुफल करा ऊंगो ॥ सुनहु सूर अधरनि रस अंचउ दहुंम
नत्रृषा बुझाऊंगो ॥ ३ ॥ राग गूजरी ॥ सुनि सुनि वचन नारि मुसिकां
नी ॥ गई सटन प्रतिहि उनाइली अंनंद मसहित लजांनी ॥ १ ॥ फूली
फिरति कहति नहि काहू मीन मिल्यों जनु पांनी ॥ वारवार स्यांम
रति रस की कही प्रगास्व करि वांनी ॥ २ ॥ वासर कलप समान निवी
तत कैसे हू रैंनि तुलानी ॥ सूरदेखि गति गत पतंग की अवधि
जांनि हरखांनी ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ राधिका ग्रेह हरि देह वासी ॥ औ
र त्रियनि घर घर प्रकासी ॥ १ ॥ ब्रह्म पूरन द्वितिय नहीं कोउ ॥ रा
धिका सबै हरि सबै वोउ ॥ २ ॥ दीप सों दीप जैसे उज्यारी ॥ तैसेही ब्र
ह्म घर घर विहारी ॥ ३ ॥ खंडिता वचन हित यह उपाई ॥ कबहु कहुं
जात कहुं नहि कन्हाई ॥ ४ ॥ जनम कौ सुफल हरि यहै पावैं ॥ नारि
रस वचन श्रवणनि सुनावैं ॥ ५ ॥ सूर प्रभु अन तहूं गावन कीन्हें ॥
तहां नहि गए जहां वचन दीनों ॥ ६ ॥ राग टोडी ॥ स्यांम गए सुख
मां के धांम ॥ देखत हरख भई मन वांमा ॥ आतुर मंदिर गए समा
ई ॥ प्यारी प्रेम उठी अकुराई ॥ २ ॥ स्यांम कामिनी परम उदारा ॥ कोक क
ला रस करत विचारा ॥ ३ ॥ वोलत पिय नहि आवत पासा ॥ गए रा
ह वांनी करहति उदासा ॥ ४ ॥ थाइ जाय पति अंक मलाई ॥ हाहा क
हि कहि लेति वलाई ॥ ५ ॥ अति आतुर पति के गति कामा ॥ कहां प्र
कृति पाई यह वांमा ॥ ६ ॥ वांह गहत कीनों धन मांना ॥ तब हरि
कीनों एक समांना ॥ ७ ॥ तब प्यारी चरननि सिर धारी ॥ कांम व्यथा
जांन्यो सुकुमारी ॥ ८ ॥ अलप हसी मुख हेरि लजांनी ॥ सूरज प्रभु
तिय मन की जांनी ॥ ९ ॥ राग गौड मलार ॥ यह कहि प्यारी भवन गा
ई ॥ रीझि स्यांम देखि वा छवि परी सम सुख सुंदराई ॥ १ ॥ द्वार कपाट
दियों गाढे करि कर आपने वनाई ॥ नैंकन ही कहुं संधि बचाई
पो ढि रही तब जाई ॥ २ ॥ एहि अंतर स्यांम कर भामिनी सुख सभा
ह्यौं ॥ वसन तन दूरि करि सब लभुज अंक भरि कांम रिस बांम
पर निसरि धाह्यौ ॥ ३ ॥ अधर रस ननि भरे वकि न कुच उरलरे
परे सुख सेज मन एक रोऊ ॥ मनो कुमिला यरहै मैंन से मल्ल दो
ऊ कौ कपरवीन घटि नहीं कोऊ ॥ ४ ॥ अंग गवि हवलभए नैंन नैं
ननि गए लजित रति अंत त्रिय कंत भारी ॥ सूर धनि धन्य सुख
मान रिव स स्यांम जांम जुग भए पति तैंन प्यारी ॥ ५ ॥ राग विलाव

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा.॥ रो॥ चंद्रावली स्यांम मग जोवति। कबहूं नैंन अलसांत जांनि कें
॥१२३॥ जल लैं पुनि धोवति॥१॥ कबहूं सेज कपि फारि सभारति कबहूं मल
यज भोवति। कबहुं भवन कबहूं आंगन कें ऐसें रैंनि विगोवति
२॥ कबहूं कबिरह जरति अति व्याकुल आकुलता मन मो आति
सूर स्यांम बहुरि वनि पिय पहं कहित बगु नतो आति॥३॥ राग ल
लित॥ ऐसें हि ऐसें रैंनि बिहानी। चंद्रमली न चिरैया बोली सुनी
कांग की बांनी॥१॥ लैंलु बधे अन नहि काहू कें मांन की आस भु
लानी। कपटी कुटिल कहा कहि जांनें स्यांम नाम जिय आंनी॥
कोकिल स्यांम स्यांम अलि रे खीं स्यांम रंग है पांनी। स्यांम न लर
अहि स्यांम कहां वन सूर स्यांम सों बांनी॥३॥ राग गौड मलार॥ बांम
संग स्याम निय जांम जागे। कोक विधों निपुन सकल गुन में सगु
न सुरत संग्राम जुरि नहीं भागे॥१॥ अंग आलस भरे नैंन निसु
टरे नैंन कम्नि पापरे निसा बीती॥ सूर प्रभु नंद सुत चले अकुलाइ
कें गाये नाथ धांम रस कांम जीती॥२॥ राग बिभास॥ चंद्रावलि धांम
स्यांम भोर भये आए जू॥ इतनि सकपि पू बाम रैंनि जागि चारि
जाम देखें नो ठाम कें भूलावे सुरत आए जू॥१॥ मंदिरतें रहि निहा
रि मन नहीं मन रेति गाहि ऐसें कपरी क ठोर आए निसि बीतें
रिस नहीं सकी सभारि लें बैठी चारि द्वार ठाडें गिरिधारि निरखि
छबि नख सिख हीतें॥२॥ बिनगुन बनि हृदय माल ताविचनख
छत रसाल लोचन रा उर रसि लाल जैसी रूविवादी। जावक
रंग लग्यों भाल बेंदन पर भुज बिसाल पीक पलक अधर सु
लक बाम प्रति गाढी॥३॥ पधरो आए कोंन काज नाना करि अ
गसान उलरे भूखन सिंगार निरखत हों जानें॥ ताहि के ना
हु स्यांम जाके निसि बसे धांम मेरे गह कहां कांम सूरदास गा
नें॥४॥ अथ प्रमुख मांईं गृह तें चंद्रावली के आए॥ राग बिलावल
तहां ई जाउ जहां रैंनि बिवसे। काहे कों रह न हों आए अंग अं
देख ति चिन्ह जैसें॥१॥ अरगज अंग मरगजी माला वसन सु
गंध भरे से हें॥ काजर अधर कपोलनि बेंदन लोचन अरु
नटरे से हें॥२॥ पलकनि पीक मुकर लें देखों ए कों नहीं अने
से हें॥ सूरदास प्रभु पीछि बिलय गढ नागरी अंग भरे से हें॥३॥
राग बिलावल॥ तहईं जाहु जहं रैंनि हुते॥ काहे कों दुरावक
रत मन मोहन मिरे चिन्ह नहि अंग जुते॥१॥ बिन ही गुन उर

www.vallabhacharya-agrahara.org

हरिविराजत परम चतुर हरि ऐंठे लायस ते ॥ विथुरि अलक अ
र पट भूखन कोंम कुटिल कुच विच जुगते ॥२॥ सुरतनुरागरं
गे अति राजत भामिनि भवन भले भुगते ॥ सूर सुरेस अधर
मधु पीके लोचन अलस तुनी रहुते ॥३॥ राग बिलावल ॥ पीतांब
र काहे कहां भयो ॥ लीलांवर ओढेहो आए अति हठ हूं नयो
॥१॥ तैसोई अंग बसन रंग तैसोई कहां कहे यह सोभा ॥ तें मिय ब
नी मरगजी के सरि ता त्रिय के मन लोभा ॥२॥ एते पर क्यौं बोल
त नांही कहां खोइ से आए ॥ सूर स्याम यह अब में जानी नाग
रि चितै चुराए ॥४॥ राग भैरो ॥ जानत हो जैसे गुन निभरे हो ॥ काहे
दुराव करत मन मोहन खोई पेंक हों तुम जहां रहे हो ॥१॥ निसि
जागत निज भवन न भावत अलस वश अंग धरे हो ॥ वंदन ति
लक मिल्यो कहु वं[illegible] कोंम कुटिल कुच उर उघरे हो ॥२॥ तुम
अति कुमल किसोर नंद सुत कहूं कोन के विस हरे हो ॥ औव
कही जिय जांनि सूर प्रभु सो हकरन वोलन खरे हो ॥४॥ राग
बिलावल ॥ तहई जाहु जहां निसा वसे हो ॥ जानत हो पिय चतु
र सिरोमनि नागरि जागर राग रसे हो ॥१॥ रूम न तहां मनो पिय
उरगिनी नव विलास श्रम सेज रस में हो ॥ लट पटि पाग महाव
रि के रंग मानि नि पगा पसी सघ में हो ॥२॥ विगलित वसन
मरगजी माला मि[illegible] के चिन्ह लसे हो ॥ सूरदास प्रभु अ
जा वचन सुनि नागरि गिरिधर ने कहत हो ॥४॥ राग बिलावल
तहई जाहु जहं रैनि गावाई ॥ काहे को मुह परसन आए जान
ति हें चतुराई ॥१॥ वाके गुन मन ते नहि टारत बोलत नाही बे
न ॥ याछवि परमे तन मन वारों पीको विरा जित नेंन ॥२॥ भ
ली करी यह दरस दिखायो ताते नैंन सिराने ॥ सूर स्याम नि
सि सुख कंलू ट्यो महकों मया विहाने ॥३॥ राग भैरो ॥ हाहा
हों पिय बात कहों ॥ आप कहू [illegible]य तरक गहत हो तो तुम
मो सों मोन गहे हो ॥१॥ कहां चूक हम कों पिय लागे रूसि रहे
हो काहे जू ॥ नवह ते वैसे हि हो ठारे मोतन कों न हिजाहे जू
॥२॥ अव हम कों अपराध छिमा गे कृपा करो मुख वोलो जू
सूर स्याम आवत जो निठुराई गुढी हरे की खोले जू ॥३॥ राग बि
लावल ॥ रूसे हो पिय रूसे हो ॥ उत्तर कों उमरन हौ दैत देख
हि ता हि न कछु सेहो ॥१॥ चहु चितवनि न हे नयन नयननि की व

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. चननिहुउनहूसेहों ॥ वहमुखकमलविकासनहीं रतिसाथ
॥२७५ कसेमिरविंदुसेहों ॥ २ ॥ वेंछुटिगईसंपराकरतेंकें ठगठगोक
छुसेहों ॥ मेरेहुजोंनसूरप्रभुसांचेहुमदनचोरमिलिसांचेहों
३ ॥ राग बिलावल ॥ मदनचोरसोंजिंनिमुसायो ॥ अपनीलाली
खोइसीकर्षीलालीपलकनिपायो ॥ १ ॥ घातेगएचतुरईली
नेंसोसवबुनहिछिपायो ॥ आलसअवलजस्वानअंगयोंअ
उतगातदरसायो ॥ २ ॥ कंचनखोइकांचलेंआएविरनोंभलो
फलपायो ॥ सूरकहूंघरपरमिननांही जैसेंहालकरायो ॥ ३ ॥ राग
काफी ॥ लालतुनीरेलेम्हुनाआलसभरिआए अफफिकांम
कीवेलिसोंकोनेंविरमाए ॥ १ ॥ सिथिलपेचसिरपागकेजाव
करंगभीने ॥ पाइपेसअवचसकरेनवरसचसरीने ॥ २ ॥ लाली
मेरेलालकीसबतनुढोले ॥ लालीलेंलालन्नाएआएसु
खपीले ॥ ३ ॥ बिनगुनमालहियेंलसेंपियप्रीतिनिसानी सखि
रसालहूमकोंरईतुमरेहुविरानी ॥ ४ ॥ पाइपरगमगइनकोंधरों
उतकोंउगधाए ॥ अभिअंतरअंतरहुसंपियमोमनभाए ॥ ५ ॥
उलटिनहूंपगुधारियेंजासोंमनुमान्यो ॥ छपरवंजनजिवे
लिसोंलटिप्रेमनजान्यो ॥ ६ ॥ बहहंसिबोलेस्यामजू तुमनेंको
धारी ॥ तुमबिनुकलमोकोंनहीं अतिहीसुखकारी ॥ ७ ॥ बचन
चतुरईछांडिदेंहुकटीपाटिआए ॥ सूरस्यामगुनरासिहोंनी
केंप्रगटाए ॥ ८ ॥ राग सुघराई ॥ आएलालजामिनीजागेनेभोर
नीलकलेवरकोमलउरपरगडिगएकुचजुकठोर ॥ १ ॥ निसि
बतिरहेमानिनीकेंगृहप्रांउठिआएभोर ॥ सूरदासप्रभुक्व
नवनायतअवचोरतमनमोर ॥ २ ॥ राग सुघराई ॥ आएलाल
ललितभेरविकिए ॥ पीककपोलअधरपरकाजरजावकभा
लदिए ॥ १ ॥ चंदनखोरिमिटीअबआएकुमकुमसांहिए ॥ पी
तांबरकहूडारिकोनकोंनीलांबरहिलिए ॥ २ ॥ लालीदेंपिय
रीलेंआएदेखतपुलकितजिये ॥ सूरदासप्रभुनवलरसीलेबो
ऊनवलत्रियें ॥ ३ ॥ राग ललित ॥ मेंजांनीजहांरतिमांनी तुमआ
एहोंललनाजबचिरैयाचुहचुहानी ॥ मुखकीबातकहांकहौं
ठांनीबातनिहीपाहिचांनी ॥ १ ॥ इतेपरअखियांरसमसमांनी अ
रुपगियालटपटांनी ॥ भालजावककरंगचनानी अधरअंज
नप्रगटजांनी ॥ २ ॥ बिनगुनबनिमालसबअंगअंगउलटेनि

www.vallabhacharya-agrahara.org

मानी ॥ सूरदास प्रभु गुननिधान अंतरगति की जानी ॥ ३ ॥ राग
विभास ॥ मैं जानी पिय बात तुम्हारी ॥ भोर भए मेरें गृह आए अैसें
सें भोरे भारी ॥ १ ॥ ह्यां आए मुख परसन मेरो हृदें रति नहि प्यारी
कपट चतुरई दूरि करौ जू अपने सले न अरुणारी ॥ २ ॥ वहूं सां
च में खोवत न करतें रूठें कहुं फवावत ॥ सूरस्याम मनागरि नागर
रवहू हम तुमरे मन आवत ॥ ३ ॥ राग काफी ॥ रैनि के रीझे की वां
त कहों ॥ काहे को सकुचत हो मोहन काहे कों न रहो ॥ १ ॥ पीतांब
र कहूं भयो तुमारो कैधों लियो गहों ॥ नीलांबर पहिरावन पाई
सनमुख कौन चहों ॥ २ ॥ तव हू सिंचलेस्यां मम मंदिर तन न कछु जि
य लजाहूं ॥ सूरस्याम काई अब रहियें आनि पुनी तज तुम हूं
३ ॥ राग बिलावल ॥ तुम रीझे के उनहि रिझाए ॥ हा हा पिय यह प्रगट
सुनावहु काहि कसों हू रिझाए ॥ १ ॥ जो बल भाय वीनहि मैं जान्यो
हूं रुकि पाय लगाए ॥ नैननि पीक मया उनि कीनी अंजन अध
र लगाए ॥ २ ॥ बिन गुन माल मिली कहूं तुम को कंकन पीठ दिखाव
हु ॥ सूरस्याम कह मतो योंजांनति तुम हूं कों दिन सुनावहु ॥ ३ ॥ राग
बिलावल ॥ आजु हरि रैनि उनीदे आए ॥ बिन गुन माल बिराजत
उर पर बंदन रव ए लगाए ॥ १ ॥ अंजन अधर ललिला रमहूं उर नैं
न तमोर खवाए ॥ मगन रेटी सिर पाग लटपटी जावक रंग रं
गाए ॥ २ ॥ हरें सुभग नख उर खविराजत कंकन पीठ बनाए ॥ सूर
दास प्रभु इहें अचंभो तीनि तिलक कहूं पाए ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ आ
जु हरि आलस भरे ॥ कव हूंक वां हूं जोरि एवत बहु न जस्रा
तर बैरे ॥ १ ॥ कैंगे के पा व धारि पर रखत नैंन सिराने ॥ साफ आय
तुमरें रसन रीम्हों कें अवहो त विहाने ॥ २ ॥ कवके रास भये पिय
काहे भोरे खव उ क न्हाई ॥ सूरस्याम कह्यो सुरति कर तिवह ह्यां तुमकें
रलगाई ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ सोंह कर न कों भो रहों तुम मेरें आ
ए ॥ रैनि कहां रत सुख अनत हीं नाके मन भाए ॥ १ ॥ अंग अंग भूखन
और से मांगे कहूं पाए ॥ रें बिधा कित यह रूप कों लोवन अरुना
ए ॥ २ ॥ पाग लटपटी सो हई जावक रंगलाए ॥ मानो के पोंच
हू मानिनी धनि पाय पराए ॥ ३ ॥ पहूंच तुराई कहां पठी उन हीं म
मुराए ॥ सूरदास प्रभु सांचि ले उपमा कविगाए ॥ ४ ॥ राग गौरी
तुमकों कमल नैंनन कवि गावत ॥ वदन कमल पद हू उपमा सो
वी नांच गुनकों प्रगटावत ॥ १ ॥ सुंदर खर कर मनि की सोभा चरन

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ कमलकह्यावत॥ ओरअंगकहिकहोंबखानेंइतनेहिकों
॥२७५ गुनगावत॥२॥ स्यांमनामअद्भुतयहवांनीश्रवणसुनतसुन
तसुखपावत॥ सूरदासप्रभुग्वालसंगातीजांनीजानिजना
वत॥३॥ राग बिलावल॥ तुमन्पाईकह्यावतकमलनैंन॥ कमल
चरनकरकमलबरनछविअरुजुसुनावतमधुरबैंन॥१॥
प्रातप्रगटरतिरविहिजनावतहुलसतआवतअंकरैंन॥ नि
सिद्वारकपाटसदलबधुमधुपनिपावतपरमचैंन॥२॥ मिले
हूमांझदासअननतचितवसततसराजलएकश्रैंन॥ सूरक
परनवफलहिपाइहोंअपनिअर्पिजबरेहेमैंन॥३॥ राग भै
रों॥ धीरधरोंफलपावहुगे॥ अपनेहीसुखकेपियचांउकबहूं
तोंवसआवहुगे॥१॥ हमसोंकहतओरकीओरैंइनिवांतनि
मनभांवहुगे॥ कबहूंराधिकामांनकरैंगीअंतनविरहजना
वहुगे॥२॥ तबचरित्रहमहीदेखेंगीजैसेंनाचनचावहुगे॥ सूर
स्यांमअतिचतुरकहावतचतुराईबिसरावहुगे॥३॥ राग दे
गंधार॥ यहकहिप्यारीभवनगई॥ रीझेस्यामदेखिवाछविपर
रिसमुखमूंदिरई॥१॥ द्वारकपाटदियेमारेकरिकस्यापनेब
नाई॥ नेंकनहींकहूंसंधिबिचारीपोढिरहीतबजाई॥२॥ एहिअं
तरजामीजोअवबुकरेंसुहाई॥ जहांनारिसुखमूंदिपोढिरहिंत
हांसंगरहेसोई॥३॥ जोवैधामसंगाबिराजतचलींत्रियारुहरा
ई॥ एकस्यामओरंगीहरेखेंएकगहेरहेसमाई॥४॥ उनकोवेअ
तिबिनेंकरतहैंतेअंकमभरिलीन्हों॥ सूरस्यांममनहरनक
हांवहुमनहरिकेंबसकीन्हों॥५॥ राग कल्यान॥ तबनागरिरि
सभूलिगई॥ पुलकिअंगअंगियाउरदरकीअंगअनंगजई॥१॥
अंकमभरिपियप्यारीलीनी निसिसुखवासरदीनी॥ मानछि
डायहुलासबढायोंसुफलमनोरथकीनी॥२॥ तबनिजुधाम
स्यांमपगधारेतहांसहचरीआई॥ सहजप्रभुरसभरीनागरी
देखिरहीमनलाई॥३॥ राग आसावरी॥ बेंद्रावलीहरखसोंउठी
तहांसहचरीआईहो॥ औरेंबदनओरअंगसोभादेखिरहीच
खुलाईहो॥१॥ कहूंआजुअतिहरखतबेठीकहांलुटीसोपाई
हो॥ कैधोंअंगसिथिलमरगजीसारीयहछविकहींनजाईहो
२॥ मोसोंकहांदुरावकरतिहैंकहंपरहीसिरनाईहो॥ मेंजानीतो
हिमिलेसूरप्रभुजसुमतिकुंवरकन्हाईहो॥३॥ राग आसावरी॥

चंद्रावली। करति चतुराई सुनत न बचन मुख मूंदि रही ॥ ब्याकुल
ही कछु रेंनि सखी कों ह्वें नाही कछु बेंन कही ॥२॥ गूंगे गुर की
रस ज्यों गई पूरन स्यांम सुहाग भरी ॥ उहै ध्यांन हरि के अनुरागी
वह लीला चित तें न टरी ॥२॥ तब बोली मोसों कछु बूझति कहा
कहे मुख बेंनें नही ॥ सूरस्यांम जुवती मन मोहन तिनके गुनन
हि पारति कही ॥३॥ राग बिलावल ॥ हा हा कहि चंद्रावलि मोसों
हरि के गुन मेंहू सुनि लैंहू ॥ श्रवन नमग सुनि हदें प्रकासों पुनि
पुनि री तोहि उत्तर देंहू ॥२॥ कें तोहि मिले तीर जमुना के कें तोहि
मिले भवन नही मांझ ॥ कहो तोहि मेरे गृह आए मानो अस्त होत
रवि सांझ ॥२॥ कहूं धांम के धांम बसे निसि भोर सदन गए मेरे
आइ ॥ सूरस्यांम जो चरित उपायो कहत न चढ्यो मुख कह्यो न जा
य ॥३॥ राग गौरी ॥ अब तो कहत बनेंगी माई ॥ कहो स्यांम अविरज सों कौं
नों कहति कह्यो न हि जाई ॥२॥ कैसें लाल अगाति तें आए जैसें तें रंगे
ह. कैसें मान कियो वेगो मिलि गए कैसें बढ्यो ते नेह ॥२॥ तब गदग
द बांनी मुख प्रगटी सुनि सजनी रें कांन ॥ सूरज प्रभु के चरित न मु
न छं जैसें बिसरो मांन ॥३॥ राग गौरी ॥ मेंहरि सों हो मान कियो री
आवत देखि आन बनिता रत रंक पाट रियो री ॥२॥ अपने ही क
र संक रस रि सचि सचि मांच सि बौरी ॥ जोर सानो सेज समूरति
कापें रिस निबहे री ॥ जब कुंवि चली भवन ते बाहिर तब हूं ढि
लोट लियो री ॥ कहा कहो कछु कहत न आवें नेह गोविंद बिवौरी
॥३॥ बिसरि गयो सें वरो सह रख मन फुनि फिरि मदन जियो री ॥ सू
रस्याम प्रभु अति रति नागर छलि मुख अमृत पियो री ॥४॥ राग बि
लावल ॥ तब ही ते भयो हरख हियो ॥ वैसे आय चरित एकी नेह स
दन पेंठि मन चोरि लियो ॥२॥ अंग वाम छवि सम रे षिकें रिस उ
पजी जिय भारी ॥ क्रोध गयो उर आनंद उमग्यो सुख तनु दसा बि
सारी ॥२॥ ऐसे चरित कोंन कों आवें जे कीने गिरिधारी ॥ सूरस्यांम
रतिपति के नायक सब लायक बनवारी ॥३॥ राग भैरों ॥ नंदनंद
न सुखदायक कहे ॥ नेंन सेंन दें हरत नारि मन कांम कांम तनु दाय
क हे ॥१॥ कबहूं रेंनि बसत काहू कें कबहूं भोर उठि आवत हे ॥ काहू
कों मन आपुनु रावत काहू के मन भावत हे ॥२॥ काहू कें जागत स
गरी निसि काहू विरह जगावत हे ॥ सुनहु सूर जोई जोई मन भावें
तेई तेई रंग उपजावत हे ॥३॥ राग बिलावल ॥ अनत हरि रेंनि रहे कहूं

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. स्यांम ॥ भोर भए आए निज धांम ॥ २ ॥ नागरि सहज रही मन मांही
॥१०६ नंदसुवन निसि अनत न जांही ॥ ३ ॥ महरि सदन की मेरे गेह । हरि
देंहें त्रिय यह संनेह ॥ ४ ॥ आए स्यांम रही मुख हेरि । मनमन कारन
लगी अवसेरि ॥ ५ ॥ रति रस चीन्हि नारि के मांनि । सूर हंसी राधा पहि
चांनि ॥ ५ ॥ राग रामकली ॥ आजु बने पिय रूप अगाध । परतु पकासका
जतनु चाह्यो पुरवत सब मन साध ॥ १ ॥ धर्मनीति यह कहूं पडी
जू मैं हूं वात सुनावहू । कहौ कहां काको सुख दीने काहे न प्रगट
वतावहू ॥ २ ॥ धनि उपकार करत डोलत हों आजु वात यह जांनी
सूर स्यांम गिरिधर गुन आगर अंग निरखि पहिचांनी ॥ ३ ॥ राग गू
जरी ॥ पिय छवि निरखि हसति त्रिय भारी । कहौ महा उर पागर
गाई वे सोभा एवं न्यारी ॥ १ ॥ अरुन नेंन अलसात देखियत पल
कपी कलपटानो । अधर दसन छवि विंदन राजत वंधु कपर
आलि मांनो ॥ २ ॥ हृदय रुचिर मोतिन की माला छवि रखातहि नीर
विनगुनमाल सूर के स्वामी कुंमकुंम स्यांम सरीर ॥ ३ ॥ राग विला
वल ॥ धन्य आजु यह दरस दियो । धन्य धन्य जासों अनुरागे त
व जानी नहि और वियो ॥ १ ॥ भले स्यांम वह भली भांवती भले भ
ले मिलि भली करी । यह मेरे जिय आनि हि अचंभित तौ विछुरत
क्यों एक घरी ॥ २ ॥ नाहु नदौ सुख दीनो मोकों वे सुनि के पिम पावें
गी । सूर स्यांम अति सुख करि वत वहु स्यों मन न मिलावेंगी ॥ ३
राग विलावल ॥ क्यों आए उठि भोर यहां । काहे कों इतनो सरमांने
रैनि रहे फिरि जाहु तहां ॥ १ ॥ हम कों कहां इतिगर वाई उनही क्यों
न सरसायो जू । उनि आए यां नाही जान्यों अजहूं लों पग धारो जू ॥ २
हम हूं वोलि इहां ई ली जो उरघुन कों हम हूं को हैं । सूर स्यांम तिन
ही सुख दीजें ज्यों विलसें संग तुम को लें ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ उन
ही कों मन राखें कांम । ह्यां तुम तो आए जो नाही वात सुनत तह्यों
नाही स्यांम ॥ १ ॥ देखो अंग अंग प्रति सोभा मेंनों भूली हौं एहि रूप
वनि पिय वने वनी वे उहूं एक एक तें रूप अनूप ॥ २ ॥ मो छवि ना
हि दिखावन आए मया करी वहु ते हरि आजु । सूरदास प्रभु र
सिक सिरोमनि उह उर रसिकिनि वन्यो समाजु ॥ ३ ॥ राग विलावल
रसिक रसिक ई जांनि परी ॥ नेंन निते श्रवन्यो हूं जें तवहीं ते अ
ति रिस न निमरी ॥ १ ॥ तुम जोवन अरु मोनवजोवनि एते पर सव गु
न नि भरी । लाज नही मेरे गृह आवत जाहु जाहु वा रितिय पहि हरी २

www.vallabhacharya-agrahara.org

अंजन अधर कपोलनि बंदन पीलपलक छबि देषि डरी ॥ सूर
स्यांम रति चिन्ह दिखावन मेरे आए भले हरि ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ स्या
म त्रिया सन मुख नहि जोवत ॥ कबहूं नेंन की कोर निहारत कब
हूं बदन पुनि गोवत ॥ १ ॥ मन मन हसत त्रसत तन परगट सुन
त भांवती बांत ॥ खंडित बचन सुनत प्यारी के पुलक होत सब गा
त ॥ २ ॥ पहूं सुख सूरदास कछु जानें प्रभु अपने कों भाव ॥ श्रीरा
धा रिस करति निरखि मुख सों छबि पर ललचात ॥ ३ ॥ राग ध
नाश्री ॥ पिय कों मुख प्यारी नहि जांनें ॥ जोई आवति सोई सोई क
हि डारति जाहु जाहु तुम जानें ॥ १ ॥ काहे कों मोहि उरहन आए रें
नि रेंन सुख वाकों ॥ भली न वेली नो खी पाई जो जाकों सो ताकों
२ चंदन बंदन त्रिय अंग कुमकुम में घालि येंधां आए ॥ सूरस्यांम
यह तुम हि बडाई औरनि कों मरमाए ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ औरनि
कों छबि कहां दिखावति ॥ तुम ही कों भावत मन मोहन हम रेख
त रिस पावति ॥ १ ॥ आपुन कों भई बडी प्रतिया जो बक भाल लगा
ए ॥ याकों अरथ न हीं कोउ जांनत मानहु सब निलजाए ॥ २ ॥ पयनि
धर कह हम प्रति मसकुचन है दर्पन लें मुख देखो ॥ सूरस्यांम कैसों
बोलत नाही केसों हमनन नहि पेखों ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ स्यांम हसे प्या
री मुख हेरयों ॥ रिस निउठी सुराय कहौं तब सकी नो मन मेरों ॥ १
जाहि हसों पिय ताहि भावो मेरो री अति भारी ॥ औसें हसि के ताहि
रिझावहु देउ कहा अव गारी ॥ २ ॥ हों तो अब रंग वन अब कहां जे धर
नी कहां निहारत ॥ सूरस्यांम मन की मैं जांनी ता के गुन हि विचार
त ॥ ३ ॥ राग देवगंधार ॥ मैं जानी पिय मन की बात ॥ धरनी पग नख
कहूं करो वन अब सी खेए घात ॥ १ ॥ तुम मैं जानि जिय हम हि सखा
ने अरु सब लोग अयाने ॥ रेंनि वसत कहूं भोर हमारें आवत नन ही
लजाने ॥ २ ॥ पह चतुराई पठी ताही पें सो गुन हम ते न्यारो ॥ धनिध
नि सूरदास के स्वामी काहे हम न विसारो ॥ ३ ॥ राग देवगंधार ॥ मैंना
नें है भूलन लन तहीं न सिधारिए जहां नयों नेहरा ॥ मुह कौ हसि भ
लाई मो हूं सों कन आए जिय को जासों ता ही सों तुम बिन मूनों
वाकों गेहरा ॥ १ ॥ निसि के सुख की कहें देत अधर नेंना उर नख ला
गे छबि देहरा ॥ वेगि सिधारो पाव धारिए सूर के स्वामी ननर कुं
भी जैगों पियरों पट आवत हें पियने हरा ॥ २ ॥ राग मलार ॥ ठाढे र
हे आंगन ही हों पिय जो लों मेंहन खसि खभी जो ॥ परन सेहूं बढ

॥ सू.सा. बडीबूंदेंतुमबीसउनामिऔरवस्तरपहिरोंनवगेहदेहरीपाव
॥२७७ दीजों॥२॥ काहियेंवातरेनिकीसांचीतापीछेंमोहेंकीजो॥ सूरस्यां
मतुमहोंवहुनायकदेहुसुधारिमोछीजों॥२॥ रागमलार॥ मो
हूसोंनिठुराईठांनीहोमोहनप्यारेकाहेकोंआवनकह्योंसांचे
होंतुमसांचे॥ प्रीतिकेवचनवांचेविरहअनलआंचेआपनेगर
जकोंतुमएकपायनांचे॥४॥ भलेहोंतुजानेलालअरगजेभीनी
मालखेसरितिलकभालमेंनमंत्रकांचे॥ निसिकेचिह्नचीन्हे
सूरस्यांमरतिभीनेताहीकेंसिधारोंपियजाकेरंगराचे॥२॥ रा
गमलार॥ तुमजिनिसकुचोप्यारेलालमेरेजानियसोंरतिमां
नीताहीकेरहोंअव॥ मेंहतनेंहीभलोमान्योप्रीतमजोमेरेअं
गनापावधारेआपुनजव॥१॥ नेंननतपितभएदरसदेखतहीं
श्रवनतृपितभएवचनसुनेतव॥ सूरदासप्रभुदरसनछुएक
हूतिरोमरोमपुलकितअंगभएसव॥२॥ रागकान्हरो॥ नेंनचप
लताकहांगवाई॥ मोसोंकहांदुरावततागरनागरिरेंनिजगा
ई॥१॥ ताहीकेरंगअरुनभएहेंधनिवहसुंदरताई॥ मनोंअरुन
अंवुजपरवेंठेमत्तभंगरसआई॥२॥ उडिनसकतअैसेमतवा
रेलागतपलकरुमाई॥ सुनहुसूरयहअंगमाधुरीआलसभ
रिकनूई॥३॥ रागविलावल॥ नेंननिकीचंचलताकहांधरहेंभीने
ंआकोनकेहोंस्यांमहमहूसोंकतहोंदुरावत॥ औरनिकेवर
नदेखिवेकोनैंनालियोताकोंपलकनिरावेभारभरेनएआ
वत॥१॥ पुहुपगंधलोभभवरउडिनसकतफिरिवेंठतिजामा
नीपरतिनानीसंगालएआवतिआतिरतिकीरतिगावत॥ सूर
दासप्रभुप्यारेप्यारीसवसकीन्हेंमुखकीहमहिवनावत॥२॥
रागकान्हरो॥ जाकेरसरेंनिआजुजागेहोंलालजाई॥ जावकतिल
कभालदिवोहेंवुंदलालविनगुनचनीमालकहांअनौखीअ
रुवाननिवनाई॥१॥ अधरअंजनदसामिथ्योहेंपीकपराग॥ औरमें
टीवरननकीललाई॥ आपअंगामिपिलभएहोप्रेमसूरकेस्वामी
मिटिगईवंचलताई॥२॥ रागकान्हरो॥ रंगभरिआएहोमेरेलल
नावानेंकहूनहोंअटपटी॥ अतिअलसानजसानहोंप्यारेपि
यअगटत्रियाअंताापछूटतनहींनअंतरगटी॥१॥ यहूवतुरई
अधिकाईकहांपाईस्यांमवाकेप्रेमकोंपठेहोपठी॥ सूरदास
प्रभुगिरिधरवहुनायकननमननेंनचटपटी॥२॥ रागकान्हरो॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

डोलत महल महल ढूंढे टहल न हम जानति तुम बहुनायक
पिय ॥ आए हो सुरत किए टाटक रस लिये सकस की धकधकी
ह्रिय ॥ ३ ॥ छूटे हैं रसनि अरु पांग की बांधनि लट पटे पेच अटपटे रि
ये ॥ सूरदास प्रभु हो बहुनायक मेरे पाव धारे बेठो जु बेठो भली
किये ॥ ४ ॥ राग ईमनि ॥ महल महल अब डोलत नहीं ॥ ढूंढे कामते
धाम बिसाम्यो बूझे काहे न बोलत नहीं ॥ १ ॥ बहुनायक की आस जु मे
जानी कहां चतुराई तोल नहीं ॥ निसि रस कियो भोर पुनि अरु वे
सिथिल अंग पग डोलत नहीं ॥ २ ॥ कंचुकि बेची ॥ न पाछिले न्यारे धक
धका तुर जो लत नहीं ॥ जाहु चले गुन प्रगट सूर प्रभु कहां चतु
राई छोलत नहीं ॥ ३ ॥ राग ईमनि ॥ अंग अंग रंग भरे आए हो ॥ रंग भरी
पाग भाल रंग सोभा रंग रंग नेन पगाए हो ॥ १ ॥ रंग कपोल रंग
पलकनि सोभा अधरनि स्याम रंगाए हो ॥ नख छत रंग चाफ उ
रसखा रति रंगारे निजनगाए हो ॥ २ ॥ कंकन बलय पीठि गडि लागे
उरउर छाप बनाए हो ॥ सूरस्याम बामा रंग पागे अनुरागे मन भा
ए हो ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ बारबार में बूझति हों पिय तही सिधाये
आए हो मन हू रन कों हरि नाम तुम्हारी ॥ १ ॥ भली बनी छबि आजु
की को लेत जसाई रेनि जागि आए न हो रति कों मजनाई ॥ २
बहु रति तुम रतिनाथ हो हम केसें भावें ॥ सूरस्याम तुम बहुगुनी
जे तुमहि रिझावें ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ सकुचत स्याम कहत मृदु बानी
किनि देख्यो कि कहां बात यह मोहे जुर कहें आनी ॥ १ ॥ याते
बचन बोलि नहि आवति रिस पावति हों भारी ॥ जो पिक हत
बातें तुम आगे खोटी ब्रज की नारी ॥ २ ॥ तुम हूं तें ऐसी को प्या
री सो हम करों जो मानो ॥ सुनहु सूर जो बूझति मोकों में काहू न प
हिचानो ॥ ३ ॥ राग भैरों ॥ बिन बोले पिय रहियें जू ॥ नाही कही गहें
कहत को अब ऐसें जिनि दहियें जू ॥ १ ॥ मोंन रहें तो कछु न बा
पो इनि बचननि कहां लहिए जू ॥ एते पर बकवाद न लागे के
सें रिस मन महियें जू ॥ २ ॥ सो हम कहां करि हों मुनि पावें सन मु
ख ढंढो कहियें जू ॥ सूरस्याम प्रभु रसिक सिरोमनि रसिक
सब गुन चहियें जू ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ आय गई ब्रजनारि नहां
सो हक रत पिय प्यारी ॥ अमो आनंद विरह मटां ॥ १ ॥ प्यारी हसी
देखि सखियन कों अंतर रिस हें भारी ॥ नेंनन सेंन दें अंग अंगनि
रखत पिय सोभा अधिकारी ॥ २ ॥ स्यांम रहे मुख मूंदि सकुचि कें

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा.॥ गुवतिपरस्पर हेरें ॥ सूरदास प्रभु अंग अनूप छबि कहा पायो
॥१२८॥ केहि केरें ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ तब नागरी कहत सखिन सों ए तेप
गए सों हुं कहें ॥ हरखन प्रान रहत न हूं हमकों निमिस और नि के चित
हरें ॥ १ ॥ तुम ही देषि लेहु अंग बानिक ए ते पर कौ सही परें ॥ रू
पा करें अन तहीं सिधारे मो आगें ते अब जु टरें ॥ २ ॥ यह छबि दे
खि मनाथ भई में अब ताही पर जाय ढरें ॥ सूरस्यांम सरीर षिच
ले उरि कहें सखी अब घांन फिरें ॥ ३ ॥ राग बिहागरो ॥ स्यांम ग
ए तिय मानु कियो ॥ देखो मोहि दोष तुम देत ॥ उनि ऐसें मन
चोरि लियो ॥ १ ॥ जाहु सदन तुमहू सब अपने में बैठी हों धांम ॥
जांन देहु अब घां जनि आवें ऐसे न कों कहा कांम ॥ २ ॥ अन
तहि बसत अनत ही डोलत आवत किरनि प्रकास ॥ सुनहु सु
र पुनि तो कहि आवें तन गि गए ता पास ॥ ३ ॥ आपु धाम कों भ
दूति ॥ राग बिहागरो ॥ यह कहि कें त्रियधांम गई ॥ पिसुनि भरी
न खसि खलों प्यारी जोबन गर्ब भई ॥ १ ॥ सखी चली गृह देखि
द समय यह हूं कहि बैठी जाई ॥ बोलति नाहीं मान करि हरि सों
हरि अंतर हें आई ॥ २ ॥ एहि अंतर सब तीस बनाई जहां स्यांम घ
न द्वारें ॥ प्रिया मानु करि बैठी ही हूं पिसुन कहि क्रोध तु मारें ॥ ३ ॥
तुम आवति अति ही रुहरानी कहां करी चतुराई ॥ सुनत सूर
एवान चक्रत पिय आनि हि गए मुरझाई ॥ ४ ॥ राग बिहागरो ॥
बहुरि नागरी मानु कियो ॥ लोचन भरि भरि ठाढ़ि पिय दिए रोऊ अ
तितनु बिरह हियो ॥ १ ॥ देखत ही देखत भए व्याकुल पिय का
रन अकुलाने ॥ बेगुन करत है अब कांबे कहियत परम स
माने ॥ २ ॥ यह सुनि कें दूती हरि पठई देखि जाय अनुमांन ॥ सूरस्यां
म यह कहि तेहि पठई तुरत तजें जेहि मांन ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ दूती
दई स्यांम पठाय ॥ औरस खकछु कहत बांनी तहां बैठी जाइ
॥ १ ॥ पिया मन परवाह नाहीं कांहि आवें जाहि ॥ मोतिमाल सला
य बैठी डुलति इत उत नाहि ॥ २ ॥ भीति बिनु कहि चित्र रेखें रही
दूती हेरि ॥ सूर प्रभु आतुर पठाई करति मन अब सेरि ॥ ३ ॥ राग
का न्हरो ॥ दूती मन अवसेर करों ॥ स्यांम मन तन मोहि पठई है
यह कत हु ते बैन टरों ॥ १ ॥ तब कहि उठी मांनु अति कीनो बहु त
करी हरि कहां करों ॥ ऐसे बिन बेन हीं जानि हैं अब कब हूं जिनि
उनहि टरों ॥ २ ॥ मैं आवति जमुना तट तें ब्रज सखी एक यह वा

www.vallabhacharya-agrahara.org

तकही ॥ सुनहु सूर मेंरहि न सकी यहू कहूं स्यांम की प्रकृति निस
हि ॥ ५ ॥ राग विहागरो ॥ अब हूं ऐते रहत न स्यांम ॥ अब पर घर को
तो हूं करत हैं भूलि करों नहिं ऐसे कांम ॥ १ ॥ अब तुम आनु न जे जि
नि उन सों यह कहन आई तेरे धांम ॥ अब समुझी ओरों समुझो
वे हम जब कहें करें न वतांम ॥ २ ॥ अब मोको यह जांनि परी है
काहू के न वसें कहुं नांम ॥ सूरदास दूती की वांनी सुनति धरति
मन ही मन कांम ॥ ३ ॥ राग सूहे विलावल ॥ जब हूं तीय ह वचन क
ह्यो ॥ तब जाने हरि द्वारें ठाढे उर उमंग्यो रिस न हीय रह्यो ॥ १ ॥ काहे
को हरि द्वार खरे हैं किन आगे को कहि जो भिगारें ॥ मोन गह्यो में
हु नाहि आऊ तू काहे को रिस न जिरें ॥ २ ॥ चतुर दूतिका जांनि ल
ई जिय अब बोली गयो मांन सवें ॥ सूर स्यांम पें आतुर आई क
हति आन को आन फवें ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ कान्हि मनाउ स्यांम ला
ल बाल जोरें नाहिं डीठि ॥ मुख हूं जो बोलें तो मन हू की लहि ए
ऐसी निठुरी अहि ठि ॥ १ ॥ अपनी सी वहुत कही सुनि उनि सवें
सहि वारु की वुंद ताको कहा करें वसीठि ॥ सूरदास के पिय प्या
री आपु ही जाय मनायली जे जैसी वयारि वहे तैसी दीजियें
जु पीठि ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ ललन जु सखी प्यारी आजु मनायो न
मांनति ॥ फिर राखु ति जानति का वेंढी कियो जु इतनि तुम ही
लें को कियो गुन गांवनि ॥ १ ॥ वुभरि भरि आंखियन नीर लेति
पेंढ रति नाहीं ओरी सखं पति अधर फरकि करि भ कुटी
तानति ॥ सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि आपुहि चलि येंतो ही
तो भले मनावति ॥ ३ ॥ राग पूरवी ॥ हम्बैं सखि केल्याउ जो मरम पा
ऊं स्यांम वाको मानु मांनो गाढें भयो ॥ तनु कंचन गिरि प्रग
ट कियो ता में वमन कोटर च्यो अंचल डोरी टी ओट रयो ॥ १ ॥ व
चन पोरिया चालन खोलें मुख पोरि मूरि रह्यो मोहन भोह व
मांन नेंना रिस के वानन ता तें जात न जीन कटगयो ॥ सूरदास प्र
भु चतुर कहावत आपुहि चलिए तो तुम हूं पें जाय लयो ॥ २ ॥
राग नट ॥ विहरत मानु सरस सुकुमारि ॥ कैसहूं निकसति न
हीहें रही करि मनु हारि ॥ १ ॥ मोन पारि अपार रचि अवगाहि
अंसुजु वारि ॥ मगन है के वेउ रति नाही पथिकित प्रगट पुकारि
॥ २ ॥ सूर सखास सरोज लोचन दुलनि जन जलचारि ॥ ग्राह केप
न वाह कन राति न हडर उगारि ॥ ३ ॥ चिकुर सद्व रगि करि अरु

www.vallabhacharya-agrahara.org

सू.सा.
२९

रतिसकतिनहिंनिरवारि ॥ नीलिअंचलपत्रपमनिउरजज
लजनिहारि ॥ ४ ॥ रंग्योरचिरुचिमानमानिनिमनमरालमु
रारि ॥ सूरप्रभुपुनआनिएगहिबाहनारिनिकारि ॥ ५ ॥ राग बि
हागरो ॥ यहसुनिस्यांमबिरहहुभरे ॥ कहुंमुकरकहुंकरिपी
तांबरमुरछिधरनिपरे ॥ १ ॥ जुवतिभरिअंकवारिलीनीहूंक
हांगिरिधारि ॥ आपुहीचलिबांहगहियेअंकलीजैनारि ॥ २ ॥
अतिहिव्याकुलहोतकाहेधरोधीरजस्यांम ॥ सूरप्रभुतुमच
तुरनागरबिबसकीनोकांम ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ स्यांमहिंधीर
जदेंपुनिआई ॥ बांनीइहिप्रकासतमुखमेंव्याकुलबहुतक
न्हाई ॥ १ ॥ बारंबारनेंनरहेउटारततपरेमदनजंजाल ॥ धरनिर
हेमुरझायबिलोकेंकहांकहोंवेहाल ॥ २ ॥ बेंदीआइअनम
नीढिंगबैंबारबारपछितांनी ॥ सूरस्यांममिलिवेंसुखदेहिन
जोतुमबडीसयांनी ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ तहांप्रियभावतिना
हिनआंन ॥ निसदिनमनमनकरतमनोरथरसबसकेलि
निदांन ॥ १ ॥ ध्यांनबिलासदरससंभ्रममिलिमांनतमांनिनि
मांन ॥ अनुनयकरतबिवसबोलतहेंदेंपरिरंभनदांन ॥ २ ॥
प्रथमसमागमतेंनानाबिधिचरितनतिहारेगांन ॥ सूरस्यां
मअंतरकुहवरसुनिमुरलीआपनेकांन ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ स्यां
मातूआनिस्यांमहिलावे ॥ बेंठतउठतचलतगोचारनतेरिय
लीलागावें ॥ १ ॥ पीतपीतबसनभूषनसजिपीतधातअंग
लावें ॥ चंद्रावलिसुनिमोरचंद्रिकामाथेमुकरबनावे ॥ २ ॥
अतिअनुरागसेंनसंभ्रजमिलिसंगपरमसुखपावें ॥ बिछु
रतनोहिकामिराधाकहिकुंजकुंजप्रतिधावे ॥ ३ ॥ तेरोचरि
तलिखेंअरुनिरखेंवासरबिरहगवावें ॥ सूरदासरसरास
रसिकसोंअंतकोउकपिआवें ॥ ४ ॥ राग बिहागरो ॥ मनपछि
तायोईरहिजेहें ॥ सुनिसुंदरियहसमोंबीतेंपुनिनमूल
लहिजेहें ॥ १ ॥ मांनहुमेंनमजीठप्रेमरंगतेंसेहीगहिजेहें
कांमहुरखहूरहेंहरिअंबरदेखतहीबहिजेहें ॥ २ ॥ इतनेमे
रकीबालसखीरीकतकोउकहिजेहें ॥ बरतभवनखनि
कूपसूरत्योंमदनअगिनिदहिजेहें ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ तेरी
नेंनउहांबनेहीनेंकनभावतन्यारेरी ॥ पलकओटप्रांनजा
ततेरीधांनचकोरचंद्रमरननचिंतवनिपरचेरेरी ॥ १ ॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

कमलकुरंगामधुपउपमांनहिचंचलरहतचितेरी॥सूरदा
सप्रभुकीतुहिजीवनिकनाहिकरनिप्रियफेरी॥२॥रागसारं
ग॥जबजबसुरतिकरत॥तबतबउबडबायरेउलोचनउम
गिभरत॥जैसेंमीनकमलदलकोंचलेंअधिकअरत॥पल
ककपाटनहोंमतवाहितेंनिकसिपरत॥२॥आंसूपरतदरि
टपिउरऊपरमुकतामनहुंकरत॥सहजगिरबोलतनवन
तहितहेरिहरत॥३॥राधानेंनचकोरविनामुखचंदजरत॥
सूरस्यामतुमरेदरसनविनुनाहिधीरधरत॥४॥रागसारंग
बहुरिपाछिनेंहेरीब्रजनारि॥देखिजायठाढेमगजोवतसुंद
रस्यामसुरारि॥१॥ऐसीनिठुरनेंकनहिचितवतिचंचलनेंअप
मारि॥कहांगरवयारूठेतनकोंदेषिहाथलेंवारि॥२॥तजि
अभिमानमानिरीमाननिमेंजुकरतिमनुहारि॥सूरहंसखा
तीमुलधोखेंकबहुंकरखांतिजुवारि॥४॥रागसारंग॥हरिनोहि
वारंबारसम्हारें॥कहिकहिसबजुवतिनकोनामहुनाहिरुचि
जेहिउरधारें॥१॥कबहुंकआंखिमूंदिकैस्यांहतचितधरिठो
रतिहारें॥तबप्रसिथिलीलाबलबहरतअबनाहितुमहिबि
सारें॥२॥जौंजाकोंजैसेंकरिजानेंसोतैसेंहितमानें॥उलटीरीति
तुम्हारीसुनिकेंसबकअवरजुकरिजानें॥३॥क्योंपतियांपठवें
नहितुनकोंबांचिसमुझिकैसुखपावें॥सूरस्यामहेंकुंजधाममें
अंतनमनविरमावें॥४॥रागसारंग॥राधेहरितेरोनामविसा
रें॥तुमरेईगुनग्रंथितकरिमालारसनाकरसोंटारें॥१॥लोच
नमूंदिध्यांनधरिदृढकरिनेंकनपलकउघारें॥अंगप्रतिरूप अंग
माधुरीउरतेंनहींविसारें॥२॥ऐसोनेंमतुम्हारोपियकेंकह
जियनिठुरतिहारें॥सूरस्यांममनकांमपुरावहुउठिचलिक
हेंहमारें॥३॥रागकेदारो॥जाकेदरसकोंजगततरसततांहिदेरी
दरसनेंकरेरी॥जाकीमुरलीकीधुनिसुरसुनिमोहेतानन
नेंनाचितेरी॥१॥सिवाविरंचिजाकोंपारनपावतसोतोंतेरेचरन
परसतुहेरी॥सूरदासवसतीनिलोकजाकेतुमसुखधुनिसु
नायमोहिलेंरी॥२॥रागभूपाली॥तुवकोंहेरीकोंनेंपठईतेरी
कोमांनें॥तजुकहतिस्यांमकोनसंदेसनंसुनेंकोपाहिवांनें
१॥औरकहतिकहिनेंमुलियोंद्यांकोंचेंसीवेईजोनें॥सूरदास
प्रभुरसिकबडेतोंकोपठईअतिहीस्यांनें॥२॥रागसारंग॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा.॥ अतिहठकीजैरी।सुनिस्यानि॥होंजुकहतितुमसुनियांतेसठम
॥१८०॥ रैनएकौंद्वारि॥१॥एकसमैमोतिनकेधोखैंहंसचुगतहैंज्वा
रि॥कांमीकांन्हकुंवरकेऊपरसरवसरीजेवारि॥२॥यहजो
बनवरषाकीनदियोंकेंरतिकतहिंकसारि॥सूरदासप्रभु
वेगिमिलहुगीएवीतेंदिनचारि॥३॥रा॥राग॥कली॥कहांतुम
इतनेहिकौंगरवांनी॥जोवनरूपद्योसदसहीकोंज्योंअंजुरी
कौपांनी॥१॥तरणकीअगिनिधूमकोमंदिरज्योंतुसारकन
पांनी॥रिसहीजरतिपतंगज्योंतिज्योंजांनतलाभनहांनी
२॥कछिकछुज्ञानभिमानजायरैंहैंवकौंनमतिठांनी॥तनु
धनुजोनिजांमनुगछायाभूलतिकहांअयांनी॥३॥नवसेंन
द्रीचलतिमरजादासिंधुअसिंधुसमांनी॥सूरदासउरखर
केवर्षेप्योरेहिंजलइतरानी॥४॥राग पूरवी॥तवलिप्यारीरीए
तोंहठछांडिमांनिरी॥परमविचित्रगुनरूपअपारीअजहिंच
तुरतियभारीरी॥१॥मनुमोंहवतनुमदनारेंहतहैंतेरेउनकिपी
रन्यारीरी॥सूरदासप्रभुविरहविकलहैंनेंकनिरखिनिहारी
री॥२॥राग विहागरो॥बातिबकतकाहेकोंतूंकंतआईमेरेघर
वेअतिचतुरकहांकहिपोंमानतोसोंसुखिलेंनपठाईतनुवे
धानिवचनानिमार॥१॥इनकीइतइनकीउनमिलवनिसमुझ
तिनाहिनप्रीतिरी।तिकोंटिनुकोहैंपिपिबराधर॥सूरदासप्रभु
आंनिमिलेंगेछहूंपगाअपनेकर॥२॥राग मलार॥ज्योंज्योंमोंमेंनि
होरेकरौंत्योंत्योंपायोंबोलनितैंहरीअनोखीरूसनिहारी॥बहियां
गहतिसततरातिकोंनपरमराधारिउगारीकोंनपरहोतिपिरीका
री॥१॥कोकोनकरतमांनतोसोंओरप्रियमांनहठपूरिकरिध
रिमेरेंकहैंआरी॥सूरदासप्रभुतेरोंपथजोवततोहितोहिर
टलगीमरनरहततनुभारी॥२॥राग मलार॥तउजोगग्वालिअ
हीरीतोसोंवेकछुनंदनंदनहूंसिकह्यौइतनेंहिकौतुवकव
कीअनउतरबोलतिकह्योवाढिनिमाननिरी॥स्यांमसुंदरह
सिहसिरेतसुनिमुनिकरतिकोंनएकटकहिंगानिजुरही
री॥१॥कहांकहोंहरिसोंवेतोसींकोंमुइलगायवारिफेरिडारों
तोहिंपियएकरोमपररी॥सूरदासप्रभुकोंकहांकहिवरनों
रतीकबहूंकाहूंकीनसहीरी॥२॥रा ग नट॥एकतोंलालनला
डिलडाईदूजेंजोवनबावरी॥उनकेगरवजिनिभूलिरहैरी॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

हमसोंकरिलीनेसुखअनेकदिनदिनव्यापिरहेतनअधिकचाव
री ॥१॥ मेरोकह्योंतूमानिरीमाईसबत्रियानकोंइहेंसुभावरी
मेंजुकहतिकहिसूरस्यांमसोंहसिमिलिरहिएउठतिवेसकों
इहेंदावरी ॥२॥ राग कांन्हरों ॥ रहिरीमांनिनिमानुनकीजें ॥ यहजो
वनअंजुरीजलहेंजोगोपालमांगेंतोंदीजें ॥१॥ छिनुछिनुघटति
वढतिनहिरजनीज्योंज्योंकलाचंदकीछीजें ॥ पुरबपुन्यसुकृ
तफलतेरोकाहेंनरूपनेंनभरिपीजें ॥२॥ सोंहकरतितेरेपाइन
कीऐसेजियनिदमोंदिनजीजें ॥ सूरसुजीवनिसुफलजग
तकोंवैरीवांधिविवसकरिलीजें ॥३॥ राग कांन्हरों ॥ सुनिप्या
रीराधिकासुजांन ॥ कहिधोंकोंनकाजमनिहेंरीएहिदुरअभि
मांन ॥१॥ जिनिकेचरनरमानितलालितसबगुनरूपनिधांन
तिनकेमुखकेवचनमनोहरमोंतूकरतिनकांन ॥२॥ परम
चतुरसुंदरिसुषकारीतोसीत्रियांनआंन ॥ कनिकहांकृपिन
कीसंपतिविनाभोगविनदांन ॥३॥ ऐसीप्रियाहोतनिसिहृपि
कोंजिनिहठिकरोंविहान ॥ नाहिनकछुओरकेकाढेंसूरमद
नकेवांन ॥४॥ राग रामकली ॥ आजुहठिवेठीमानुकिए ॥ महा
अोधरसअंसनतपनामिलिमनविषकामापिए ॥१॥ अधमुखर
हतिविरहव्याकुलसिखकेंवनहिमांनें ॥ सुवनतजेसुमिरजा
तीज्योंसुधिआएनतुमानें ॥२॥ एकलीकवसुधापरकाढीमेंत
नुगोदपसारी ॥ जलसोंहितनजितकेंपरनकोदृष्टिज्योंअवन
निहारी ॥३॥ ज्योंअतिदीनदुखीसवहींअंगाकतहूसांतिनपावें
त्योविनपियप्रहत्रियाप्रानतहितेएकईवानमनावें ॥४॥ कव
हूंकधुकतिधरनिश्रमजलभरिमहासरदरविसास ॥ त्राट
कभईचित्रपुतरीज्योंजीवनकीनहिआस ॥५॥ तवउपचारकि
योमेंकरकसलेंरसपास्योंकांन ॥ मुरछाजमीनहीमुखवो
लीलेंवेंठीफिरिमांन ॥६॥ होतोंयाकीकरतिवहुजतननिजि
कीविषानपाई ॥ वूझहुलालनवलनागरतुमएकइसेंनव
ताई ॥७॥ सिवप्राकारदिखायोंकछुएकभावदोसरसनाही
सूरदासप्रभुरसिकसिरोमनिलेंमेलीपगछांहीं ॥८॥ राग दे
वगंधार ॥ पियापियवांनिमनावोंमानें ॥ श्रीमुखवचनमधुर
मृदुमारदकठिनकुलिसहूतेजामें ॥१॥ सोंभितसहितसुगं
धस्यांमकचकलकपोलअरुफांनें ॥ मनहुविधनग्रास्योंक

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. लानिधिजतननरह्यौ बिनसानें ॥२॥ बालभाव अनुसरतिभरति
॥१८२ दृगअग्रअग्रअंकुसनआंनें ॥ जनुखंजरीसजुगलजठरानुरलेन
सुभखअकुलानें ॥३॥ नेंननिकटताटंकगंडवरमंडुककविन
बखांनें ॥ जनुखद्योतचमकिचलिसकतननिसिगततिमिर
हिरानें ॥४॥ यहमुनिकें अकुलायचलेहरि किंतअपराधवि
मानें ॥ सूरदासप्रभुमिलेपरस्परमानिनिमिलिसुसिकानें ॥५॥
रा॥ धनाश्री ॥ मांनिमनावोंमोंनरह्यौ ॥ सकुचसमेतचलीउठिआ
तुरवनकोंगेलगह्यौ ॥१॥ बिधुमुखनिरखिबिमुखकरिलोचन
पुनिबिधुवदनचह्यौ ॥ दरसपरसतदरूपआजुनिजुभूमिनख
लेखिकह्यौ ॥२॥ पुहुपसुरंगसारंगरिपुओटरिखावततचतुर
लह्यौ ॥ पांनिसुपरसतसीसपरस्परमुसिकानेतवह्यौ ॥३॥ त्र
नतोच्योंगुनजाननितेगुनकांटनिरेखमह्यौ ॥ सूरस्यामबहु
ह्योमिलिबिलसहुजातिअवधिअवह्यौ ॥४॥ रा॥ सारंग ॥ चली
वनमोंनमनायोंमांनि ॥ अंचलओरपुहुपफूलिरायोंधरोंसीम
परयांनि ॥१॥ सखितनचितेनेंनदोउमूंदेमुखमुहअंगुरीआंनि
यहनोंबरितगुपातिकीबातेमुसिकानिजियजांनि ॥२॥ रेखा
तोनिभूमिपरखांचीत्रननोहौवकरतांनि ॥ सूरदासप्रभुरसि
कसिरोमनिबिलसहुस्यांमसुजांन ॥३॥ रा॥ गोंडमलार ॥ सेंनदे
कह्योंवनधांमचलिस्यामइहेंकरिकांमजवआंनिमिलि
हों ॥ भावहीकह्योनभावदृढरासिबोंदेउसुखतुमहिसंग
रंगरालिहों ॥ जोंनिपियप्रतिहिआतुरनारिआतुरीगईख
नतीरननसुध्यहेंती ॥ सूरप्रभुहरषभएकुंजनबतहांगए
सवतरातिसेजजेनिगामनेती ॥२॥ रा॥ गौडमलार ॥ स्यांमवन
धांममगवामजोवें ॥ कबहुरचिसेजअनुमांननिजजियकर
तलतासंकेततरकबहुसोवें ॥१॥ एकछिनएकघरीघरीए
कजांमसबजांमबासरहुतेहोनभारी ॥ मनहिमनसाधपु
रवतअंगभावकरिधन्यभुजधानिहदेंमिलेप्यारी ॥ कबा
हिआवेंसांझसोचप्रातिजियमांझमेंनषगरदुकेंरहेदोऊ
सूरप्रभुभामिनीवदनपूरनचंदअरसपरसमनाहिअकु
लातवोऊ ॥३॥ रा॥ नट ॥ दूतीसंगहरिकेरह्यौ ॥ स्यांमप्रतिआ
धीनद्धेंकेंनाहूतासोंकह्यौ ॥१॥ बेगिआंनिमिलायमोकोंपर
मप्यारीनारि ॥ देखिहयतननकामव्याकुलबलीमनहिविचा

रि॥२॥ गाईजहूजहूकरनिराधाअंगअंगसिंगार॥ सूरकेप्रभु
नवलगिरिधरसंगजानिविहार॥३॥ राग विहागरो॥ राधासी
खेदेखिंहूरवांनी॥ आतुरस्यांमपठाईयाकोंअंतरगतिकी।
जांनी॥१॥ वहूसेभानिरखतिअंगअंगकोंरही निहारी॥ वह
तभईदेखिनागरीवाकोंतुरतसिंगारनिसारी॥२॥ नाहिकह्यौ
मुखदेहचलिहूसिकोंमेंआवतिहोंपाछें॥ वैसेहिफिरीसूरके
प्रभुपेंजहांकुंजगृहकाछें॥३॥ राग केदारो॥ दूतीदेखिआतुरस्यांम
कुंजगृहतेंनिकसिधाएकामकीनोंनाम॥१॥ वोलिउठेरसाल
वानीधन्यतुअवडभागा॥ अवहिआवतिवनीवालाकिएमन
अनुराग॥२॥ कहांवरनोंअंगसोभानेंनदेखोंआज॥ सूरप्रभुनें
कधरोंधीरजकरोंपूरनकाज॥३॥ राग ईमनि॥ वडेभागवेमोटे
हो औसीत्रियाऔरकोपावेंवनेपरस्परजोटेहो॥१॥ तैसियना
रिसुंदरीछोटीतैसेईतुमवलिछोटेहो॥ पूरवपुन्यसुकृतफल
कोंवहआपुगुननिकरिघोटेहो॥२॥ परमसुसीलसुलछननारी
तुमहुत्रिभंगीखोटेहो॥ सूरस्यांमउनिकेमनतुमही तुमहूनायक
कोटेहो॥३॥ राग काफी॥ मुनिमोहनतेंरप्रानप्रियाकोंवरनोंनंदसु
मप॥ जोतुमआदिअंतमेरोगुनमानहूयहूउपकार॥१॥ चंदमुखी
मोहेंखंजननविचचंदनतिलककालिलार॥ मनुवेंनीभुवंगनिके
परसतश्रवनसुधाकीधार॥२॥ नेंनमीनसरवरआंननमेंचंच
लकरतविहार॥ मनोकरतफूलचाराकोंरवकतवारंवार॥३॥
वेसरिवनीसुभगनासापरमुकतापरमसुढार॥ मानोंतिलफू
लसधरविंवाधरदहुविवबूंदनुसार॥४॥ सुठिसुठनठोडीअति
सुंदरसुंदरताकोसार॥ चुवतहिचुवतसुधारसमांनोंरहिगई
बूंदमझार॥५॥ कंबुसिरीउरपदिकविराजतगजमोतिनकोंहा
र॥ दहिनावर्तदेतमनोंधुवकोंमिलिनसत्रकीमार॥६॥ कुच
जुगकुंभसुंडिरोमावलिनाभिसुहृदआकार॥ मनुजलसोखि
लयोंसहवताजोवतगजमतवार॥७॥ रतनजरीगजराबांज
वदसोभाभुजनिअपार॥ फूंदासुभगफूलफूलेमनोंमदनवि
टपकीडार॥८॥ छीनिलंकेनीवीकिंकिनिधुनिवाजतअतिफ
नकार॥ मोरवांधिवेंनेंनतुदूलहमनमथआसनतार॥९॥ जु
गलजंघजेहरिजरावकीसाजतपरमउदार॥ राजहंसगतिच
लतिकमोदरिअतिनितंवकेभार॥१०॥ छिटकिरहोलहंगार

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ गतासंगसारीतनसुकुमार ॥ सुरसुगंधसुअंगसमूहनिभव
॥१९२ रकुरतगुंजार ॥ ११ ॥ रा ॥ जै ॥ श्री ॥ नवनागरीहो सकलगुनआग
रीहो हरिभुजग्रीवाहो सोभासीवाहो ॥ १ ॥ गोरस्यामछविपावई
संगसवतमेंहू सखीजोवनकियोप्रवेस ॥ कहूंकहूं छविरू
पकीनवलसिकअंगसुदेस ॥ २ ॥ श्रीपतिकेलिसरोवरीमेंस
वजंलभरिपूर ॥ प्रगटभई कुचउचस्थलीसोछयोजोवनमूर
३ ॥ छूटेकेसमजुनसमें देखि विरूधअहिमोर ॥ भोरकहूंनिसि
मेरूतेंउतरिचलेबोहिओर ॥ ४ ॥ सीमसचिह्नकनवकेसझे विचश्री
मंतसंवारि ॥ मांनहूंकिरनिपतंगतेंभयोसुधानमहारि ॥ ५ ॥ के
सरिआडलिलारहो विचसेंदूरकोविंदु ॥ चक्रतरोनानेंनमृग
रथबेंठोंजनइंदु ॥ ६ ॥ नेंननिरूपरकहूंकहूं योराजतभुवभंग
जुवाकनावतनचेंदुमाअपलहोतसारंग ॥ ७ ॥ चंपकलीसीनासि
काराजतअमलअदोस ॥ नापरसुकनायोअपोमनेंभोरक
नओस ॥ ८ ॥ मुक्ताआपाविकाइकेंहोरनमेंविटकराइ ॥ अधर
अमतहितनतपकरेंअधसुवरूरधरायाय ॥ ९ ॥ अधरनिकीछवि
कहूंकहूं सरसस्याम अनुकूल ॥ विंबपवारेंलाजहीमनहूं रस
तहेंफूल ॥ १० ॥ पांतिकांतिरसनावलीरहेतमोलरंगभीजि
चंदनसोमसिमेंवएमनोमैंदामिनिकेबीज ॥ ११ ॥ गुंजाकीसी
छविलईमुकतासी वडुभाग ॥ नेंननिकीलईस्यामता अध
रनिकोंअनुराग ॥ १२ ॥ वेसरिकोंमुक्तामनिधनिनासाग्रजना
ये ॥ गुरुअसुतविचभोमहोससिसमीपगहचारि ॥ १३ ॥ खुटि
लासुभगजराइकेमुकतामनिछविदेन ॥ प्रगटभयोंघनमध्य
तेंससिनक्षत्रसमेत ॥ १४ ॥ सुंदरसुभगकपोलहो रहेतमोर
भरिपूर ॥ कंचनसंपुटद्वेंपलामांनहुभरेसिंदूर ॥ १५ ॥ चिवुक
दिठोंनाजवदियोंमोमनधोरवेंजात ॥ निकस्योंअलिसिसुकें
जतेंमनहूंजांनिपरभांत ॥ १६ ॥ जेहिमासावनवारिकानिक
सतिआनिसुभाइ ॥ मखपकलपवनछांडिकेंवलतनसंगालप
टाय ॥ १७ ॥ जहांजहांतूपगाधरेंतहांतहांमनसाथ ॥ अतिअधी
नप्रियद्वेरहेतेनमनुरेंनेरहाथ ॥ १८ ॥ देषिवरनकेरूपकोंमो
हनरह्योंलुभाय ॥ एकटककरहोंवकोरजोइष्टिनइतउतजाइ ॥ १९ ॥ दे
तोहिस्यांमसोहेंसखीवटीनिरंतरप्रीति ॥ तूंतनमनधनस्यां
मकेनैंहरिपारजीति ॥ २० ॥ मनमोहनतूंवसकरेंअतिप्रवीन

www.vallabhacharya-agrahara.org

नंदलाल ॥ सूरदासगावें सरदकी निसि विलास विसाल ॥ १ ॥ राग न
ट ॥ राधासंग ललितालिए ॥ स्यांम आतुर जांनि वालाग वन आ
तुरकिए ॥ १ ॥ किंकिनी धुनि श्रवण सुनि हरि अतिहि पुलकत हि
ए ॥ नारि आवत जांनि गिरधर नहीं धीरज दिए ॥ २ ॥ चले आतुर
धाय आगें संग सहचरि विए ॥ सूरप्रभु रति रंग राचे रेखि री कि
त्रिए ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ पिय छबि निरखति नागरी अंग रसा
भुलानी ॥ अंतरगति आनंद भरी ललिता हू रषांनी ॥ १ ॥ सहचरि
सोंकहि सुमन लें हरि पें टभराए ॥ अति अधीन पिय के गये व
सपरेउराए ॥ २ ॥ मारग सुमन विछांवही पग निरखि निहारें ॥
फूले फूले धरधरें कलि आचुनि डारें ॥ ३ ॥ ऐसें वस पियवांम के
सुखसरजानें ॥ जो जेहि भावनि हरि भजें तेहि तैसें मानें ॥ ४ ॥ रा
ग पूरवी ॥ पीछें ललिता आगें स्यांमा प्यारी ता आगें पिय स्यांम ग
फूलनि विछावत जात ॥ कठिनि कठिनि कली बीनिके रतन प्यारी न्या
री प्यारी के चरन कोमल जानि सकुचत अति गडि वेहि डरात ॥ १ ॥
रपघलता अपने कर निखारत ऊंचे सों परत द्रुम वेली पात ॥
सूरदास प्रभु की ऐसी आधीनता देखत मेरे नैंन सिरात ॥ २ ॥ रा
ग कन्हरौ ॥ दौडे वार एक डिन पर आवत स्यांमा पीछें अपने अंचल में
लीए ॥ वेंनी गूंथि मनि मय फूल सुगंध पें टभरें डोलत बोलत
नाहिंन सकुचहि हिए ॥ १ ॥ अरु कुसमी सारी में अलक कलक गो
रे तन मनों आहि लिलचंदन वंदन सों पूजा किए ॥ सूरदास प्रभु
पिय मिलि नैंन प्रान सुख भयो चित कुरुखि अनिमनक निरि
ए ॥ २ ॥ राग रामकली ॥ वरुन वरुन वन फूलि रह्यो ॥ हरखित देखि वृ
खभानन्नंदिनी संग सब सखिन कह्यो ॥ १ ॥ कुसुम कली देखत
रुचि उपजी यह कहि तिनाहि सुनावति ॥ आपुन चुनति गोद लें
धारति जुवतिन कहति चुनावति ॥ २ ॥ हसति परस्पर देंदें तारी
स्यांम लिए कवांहीं ॥ सूरदास प्रभु कांम आतुरे ओर ध्यान चि
त नाहीं ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ टेरति वाकी कुंज गली ॥ व्रज वनि
ता मृगसावक नैंनी वीनति कुसुमकली ॥ १ ॥ कमल वदन पर
विथुरि रहीं लट कुंचित मन हुं अली ॥ अधर विंब नासिका मा
नो हर दामिनि दसन छली ॥ २ ॥ नाभि पर सलोंनें रोमावलि
कुच जुग वीच चली ॥ मन हू विचरतें उरग रियों तकि गिरिके
संधिपली ॥ ३ ॥ पृथु नितंब कटि छीन हूं सगति जघन सघन

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. कदली॥ सूरसुमोहनलालरसिकसंगवनघनमांझरली॥३
॥१८३ रागपूरवी॥ सखियनिसंगराधेकुंवरिवीनतिकुसुमकलि
यां॥ एकविद्रुमएककिहिवानकरूपगनकीसीवामनभाव
तसुंदरस्यांमलालकेकरसोहतिरंगीलीअलियां॥१॥ एकअ
नूपममालवनावतिएकपरस्परवेनीगूंथतिभ्रांजनिकुंज
गलियां॥ सूरदासप्रभुसंगमिलिकौतुकदेखतहरखहरषि
प्यारीअंकमभरियां॥४॥ रागकल्यान॥ लेंगईधांमवनस्यांमप्या
री॥ रहेलपटायदोउभुजनिपलढाइकेंकहौंपियवचनहैं
निठुरंनारी॥१॥ विहसिवृखभांनुतनयाकहतिहमनिठुरतुम
सुहृदवातवेजिनिचलावो॥ निठुरअबसुहृदसोमनहिमन
जांनिहेंकहांवहकथाकीसुरतिपावो॥२॥ परस्परहसेदोउर
सेंरतिरंगमेंकरतमनकांमफलपुरुषनारी॥ सूरप्रभुकोक
गुनमेंनिपुनहेंवेउकांमवलतोसिरसरयोंभारी॥३॥ रागसहें
विलावल॥ सिरधरनारिअवलअतिवोली॥ सवलभुजाधरि
अंकमभरिभरिचांपिकठिनकुचरुपरलीनी॥१॥ कोकअना
गतक्रीडापरुचिदूषिकमततनुसारी॥ कमलकरनिकुचग
हतलहतपुटदेखोंयहवनन्यारी॥२॥ वारवारललचात
साधकरिसकुचतिपुनिवाला॥ सूरस्यांमयहकांमकरों
जिनिधनिधनिमनगोपाला॥३॥ रागरामकली॥ सुतादधिप
तिसोंक्रोधभरी॥ अवरलेतभईरविजिवालहिसारंगसंगलरी
॥१॥ तवअघोतिअतिबुद्धिविचारीमनिलेंहाथधरी॥ वेअतिच
तुरनागरीनागरिलेंमुखमांझकरी॥२॥ चांपतचरनसेसचलि
आयोंउदयाचलहिडरी॥ सूरदासस्वामीकीलीलाउरअंकला
गिउवरी॥३॥ रागरामकली॥ सकुचितनुउदधिसुतासुमिकांनी
रविमारषीसहोदरनापतिअंवरलेतलजांनी॥१॥ सारंगपांनि
मूंदिमृगनेंनीमनिमुखमांझसमांनी॥ धरनचांपिमहिप्रगटक
रीपियसेससीससमहुरांनी॥२॥ सूरदासतवकहकविअवला
जवहरियहमतिठांनी॥ कुचअंकमभरिचांपिकठिनउरिस्यां
मकंठलपटानी॥३॥ रागविलावल॥ वहछविअंगनिहारतस्यां
म॥ कवहूंकहुंवनदेतउरसंधारिअतिसकुचतितनुवांम॥१॥
सनमुखनेंननजोरतिप्यारीनिलजभएपियअसें॥ हाहाकर
तिचरनकरटेरतिकहांकरतिरंगनैसें॥२॥ वहुरिकामरसभ

www.vallabhacharya-agrahara.org

रेपरस्पर रति विपरीति बढाई ॥ सूरस्याम रति पति बिहू बलक
रि नारि रही मुरझाई ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ पिय प्यारी तनु श्रमित भ
ए ॥ सकुंचि उठी नागरि पटुली तें स्याम लजाय गए ॥ १ ॥ सांवधांन
रति अंत भरे पिय प्यारी नैन नाहि हैं रत ॥ नागरि कुटिल कटाछि
न हेरति भृकुटी बंक रफेरत ॥ २ ॥ ऐसे गुन कि नि तुम हि सिखाए
तिरनी कटि कसि दीनी ॥ सूर कहति पिय मों त्रिय बातें आजु तुम
हि मैं चीन्ही ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ हरषि स्याम त्रिय बांह गही ॥ अपने क
र सारी अंग नाम जनन यह एक साध कही ॥ १ ॥ सकुचत नारि बदन
मुसिकानी उनकों चितें रही ॥ कोक कला करि पूरन दोउ त्रिभुव
न शोभ नहीं ॥ २ ॥ कुंज भवन संग मिलि दोउ बैठे सोभा एक चही ॥ सू
र स्याम स्यामा सिर बेंनी अपने कर निगुही ॥ ३ ॥ राग जैतश्री ॥ मोहन
मोहनि अंग सिंगारत ॥ वेंनी ललित ललित कर गूंथति निर
खत सुंदर मांग सवारत ॥ १ ॥ सीसफूल धरि पाटी पोछति पुर
झिवानि हारत ॥ बेसर बिंदु जराउ की बेंदी तापर बने सुधारत
२ ॥ तरिवन श्रवण नैन दोउ अंजत नासा बेसरि साजत ॥ बीरी
मुख भरि चिबुक दिठोंना निरखि कपोलनि लाजत ॥ ३ ॥ नख सि
ख सजत सिंगार भाव सों जावक चरननि सोहत ॥ सूरस्यामा
त्रिय अंगनि सवारत निरखि आपमन मोहत ॥ ४ ॥ राग ललित
ऐसेहि सुख सब रेनि बिहानी ॥ भोर भए व्रज धाम चले दोउ म
न मन नारि बिराजी ॥ १ ॥ प्यारी गई सखी भान पुरा तन स्याम जो त
नंद धाम ॥ प्रभु राम हलधर ही ठाढे उनि देखी वह बाम ॥ २ ॥ आ
तव ले बन तें व्रज आए मन मन करत विचार ॥ सुनहु सूर रस
कुचत ठठुक ननागृह गए नंद कुमार ॥ ३ ॥ अथ पखेउना वर्ण
नं ॥ राग देवगंधार ॥ कित तें आए हो नंदलाल ऐसी कोंनवाल
जाधो देखें तुम आइ द्वार हैं जाके ॥ मिटत नहीं चितवनि हित ता चि
त की उहें टेव नित नित की मैं पहिचानि नैना वाके ॥ १ ॥ कब
हु नहात कबहू अंग मोरत अटपटात मुख बात न आवत
रैनि कहूं धौं पाके ॥ सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि रसिक र
सिक ईजौं नी नाम लेहु रहे जाके ॥ २ ॥ राग ललित ॥ बन बन तें
आए अति भोर ॥ राति रहे कहु गोपिन घेर न आए हो मो चोर ॥
अंग अंग पलटे आभूषन बनहू में तुम पावत ॥ बडभागी तुम ते
नहि कोई कंपा करत जहां आवत ॥ २ ॥ भोवक आय गए ग्रह में

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥कृ.सा.॥ रे दुर्लभ दरसन दीनों ॥ सूरस्यांम निमिख हों कहु जागे पावति अं
॥२५॥ ग अंग भरीनों ॥३॥ राग विलावल ॥ लाल तु नींदे भए ॥ राजत हैं रतन
रेनैं नामोंन हूं नालि ननए ॥१॥ पीक कपोल लिलार महाउर खं
डन वलि तरखए ॥ मनु तन जामें सद्य अरुन दलकों मके वीज
वए ॥२॥ विनगुन हार पयोधर मुद्रा है दें सुदेस ठए अंजन अ
धर सुमंत्रा लिख्यो रति दिद्याले नगए ॥३॥ सूरस्यांम विधु रेख
सम सुख पर नखना रा वहए ॥ ताऊ पर आनंद दइ दूनजनु मानहु
सम सर जए ॥४॥ राग विभास ॥ रैंनि जागे रति रस पागे अनुरागे
नव त्रिय संग ॥ मो सन मुख कत आए हो दहन पिय रस मसे
नेंन अरटपटात वेंन नितहां ई जाहु जाके रंग ॥१॥ विनगुन वनी
माल पीक कपोलनि लाल जावक तिलक भाल कीनों रस
वस अंग ॥ सूरदास प्रभु तुम रजनी विहाइ आए सौति अनंग
॥२॥ राग विलावल ॥ सुनत सखी तहां दौरि गई ॥ सुनें स्यांम सुखमा
के आए धाई तरुनि नई ॥१॥ कोउ निरखति मुख कोउ निरखति
अंग कोउ निरखति रंग अंग और ॥ रैंनि कहूं फिग परे कन्हाई कहू
ति सब कै करि दौरि ॥२॥ नवक हिनाहि सुखमा यह भाग हिं मा
रे आए ॥ सूरस्यांम धनि वा सुतहारी जिनि निसि वस करि
पाए ॥३॥ राग विभास ॥ माई आजु लाल लटपटात आए अनु
रागे ॥ सोभित भूखन अंग अंग आलस भरे रैंनि उनींदे जागे ॥१॥
लटपटी सिर पेच पाग छूटे वंद निवागे ॥ सूरस्यांम रसिक राय
रस वस कीन्हें सुभाय जामो उहां सोइ त्रिया वडभागे ॥२॥ राग भू
पाली ॥ हो माई आजु अनत जागे री मोहन भोर हां मेरे कीन्हें हैं
आवन ॥ सोभित भूखन अंग अंग आलस भरे लैंलें लागे अ
नमिली मिलावन ॥१॥ अब कैसें पतिया निहूं प्रीतम सांचे
हो सो हूं नि वोल निवाहन ॥ सूरस्यांम रसिक राइ जावक छवि
नूं लाय अब आए मोहि असलमलावन ॥२॥ राग सुघराई
आजु बन्यो नवरंग पिय यारो ॥ ब्रज वनिता मिलि वीनानि छ
रो ॥१॥ अलट परी पाग महा उर पागी ॥ कुवरि मनावत अति
वडभागी ॥२॥ पीक कपोल अधर मसि लागी ॥ आलस वलि
त सवे निसि जागे ॥३॥ कहु वरन कहू वरन की छवि ॥ रैंनि रंग
अंग अंग रह्यो फावि ॥४॥ सूरस्यांम को यह छवि देखो जीव
न जन्म सुफल करि लेखो ॥५॥ राग सुघराई ॥ आजु वने नवरं

www.vallabhacharya-agrahara.org

गाछुवीले॥३गामगातपगअंगअंगरोले॥जावकपागरंगी
धोंकेंसें॥जैसीकरीकहेंपियतेसें॥२॥बोलतवचनवहु
तअरसांने॥पीककपोलनिसोंलपटाने॥३॥कुमकुमरहस्य
भुजनिछविछिंरन॥सूरस्यांमनगिनमनफंदन॥४॥रागगौ
री॥आजुवनेवनतेंव्रजआवत॥जद्यपिहेंअपराधभरेंहरि
देखतउमोहिभावत॥१॥नखरेखामुकतावलिकेनटअंग
अनूपलसी॥मनोंसुरसुरीईससीसतेंलैंविधुकलाधसी
२॥केलिकरनकाहूजुवतीकरकुमकुमभरिउरदीनों॥म
नोंभारतीपंचधारकेंनभतेंआगमकीन्हों॥३॥वीचवीचवक
मनीयअंगपरस्यांमलरेंखरहीं॥सूरसुतामनोंकनकभू
मिपरप्यारिप्रवाहवहीं॥४॥रागरामकली॥सखिसोभाअ
नुपमआतिराजें॥नैनकोंनकीअंजनरेखापटतरकहूंनछा
जें॥१॥खंजरीटमनोंग्रसितपन्नगीयहउपमाकछुआवें॥
दृगाधसिंधुकीगरलकलाज्योंकोटिकभ्रमउपजावें॥२॥
केसुरसलितासूरजतनेंतटकेंपेंपिवतिसुवेंगिनि॥कैंअपिमां
नमानिसागरतेंउलटीजमुनितरंगिनि॥३॥संवरारिकोंमुन
सकपिप्रगटएकहीकाल॥कैंधौंरुचिरराजीवकोमतेंनि
कसिचलोंअलिमाल॥४॥सूरदासदासिनिहितकरकीहृ
रिहलधरकीजोपी॥राधावरनिसिरसिकसिरोमनिकवि
कुलपरीठगोरी॥५॥रागअडानों॥लालआएहेंउनीदेंआपु
नपोंढिएपलकाहोपलोटिहोंपाइं॥मेरीसकुचजियमेंकान
आनतिहोंतोअंताकारिनिहें॥तुमजिनिजानोंमोसोंओ
रनिकेंसुभाइं॥१॥यहअचिरजआवतइनिवातनिमानुक
रतिनहिमानतिमोसोंआएमनाई॥सूरस्यांमनावांमहिव
सकरिलीनीअंकलगाई॥२॥रागललित॥आजुअतिरोंनिंदु
नीदेलाल॥तुमपेंडेमेंचरनपलोटोंजियजानोंजिनिख्याल
१॥सुमनसुगंधसेजहेंडासीदेखतिअंगवेहाल॥मेरेकहेंनां
हुकछुभोजनकरोंनमदनगोपाल॥२॥निसिश्रमभयोंपीर
मोहिआवतिसुनतिपरस्परवाल॥सूरस्यांमसुनिवचन
कपटत्रियभरिलीनीअंकमाल॥३॥रागविलावल॥स्यांम
हिसुखदेंराधिकानिजुधामसिधारी॥चितनेंकहुतरनन
हीश्रीकुंजविहारी॥१॥रेनिविपनिरतिरसरहोंमोमनहिवि

॥सू॰सा॰ चारें॥ पियसंगके अंगचिन्हजे दर्पनमाहि निहारें॥२॥ कह्यौ बह
॥२८५ त्ति कहत न बनें मन मन अनुमानें॥ सूरस्याम संगनिसि बसी
नि हचें यह जानें॥३॥ राग आसावरी॥ चंद्रावली सखिन संग ली
नें राधा के गृह आई हो॥ आजु अंग सोभा कछु औरें हरि संग
रेंनि गुहाई हो॥१॥ अवलों नहीं दुराव रह्यो कछु कहों सांच हृ
म आगे हो॥ अधर दसन छत उरजनि नखछत पीक पल
क देखि पागे हो॥२॥ हम जानी तुम कहें प्रगट करि स्याम सं
ग सुख मान्यो हो॥ सुनहु सूर हम सखी परस्पर क्यों न रें निम
सगानो हो॥४॥ राग बिलावल॥ कहति सखिन सों राधिका तुम
कहति कहा री॥ मेरी सों के हसति हो सुनि चकृत महतारी॥१॥
पीक कपोलनि योलग्यो मुख पोंछन लागी॥ कहूं स्याम क
ह्यो मेरहीक बधो निसि जागी॥२॥ उरज कमज निज कर नवों आ
रहूप संवारत॥ सहज कछू क निसि में जगी बचननि समुझा
वत॥३॥ कहति औरकी औरई में तुमहि दुरैहौ॥ सूरस्याम सं
ग जो मिलों तुम सों न हि कें हों॥५॥ राग बिलावल॥ आजु बनी॥
नवरंग किशोरी॥ बिथुरी अलक कपोल पिलक करि डोरी॥१॥ क
नक लता मनों पवन झकोरी॥ अधर दसन छत कछु छबि
थोरी॥२॥ दर्पन लें देखो मुख गोरी॥ सुख लूटन आनि हि भई भो
री॥ सूर सखी डारत तृन तोरी॥३॥ राग टोडी॥ आजु बनी ब्रखभा
न कुवारी॥ गिरधर बर राधा तन नारी॥१॥ हम सों करनि दुराव
बृथारी॥ इन्हि बानन नितं लहत कहारी॥२॥ आलस अंग गम
रगजी सारी॥ ऐसी छबि कहि का लि कहांरी॥३॥ सूरदास छ
बिपर बलिहारी॥ धन्य धन्य तुम ऐसु कुमारी॥४॥ राग नट
में जानी हे रानि रे जिय की बात न माई अरु गात न चिन्ह कहें दे
त माई॥ आलस तनु मोरे भुज जोरें जन्हाई री अटपटात भा
री लागत मोहि सुहाई वाही पिय के मन भाई॥१॥ बेंन अंन
नेंन सें न देखि एरमी ले सिंगार हार बार बिथिर रहे री रति के
पति ऐसि को न जन नाई॥ सूरदास प्रभु को सुन जरि आली
तेरें अंग अंग भयो उद्योत न बह हिलनि मिलनि खिलनि की
तेरें प्रेम प्रीति जनाई॥२॥ राग सूहो बिलावल॥ नाहि दुरत हरि पि
य को परस॥ उपजत हें मनकों अति आनंद अधरनि रंग नें
ननि को अरस॥१॥ अंचेल गुडत अधिक छबि लागत नखरे

खाउरवनीवरस॥मनोंजलधरतरवालकलानिधिकवहुंप्र
गटदृतिदेतदरस॥२॥विथुरीअलकसुदेसदेखियतअमल
लतेंमिट्योतिलकसरस॥सूरसखीवूझेंहुंनवोलतिमोकह
धोंतोहिकोंनतरस॥३॥रागविलावल॥नोहिछाविराजेंरीव्रजरा
जकेसंगजागेकी॥वरसोंकरजोरिमिलिगनलालअरुएडोति
दृतिदृतिमुरिरहीअलककलसिआगेकी॥१॥कवहुंककवहूपल
करूपाकिरूपाकिआवतनैनभावनअखियांअरुणाभईप्रे
मपागेकी॥सूरदासप्रभुकोंजुप्रगटउमगेदेखतिस्यांमसुंद
रउरलागेकी॥४॥रागदेवगंधार॥अरीमैंजानिपाएचिन्हदुरैंनदु
राए॥अतिअलसानिजसानितिप्यारीस्यांमकेकांमपुराए॥१॥
कहांदुरावकरतिरीप्यारीकोटिकरेंमुखनेंनदुराए॥सुमन
हारसीमरगाजिडारोपियरंगरंगेंनिजगाए॥२॥प्रगटनहीतूंकु
रतिडरतिकेहिसुरतिसेजरतिकांमलराए॥सूरस्यांमतोहि
रसवसकीनीजातनमनविसराए॥५॥रागतोडी॥लालसोंरति
मांनीजांनीकहेंदेतनेंनरीरंगभोरा॥चंचलअंचलवक्रहिदु
रावतिरूपरासिअतिमांनहूमीनमंहूंउरधोए॥१॥पीककपो
लनितरिवंनकेहिगरुलमलायमोतिनछविजोए॥सूरदास
प्रभुछविपररीझेजानतहैनीसिनेंवकनमोए॥६॥रागरामकली
मोसोंकहांदुरावतिप्यारी॥नंदलालसंगरैनिवसीरीकोकक
लागुनभारी॥१॥लोचनपलकपीकअधरनिकोंकैसेंदुरतदु
राए॥मनोंइंदुअरुनरहेवसिप्रेमपरस्परभाए॥२॥अधरद
सनछतअतिसोभाउपमाकहीनजाई॥मनोंकीरफलवि
वचोचिदेंभख्योंनगयोंउडाई॥३॥कुचनखरेखधनुककीआ
कृतमनोंसिवसिरससिराजें॥सुनतसूरप्रियवचनसखीमु
खनागरिहसिमनलाजें॥७॥रागधनाश्री॥प्यारीसुनतसखीमु
खवांनीहसिमुसिकायरही॥नेंननिरहीलजायमुदितचित
मांनीवातसही॥१॥तोसोंकहांदुरावकरोंरीतूप्राननितेप्यारी
कहांकहोंवहमिलनिस्यांमकीक्रीडाकुंजनिकुंजघारी॥२॥र
तिसुखअंतरचीएकलीलाकहांकिधरोंदुराई॥सूरदासप्रभु
केगुनआलीचितह्वैरह्योंसमाई॥८॥रागसोरठ॥राधाजिनिग्र
वकछुदुरावें॥हाहाकरिचरननिसिरनावतिअपनीसोंदु
हिरावें॥१॥उहेंकृपामोकोंकहिप्यारीचरितकहांहरिकीनों

www.vallabhacharya-agrahara.org

।।सू॰सा॰ जोरसमेंतमगनभईहैंबोंनअंगसुखरीनों ।।२।। उछालेभ
।।१९६ योंसुधाउरघटतेंमुखमारगनसम्हारें ।। सूरस्यामरसछकी
राधिकाकहतननबनेंविचारें ।।३।। रागगोंडमलार ।। स्यांमरतिश्र
मसोंउहैंकीनों ।। कहतपुनिपुनिकहांअंबरतजिहुमेंरही
मकुचिगहिश्रापुलीनों ।।१।। कियोंतबनेंकहांकरीसारंगसों
सारंगधरधरनिचरनचांपी ।। सेससहसोंफननिमनिनकी
जोतिश्रतित्रासतेंकंठलपटायकांपी ।।२।। रहीउनकीटेकच
लेमेरीकहांधरनगिरिराजभुजसबलधारी ।। सूरप्रभुकेसखी
सुनहुगुनरेंनिकेवेपुरुषमेंकहांकरोंनारी ।।३।। रागबिलावल
धन्यधन्यवृखभांनकुमारी ।। गिरिवरधररसकीनेहरी ।। जोईजो
ईसाधकरीपियरतिकी सोसबउनकोंदीनेरी ।।१।। तोसीत्रि
याश्रोरकोत्रिभुवनपुरुषस्यांमसेंनाहींरी ।। कोककलापूर
नतुमदोऊश्रवनकहूंहुतिनाहीरी ।।२।। श्रेसेबसतुमभएपर
स्परमोसोंप्रेमदुरावेंरी ।। सूरसखीश्रानंदरसलारतिनागरि
कंठलगावेंरी ।।३।। रागबिलावल ।। स्यांमगएवृंदाकेधांम ।। कों
माकेगृहनिसिबसेपुरयोंमनकांम ।।१।। सांझगएकहिश्रायहैं
बहुनायकनांम ।। सेजसम्हारतिश्रासलेंश्रेसेहिंगईजांम ।।२
श्ररुनउदेंद्वारेखरेरतनभईतांम ।। रिसानिरहीमुहएडकेंम
नहीमनबांम ।।३।। लिखिश्रारअंगनाथिकेविनगुनडरदांम ।। सूर
दासप्रभुगुनखरेश्रालसतनुकांम ।।४।। रागबिलावल ।। श्रासु
श्रोरछविदेरकिशोर ।। मिलिरिसरुचिलोचनभएरीबनवि
तवनचितपराईबोम ।।१।। सोभितपीठिप्रगटकरकंकनसोभि
तहृदयहियेबिनुडोर ।। सोभितपीतवसनदोउरातेश्रधरनिश्र
जननेंनतमोर ।।२।। नखससिकन्योंश्रंगारश्रटपटेपाएमनहु
पराएचोर ।। फूलेफिरतदिखावतश्रोरनिनिडरभएहैंहसनि
श्रकोर ।।३।। कहततनबनेंसुनतहुनश्रावेंवेसंधिबरनतकवि
नकठोर ।। श्रबिरजहोतकोनइनिचातनिसूरग्रहनदेखबिन
भोर ।।४।। रागसूहो ।। श्रतिहिश्ररुनहरिनेंनतिहारे ।। मांनहुरति
सेंभएरगामगेकरतकेलिपियपलकनपारे ।।१।। मंदमंदडोल
तसेंकितसेसोभितमधुपमनोहरतारे ।। मनहुकमलसंपुट
महवीधेउडिनसकतचंचलश्रतिबारे ।।२।। झलमलातजमि
रेंनिजनावतरतिरसमतभ्रमतश्रनियारे ।। मांनहुसकलात

गतजीतनकोंकोंमवांनखरसोंनसवारे ॥ अरुफरातअलसा
तपलकपटमूंदनकवहूंककरतउघारे ॥ मनहुंमुदितमक
रंदमनिश्रंगनखेलतखंजरीरचचकोरे ॥४॥ चारुचारुअवि
लोकिनमिखियतकपटनेहमनहरतहमारे ॥ सूरस्यांमसुखदा
यकलोचनदुखमोचनरोचनरतनारे ॥५॥ राग विलावल ॥ नहि
नदूरनैननारतनारे ॥ मनोंचधूकवकुसमपरसोभितसुंदरा
स्यांमसिलीमुखतारे ॥१॥ कुटिलअलकरहि विधुपिवदनपर
मकुचसहितहरिनरमुनिहारे ॥ भोंहसिथिलमनुमदनधनु
कगुनगरेकोकनंदबांनविसारे ॥२॥ मूंदेउआवतआलसव
सछिनभएउघरतनउघारे ॥ सूरदासप्रभुसोईपेंकहोंतुम
भामिनिजहांरतिरनहारे ॥३॥ राग विलावल ॥ रतिसंग्रामवीर
रसमाते ॥ हंहपिसूरसिरोमनिअजहूंनहिनसमारतनाते
॥१॥ परिमललुवधमधुपजहांवेंठततेउडिनसकेनतेहिवंदन
छांते ॥ मनहुंमदनकेहंसरफावेफोंकनहूरीघातें ॥२॥ वेंठि
जातअलसानतउनीदेक्रमक्रमसुठतनहुंगाते ॥ मनोंभूरछाकदा
नारसलकछिनसकनाहिपराते ॥३॥ डगमगातघूमतजनुघायल
सोभासुभटकलाते ॥ सूरदासप्रभुरतिरनजीतेअवसकांतधो
कांते ॥४॥ राग विलावल ॥ नेंनसकोरेभएरंगराते ॥ मनहुंसुरंगसुमन
परसजनीपिरतभ्रंगमदमाते ॥१॥ प्रेमपरागपोखसीपलदलप्र
फुलितमदनलताते ॥ सुभगसुवासविलासविलोकनिप्रगट
प्रीतिकरितातें ॥२॥ तेसोईमारुतिमंदजसावरिमिलतमुदितछ
विपाते ॥ सीचेसरूपांममानिनिकरहितसोंकेलिकलाते ॥३॥ रा
ग रामकली ॥ आएसुरतरंगरसमाते ॥ मोंनहुंछिनुविश्रामनमि
तपियश्रमितभयेहेंताते ॥१॥ डगमगातमगधरतपगउठतन
वेगितहांते ॥ मनुगजमतचरनसंकरखरगहिअांनततेहिठांते
॥२॥ उरनखछतकेंकनछतपाछेंसोभितरहेंरुहिराते ॥ मदनसुभ
टकेबांनलागिमनोंनिकसिगएवेंहिघाते ॥३॥ सांचेकरतआप
नेबोलनिटरतनमरजादाते ॥ सूरस्यांमकहिगएआइहेंपगाधा
रेंतेहिनाते ॥४॥ राग विलावल ॥ आरुननेंनराजतप्रभुभोरे ॥ रतिसुख
सुरतकिएसुखिसंगामनोंजातसमरमनमेंसरजोरें ॥१॥ अतिछि
नीरअलसातलसेंगलिगोलकचपलसिथिलकछुथोरे ॥ म
नहुंकेमलकेकोसनमीनमउठतरहतछविछिपदलदोरें ॥२॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. सोभितसुभगसजलप्रतिकोरेंसंगमछवितारेरुनडोरें॥ मनोंभा
॥२८१ रतिकभवरमीनसिसुजाततरलचितवतचितवोरें३॥ वरनि
नजायकहांलगिवरनोंप्रेमजलधिवेलापलवोरें॥ सूरदास
सोकोंनत्रियाजिनिहरिकेसंगअंगवलतोरे॥४॥ रागविलाव
ल॥ काहेकोंपियभोरहींमेरेग्रहआए॥ इत्तनेंध्यानहमपेंकहां
जेरैनिरमाए॥१॥ नाहींकेंपगधारियेंचक्रतमेंजानें॥ बिनगुन
गडिमालारहीनाहिकहूंविहरानें॥२॥ आएहोंसुखदेंनकोंश्रे
सेरहितकारी॥ सूरस्यामतुमजोगकोंकोवैसीनारी॥३॥ राग
विलावल॥ कृपाकरिउठिभोरहीमेरेगृहआए॥ अवहमभईव
डभागिनीनिसिचिन्हदिखाए॥१॥ जावकभालनसोंदियेंनीकें
वसपाए॥ नैंनदेखिवकृतभईकौंपीनखवाए॥२॥ अधरनि
परकौंजरवन्योंवहुरंगकहाए॥ वंदनविंदुलीभालकीभुजआ
पुवनाए॥३॥ पहुंमोसोंतुमहीकहेंउरछतअरुनाए॥ सूरस्याम
जसरावि होंधनित्रियासहाए॥४॥ रागभेंरों॥ नाहुनहीकहेंसो
चतहों॥ जासंगरैनिविहातनजानीसोरभएतेंहिमोवतनहीं॥१॥
औरानिकोंछिनजुगवीततहैंतुमनिहचीतेनागरहों॥ हम
तनेंनजसातवारहीरतिसंग्रामउजागरहों॥२॥ मैंअवकह
तितुमारेहितकीताहीकेगृहसोयरहो॥ सूरस्यामवैसीत्रि
याकोंहूंवहुरसवातेंविनुनलहों॥३॥ रागभेंरों॥ हमहीपरपि
यरूखेहो॥ बोलतनाहींमूककवीरहेअंगरंगकछुदीनसेहो
१॥ तवतिनेंसन्तओराहिहितकीधोंकहूंतुमलूसेहो॥ तव
हंसिवसनमिलतआजुहिकछुऔरमणनिरूसेहो॥२॥ उ
गमगातपगऊनहिपरतहेंचितचंचलउतहूंसेहो॥ सूरदास
प्रभुसांचभाखिगएत्रियाअंगवलमूसेहो॥३॥ रागविलावल
हरषिस्यामत्रियवांहगही॥ वूकपरीहमकोंयहवकसोंआ
वतकोकहिगएसही॥१॥ रिसनिउठीफुहरायझटकिभुजा
छुवतकहांपियमरमनहीं॥ भवनगईआतुरहैनागरिजे
आईमुखसवेंकही॥२॥ मेरेमहलआजुतेंआवहुसोंहनंद
कीकोटिकहीं॥ सूरदासजवलोंजगजीउमिलोंनहीवरु
कांमरही॥३॥ रागनट॥ नागरिनिठुरमानगह्यो॥ पीठिदेंरिस
कांपिवेंठीफिरिनउतहिचह्यो॥१॥ स्याममनअनुमानकीनों
रिसनिव्याकुलनारि॥ तनकहींरिसखोयडारोंयहैप्रतिप्या

www.vallabhacharya-agrahara.org

धारि॥२॥सखीएकसुभावअपनीगएताकेगेह॥हृदचरितस
वकहूंतासोंचतुरिलख्योसनेह॥३॥गईआतुरनारिताकेलखे
नेननिकोर॥वहूतवालानंदसुतविनलह्योंहठकोछोर॥४॥
भुजागहिकहिकियेंकारीसहीव्रजकीग्वारि॥सूरप्रभुसोंमा
नकीनोंहृदेंराखिविचारि॥५॥राग॥कान्हरो॥वांहगह्योंगहिआ
गनल्याई॥वहुनायकउनकोंनहिजांनतिवडीचतुरहोंमाई
॥१॥मेंजोकहतिश्रवणसुनिचितधरिजोवनधनसपनेकोंं॥
हसिकहिल्याइअवहिमेंल्याऊंभवनधरोंअपनेकों॥२॥तुहि
गहतिविकनिंवांहजाइकेंमोसोंवांहगहांवति॥सुनहुसूरमे
सोंहकरीहैं॥तमोहिनहिमिलावति॥३॥राग॥कांन्हरो॥कहांकह
तितूंमिलहिरहीहैं॥मोसोंचरतिचकहोंचतुराईउनयहमेरुक
हीहैं॥१॥जोहठकरचोंभलीनहिकीनीएतेदिनऐसेनाहिं॥कें
यहईपियकोंनवुलावेंकेंतहईचलिजांहि॥२॥वेसवगुन
नायकतूंनागरिजोवनदिनदेंचारि॥सूरस्यामजोमिलिसु
खलाहिएपुनिपछितेहेंनारि॥३॥राग॥कान्हरो॥वहुरिपछिते
हेंरीव्रजनारि॥देखिजायठाढेमगजोवतसुंदरस्यामसुरारि
॥१॥ऐसीनिठुरनेंकनहिचितवतिवेंचलनेंनपसारि॥कहूंमा
खपाहठतनकोंदेखिदुख्यलेवारि॥२॥ताजिअभिमांनमानि
रीमाननिनिमेंजुकरतसुहारि॥सूरहूंसरवानीसुनधोखेंकव
हूंकखांतजुवारि॥३॥राग॥केदारो॥मोसोंमानिभावेंनामानिला
लमनाईहेंरीरी॥आंखिनमेंपेअनुहैं॥कनसकुचतिमेंतो
सवजांनतिपांवाननिमेंकछूपेयतुहैं॥१॥मेरोंविलगमान
तियहजांनतिऐसीप्रीतिकोंनदुरियतुहैं॥सूरस्यामन्या
रेनवूझियेंयहमोकोंनहिभावेंकाहूकोंअनखेईयतुहैं॥२
राग॥विलावल॥वहुरिमिलोंगीकालिहीचितससुफिसयांनी
मोंकह्योनकोंकरेंवयोहोंहिसयानी॥१॥अनलहिवोंघर
अनलहेंसवजांनिरहीहों॥काहूकोंहठकरतिहोंवेकाजवही
हों॥२॥धामनीधरव्याकुलभरीगवेंगहेली॥सूरकह्योसुनि
मांनिलेमेंकहतिसहेली॥३॥राग॥सोरठि॥स्यामधरचोत्रियमों
हनरूप॥दूतीप्रियासंगएकलीनीअंगमात्रिभंगअनूप॥१॥अं
तरह्वाएआयभयेठाडेसुनतत्रियाकीवानें॥सरसवचनसुक
हतिसखिआगेंकहोंमिलोंकेंहिनानें॥२॥कपटीकुटिलकू

www.vallabhacharya-agrahara.org

सू.सा ॥ रवकहिआवतयहसुनिसुनिमुसिकात ॥ सूरदासप्रभुहैंबहु
१८८ नायकतुहीकहतियहवात ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ जौलोंमाईहोंनी
वनभरिजीऊं ॥ नवलगिरिधरनगोपाललालकेपंथनपानीपी
ऊं ॥ १ ॥ करोंनअंजनधरोंनमर्कनगहमरतनुनलगाऊं ॥ हस्तव
लयकरिनापटुमेचककंठनपोतिवनाऊं ॥ २ ॥ सुनोंनश्रवण
निअलिपिकवांनीनेंननवघनदेखों ॥ नीलकमलकाध
रोंनकवहूंस्यांमसरीसेलेखों ॥ ३ ॥ इतनीकहतआयगयेमोह
नलिएप्रियदूतीसंग ॥ छूटिगईरिसटेकमानुकीनिरखिरसि
कवरकेअंग ॥ ४ ॥ अतिरतिलीनभईभामिनिसंगतवगाहितवक
रलीनों ॥ सूरदासप्रभुरसिकसिरोमनिमिलिजसुधासुख
दीनों ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ कवियांवतहरिमोहननांम ॥ गाढेंमा
तुदूरिकरिडारोंहोंहरखभईमनवांम ॥ १ ॥ ऐसेचरितनअौरको
जांनेंधन्यधन्यनंदलाल ॥ जोएतनतोंहरतप्रियनिमनअ
तिदूरिखितनभईवाल ॥ २ ॥ मिथ्योंकांमतनतामतुरतहीमिलई
मदनगोपाल ॥ सूरस्यांमरसवसकरिलीनीदेहैंरच्योएकखा
ल ॥ ३ ॥ राग गौड मलार ॥ स्यांमगुनरासिमांनिनिमनाई ॥ रह्योरसप
रस्परमिथ्योतनुविरहदूरभयेंआनंदत्रियउरनमाई ॥ १ ॥ कव
हूरतिसहजनकवहूंकरतिविपरीतिवामरहतेसवेरेंनिवीती
अमितदोउअंगमांवाप्रतितिहिविहवलपरेसेजरतिजीतिव
दीप्रीति ॥ २ ॥ भोरभएचलेनिजमदनपितमातकेफिरसकुचे
देखिनंदद्वारें ॥ सूरप्रभुस्यांमसकुचिगएप्रमुदाधामकहति
एगुनभलेहरितुसारें ॥ ३ ॥ राग गौड मलार ॥ कहांहेस्यांमकहां
गावनकीनों ॥ कहांतुमरहतकवहूंदरसदेतनहिधोखेंगए
आइहमसांनिलीनों ॥ १ ॥ नेंनआलसभरेचरनडगलरखरेक
हांहोंदुरेसेकहोंमोसों ॥ रेनिकहूंवसेत्रियकोंनसेंरसेहोंउनक
रजकसेसोकहोंमोसों ॥ २ ॥ भलेजूभलेनंदलालवेउभली
चरनजावकपागजिनाहिरंगी ॥ सूरप्रभुदेखिअंगअंगवान
ककुसलमेंरहीरीमिवहनारिचंगी ॥ ३ ॥ राग कान्हरा ॥ सुनतह
सिचलेहरिसकुचिभारी ॥ यहकहोंआजुहमआयहेंगहतु
वतरकजिनिकहोंहमसमुझिडारी ॥ १ ॥ नारिआनंदभरीरां
गासीहेंदरीद्वारअपनेखरीअंगपुलकी ॥ गएकहिसूरप्रभु
रेंनिवसिहेंआजुसजतिश्रृंगारकछुसकुचकुलकी ॥ २ ॥ राग

www.vallabhacharya-agrahara.org

कल्यान ॥ अंगअंगशृंगारसुंदरिबनावें ॥ मिलैमोहीस्यामनिजधाम
कहिआजुहीरेंनिविलसोंकाममनमनावें ॥ १ ॥ तरससुमनों
जातसीसकरसोंकरतिश्रीवंतअलकपुनिपुनिसवारें ॥ मांग
सुधीपांतिनिरखिदर्पनरहतिग्रंथिकवरीछांहूयांटनिहारें ॥
२ ॥ कमलखंजनमृगजमीनलोचनजीतसारंगसुतलेतिनहूं
आजें ॥ हासुरधरतिनिरखिसिखहूंभूखनभरतिसुरप्रभुमिल
नहितनारिराजें ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ विधुवदनीअरुकमलनिहारें
सुमनासुनलेंकमलनिमजातिधनिपितधामकोंनामसवा
रें ॥ १ ॥ नरननितानवनितासुतनाछविकमलनरुचिरचिग्रंथि
नवारें ॥ कमलकमलपररेखवनावतिसारंगरिपुपाहनगा
तिटारें ॥ २ ॥ उरहूहारावलिमेलतिकमलनिमनहूइंद्रपारसोहि
गपारें ॥ सूरस्यामकेनामहिजीतनकमलापतिकेंपदहिविचा
रें ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ अंगसिंगारिसवांरिनागरीसेजरचतिहसि
आवेंगो ॥ सुमनसुगंधरचतिनापरलेंनिरखिआपसुखपावेंगो ॥
१ ॥ चंदनअगरकुमकुमामिश्रितअरगजाअंगचढावेंगो ॥ मेंमन
साधकरोंगीसंगमिलिवेमनकीमधुरावेंगो ॥ २ ॥ रतिसुखअंत
भगेंगीआलसअंकभरिरसलावेंगो ॥ रसभीनरसेंमानुक
रेंगीवेगहिचरनमनावेंगो ॥ ३ ॥ आतुरजवदेखोपियनेंननि
वचनरचनसमुफावेंगो ॥ सूरस्यामजुवतीमनमोहनमेरेमन
हिचुरावेंगो ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ नंदसुवनवहुनायकौअनतहि
रहेजाई ॥ वहसांझमिलनककरतरहीताकोंविसराई ॥ १ ॥ वासर
गेमेंहीगयोनिसिजामतुलानी ॥ नारिपरीअतिसोचमेंविरह
अकुलानी ॥ २ ॥ आवनकहिगएसोकहांअजहूंनहिआए ॥ कें
धोंकरहूंरमिरहेफिरपरेपराए ॥ ३ ॥ वेईहेंवहुनायकौनाय
कगुनभारी ॥ सूरस्यामकुसुदांभवनसुधिकरिपगधारी ॥ ४
॥ राग केदारो ॥ रहेहूएरेंनिकुमुदगृहे ॥ परस्परदोउप्रेमभीजे
चख्योंअतिहिसनेह ॥ १ ॥ एकछिनएकजामवितवतिकोंसर
सवसगात ॥ तांहिवीततजामजुगसवगननतारागात ॥ २ ॥
उनहिवेसयाहिऐसेरजनिगईभयोभोर ॥ सूरमोकोंकरिच
तुराईगएनंदकिशोर ॥ ३ ॥ राग नट ॥ कुटिलईकरीहूएमोसों
चितभरिसुरएकरतिमनगोसों ॥ १ ॥ कहिगएनिसिआइहेंह
रिअनततविरमेजाइ ॥ रेनिवीतीउदितरनिकरदेखितियमुर

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. गाइ॥ ४॥ भवन नहीं मन मारि वैठी सहज सखि एक आय॥ देखि
॥१९८ तन प्रति विरह वाला कहति वचन सुनाय॥ ३॥ वोलि ढिग वै
ठारि ताकों पोंछि लोचन लोर॥ सूर प्रभु के विरह व्याकुल सखी
लखि मुख ओर॥ ४॥ राग गोरी॥ आजु विन आनंद कों सुख तेरों
कहां रही मन मारि भोर ही अति व्याकुल मन मेरों॥ १॥ मोसों गो
प करों जिनि सुंदरि नहिं पावति वहु भाव॥ सुनों वात कैसी उप
जी है कछु जिनि करें दुराव॥ २॥ तव मधुरी वांनी सों वोली कहां
कहों री तोहि॥ तेरे स्यांम भले गुन नागर कपटी कुटिल कठोहि॥
३॥ निसि वसि वे की अवधि वदी मोहि सांझ गए कहि आंवन॥
सूर स्यांम अनत हि कहूं लुवधे नेंन भए दोउ सांवन॥ ४॥ राग सो
रठ॥ ऐसे गुन हरि केरी माई॥ में पाहिचांनि रही हों ना कें कुटिल
सिरोमनि राई॥ १॥ अव मो सों उन सों कहि वनि है कछु में गई वु
लावन॥ आपुहि कालि कृपा यह कीन्ही आजि रैं कहि गए पाव
न॥ २॥ तो वें जो मिलें कहूं मेरी सों तिन सों सहुते (?) कहिए॥ सूरदास
प्रभु वोलनि सों वे लाज कछू जिय पइए॥ ३॥ राग विहागरो॥ स
खि री ओर सुनहुं एक वांत॥ आजु गोपाल हमारें आए उठि कपि (?)
नहिं मिस प्रांत॥ १॥ कनहुं हैं उनी दे मोहन अपने गृह तें जात
आमों द्वार नें रहे है ठाढे लोचन गए न सकात॥ २॥ डगमगात मग
धरत परत पग आलस वंत जम्हात॥ मांनहुं मदन दंड दे छां
डे चुट की दे दे गात॥ ३॥ तो कहौं कहां रहे हो मोहन तों सनमुख
मुसिकात॥ गाते कछू न उत्तर आयो सूरस्यांम सकुचात॥ ४॥ रा
ग केदारो॥ तव हरि प्रिय हवतुरई करी॥ कहों मेरे धाम आवन टा
ल दे गए हरी॥ १॥ आपु ही श्री मुख गए कहि सही कैसी परी॥
सेज रचि सव रेंनि जागी तव रिस निहों जरी॥ २॥ स्यांम देखे
द्वार ठाढे मन हीं मन दुरहरी॥ कहति सूर सुनाय हरि कों ध
न्य यह सुभ घरी॥ ३॥ राग विलावल॥ ऐहें कही कहि मों न रही॥
मन मन कहति दरस अवकी नों निमिस व विरह दही॥ १॥
मधुरे वचन सुनाय सखी सों रिस वस भरे कही॥ आए कहां
जाहु ताही वें चतुर त्रिया ढिग ही॥ २॥ वा विन उन कों कों न मि
लेंगी नहिं कोऊ फिरति वही॥ सूरज प्रभु इत कों जिनि आवें
पगु धारें उतही॥ ३॥ राग कांनूरो॥ सखी निरखि अंग अंग स्यां
म के॥ चोहूं वें दन कहूं वंदन रेखा कहूं काजर छवि लखति वां

www.vallabhacharya-agrahara.org

मवे॥४॥आलसभरेनैंनरतनारे चतुरनारि संमझ गेजांमके॥अ
पनेमनयहसोचकरतहीपरीत्रियाफिगाकठिनतांमके॥२॥
मानुकियोंमोतनाफिरिवैठेआईहैंयहसुननतामके॥सूरस्यां
मएकवुद्धिविचारीमनमोंहनरतिसहितकांमके॥३॥राग
मल्हार॥ स्यांमसेंनरेंसखीवुलाई॥यहकहिचलिजाऊंगहरुअ
पनेतूतोमानुकियोरीमाई॥१॥अंतरजायभएहरिठाढेसखी॥
सहजनिकसीनहजाई॥मुखनिरखतदोउहसेपरस्परभव
नजाहुमेलेंहुमनाई॥२॥अंगादिखायगईहहि॥प्यारीसुरतचिन्ह
नीकीसुघराई॥सूरजप्रभुगुनपालरहेकोंजानिवूझिकीनीधि
सहाई॥४॥राग गौरी॥ सखीगईकहिलेहुमनाई॥जानतिमनि॥
विद्यामनिगुनमनिचतुरनिमनिचतुराई॥१॥प्रियाहेरैंयहवु
द्धिउपाईछांतोंनहीकन्हाई॥आतुरचलीजमुनजलखोरनका
हूंसंगनलगाई॥२॥पहुचीजायतरनितनयाहेंन्हायचलीअ
तुराई॥सूरस्यांमभारगभयेठाढेवालककोंहनराई॥३॥राग वि
लावल॥पांचवरसकेलालकेंत्रियमोहनआए।नागरिआगे
हुंगईतवबोलिसुनाए॥१॥कहोंकहांरीजांतिहैंकाकीतूनारी
मोहिपठाईस्यांमलेंनताकीवरप्यारी॥२॥यहसुनिनारिचकृत
भईआपुनहिंआए।तवकरसोंकसाहिलियोदेखतमनभा
ए॥३॥अगमचरितप्रभुसूरकेनेकलखेंनकोई॥स्यांमनामश्रवण
निपरयोंहरखीसुखजोई॥४॥राग रामकली॥हरषिनिरषिरूप
अपार॥गह्योंकरसोंमदनलपाईजांनिगोपकुमार॥१॥स्यांममो
कोंवोलिपठईकहतुहैंयहहाल॥भवनलैंइनमेदयौनहींसु
नोंबचनरसाल॥२॥हर्षेआनंदभईवालाप्रेमरसवेहाल॥कु
वरअंतहपुरगईलैंरच्योंहरितहंख्याल॥३॥तरुनकेंकरउर
जपरमेदियोंअंचलडारि॥सूरप्रभुहसिलईप्यारीभुजनिअं
कमधारि॥४॥राग टोडी॥मुखनिरखततियचकृतभई॥जोरे
खेंअतिनरूनकन्हाईयहकोलखेंदई॥१॥छांडिदेहुअैसेमन
मोहनहसिमनलाजितभई॥एसेछंदरचतधनिधनिपिय
कीनीकरनिनई॥२॥अंकमभरित्रियकंठलगाईकुचरखवा
पिलई॥सूरस्यांममानिनिमनमोहनरतिरससोंभोगई॥३॥
राग विलावल॥स्यांममनायमानिनीहरषितभईअंगा॥रेनि
विरहतनुकौंगयोंजेकरेंअनंगा॥१॥सुतामहरिवृखभांन॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

कीसुधिकीन्हीस्यांम॥ताकोंसुखदैंहूरिचलेप्यारीकेधाम॥२॥पा
रीआवतिपियलखीचितईमुसिक्याइ॥जियडरपेंमोहिदेखिकें
सुखकह्योंनजाइ॥३॥अबनिपियहिउचितायहोंमोकोंसनमा
न॥त्रासकरतमेरीजितीआवतसकुचात॥४॥आंनिद्वारठाढे
भएनायकबहुनांम॥सूरजप्रभुअंगसहजहीनिरखतिरुचि
वांम॥५॥रागगोडमलार॥श्यामदरवामनिजधामआए॥उत
हिप्रभुराधामसखीसहजहिगईअंगकेचिन्हकछुऔरपा
ए॥१॥देखिहरखीनारिसकुचदीन्हींडारिअतिहिआनंदभरी
स्यांमरंगी॥सखिबूझतिनाहिहसतितामुखचाहिस्यांमकों
मिलीरीबनिअंगी॥२॥कहनलागीकहांकहतितूआजुपोहि
नाहीनाहिकरतिदुरतिकेसें॥मिलेप्रभुसूरतोहिजांनियहु
चतुरईनहींतूंकरतिनहिलखतिजैसें॥३॥रागसुहौ॥नैननातें
अतिरंगीलेचिहुरछूटेछबीलेकाजरपीकलागीलेंआर
सीदेखि॥मरगजेबसनअधरदसननिसानकहुंकहुंबनीकें
लागीचंदनरेखि॥१॥काहेकोंतूमोहिदुरावतिजानीअरसपर
सछबिसेख॥सूरस्यामप्रभुनंदसुवनसंगअबहीसुरतरंगकों
सोंभेख॥२॥रागबिलावल॥अबतुकहांदुराबेंगी॥मोहिकहति
नहिकाहिकहेंगीकबलोंबातलुकावेंगी॥१॥मोसीऔरकों
नप्रियतेरेंजासोंप्रेमजनावेंगी॥मेरीसोंडनकीसोंतोकोंक
हांदुराएपावेंगी॥२॥औरनिसीमोहूकोंजांनतिमोनेंबहुरि
रमावेंगी॥सूरस्यामतोहिबहुरिमिलेहोंआखिरतोंप्रगटा
वेंगी॥३॥रागबिलावल॥प्रभुराअतिहरखितभईसुनिबात
सखीके॥रोमरोमपुलकितभईउपजीफबिहीके॥१॥कहति
अबहिंघांतेगएनंदसुवनकन्हाई॥चरितकहांउनकेकहें
मुखकह्योंनजाई॥२॥सांझगएकहिआइहैंमोसोंरीआली॥
अनतबिरमिकतहूंरहेबहुनायकख्याली॥३॥रेंनिरहीमें
जागिकेंभोरहिउठिआए॥मांनकियोंरिसपायकेंफलमां
हछिडाए॥४॥अगनितमितप्रभुसूरकेकहितोहिसुनाऊं॥
अबहीचरितकरिकेंगएतेईगुनगाऊं॥५॥रागरामकली
आजुसखीजमुनामगमोहनमोहिछंदीछंदलाई॥कोतू
आहिकोंनकीबनितावातएकसुनिआई॥१॥बिहसिकह्यों
मोहिस्यांमपठाईसुनतबिरहगतिभूली॥रतिजिलजलज

www.vallabhacharya-agrahara.org

थि॥ वोहुलस्यों मन पुलक पा खुरी फूली ॥२॥ जांनि कुमार गयौ
कर सौं कर ल्यावौं भवन बुलाई ॥ नैन मूंदि अंचल गहि ड्राह्यौं
मैं माधौं मिलि आई ॥३॥ छैल छबीलौं बरनावि लोकौ सकु
चि रह्यौ मुसिकाई ॥ छांडहु सूरस्यांम यह तुमरी आवन जांनि
न जाई ॥४॥ राग धनाश्री ॥ आवत ही मैं तोहि लख्यौ री ॥ तुम हूं भली
उनकौं मैं जांनति अधर बिंब मनों कीर भख्यौं री ॥१॥ अंग अंग सजे प
टोरी देखी उरन खछत छबि भारी ॥ धनि वे नंद सुवन धनि नागा
रि कियौं सुरत रन हारी ॥२॥ हंसन गई सखि भवन आपने मन आ
नंद बढाए ॥ सूरस्यांम राधिका धांम के द्वारें सो मन बाए ॥५॥ राग बि
लावल ॥ भली करी पिय ऐसें हूं मेरे गृह आए ॥ लोने कंठ लगाय कें
बडभागिन पाए ॥१॥ कहां सो बनिय करत हौ भुज गहि करली नों
गई भवन भीतर लिए तहां वें छकरी नूं ॥२॥ स्यांम सकुच अंग हेरत
हि नागरी पहिचानी ॥ चिन्ह निहारत उर कहौ आवति ही जांनी ॥३॥ या
छबि पर उपमा कहौं जो त्रिभुवन हेरे ॥ तुम जांनत यह रूप कों अ
रुल खैंन कोई ॥४॥ चंदन बंदन पांन रंग अधरनि काजर छबि ॥
सूरस्यांम उर कंज कों कों बरनि सकै कवि ॥५॥ राग बिलावल ॥
काहे कों पिय सकुचत हौ ॥ अब ऐसो जिनि कांम करौ कहूं जो अ
तिहीं जिय सकुचत हौ ॥१॥ अब की चूक न हौ पिय मेरें औ प्रस्न नि
केतें जांनि रहौ ॥ सो हक को मेरी सो आगें डर डारो जिनि मोन गहौ
॥२॥ यह सुनि स्यांम सखि कुच परसे बार बार सिव सोंह करी ॥ सू
रस्यांम गिरधर सुन नागर बात आपुने सहीं परी ॥३॥ राग बिलाव
ल ॥ स्यांम मोहि कुच पर सकियों ॥ नंद सदन ते अब ही आवें और
त्रियनि कौं तें मिलियो ॥१॥ ऐसी सपत करौ काहू कों जो कछु आ
जुनें करी सु करी ॥ अब जो कालि तें अनत तासि धारौं तब जानोंगे
तुम हि हरी ॥२॥ मैं सति भाव मिली हूं सि तुम कों कहां आज की ॥
सौंह करौं ॥ सूरस्यांम जो भई सु भई जू अब तें सब कों नेम धरौं ॥३
॥ राग गौड मलार ॥ अहो राजत राजीव नैन मोहन छबि उर माल त्रा
रंग लाग ॥ जिहि बनिता रस बस कीन्हे निसि प्रगट होत अनुराग
॥१॥ सिथिल अंग उर सिथिल पाग बनि सिथिल चरन गति आज
मन हुं सेज रे बाहु हते उठि आवत तुहें गजराज ॥२॥ भाल मध्य जाव
क रंग देखत लागति हैं मोहि लाज ॥ तुम अपने जिय सों जांनत
हौ तिलक लौं कत ई राज ॥३॥ हंस बंधु बर लोचन ललन ॥ मिल॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ तिनिमारूतकाज॥ बदनचंदबियसंधिजांनिनहिं बाटतकिर
॥२९२ नमलाज॥४॥ भवनजीवसुतलग्योंअधरपरयहछवि॥ कही
नजाय॥ मनोंबंधुकुसमनऊपरबियअलिसुतवैठेआइ॥५
कुचकुमकुमअवलेपनतरुनीकीए सोभितस्यांमलगात॥
मतपतंगराकाससिविचिसंगाघटासघनसोभात॥६॥ स्यांम
हृदयलछनताऊपरलगीकरजकिनरेख॥ मनहुवसंतराजरू
चिकीरतिअरुनकिसलतरभेख॥७॥ कांमवांमवरालिएपंचवि
नवतप्रतिअंगअंगलाग॥ अकनजांनगरहूहेउपियारेजवआए
तवभाग॥८॥ ताहिदिनतेंवृखभांनननंदिनीअनतजांननहिंदीनें
सूरदासप्रभुप्रीतिपुरातनएहिविधिरसवसकीनें॥९॥ अ
वडु मांन॥ रागबिलावल॥ सखियनसंगलेंराधिकानिकसीव्र
जखोरी॥ चलीजमुनअस्नानकोंप्रातहिंउठिगोरी॥१॥ नंदसुव
नेजागृहवसेतेहिबोलनआई॥ जायभईद्वारेंखडीतवकछुक
नूई॥२॥ औचकभेटभईतहांस्यचक्रतभाएसेऊ॥ इतनेंवेउनहितें
नहिंजांनतकोऊ॥३॥ फिरीसदनकोंग्वारीसखिनिरखतिठा
ढी॥ ग्यांनरांनकीसुधिगईअतिरसतनुबाढी॥४॥ स्यांमरहे
मुरझायकेंठगमूरीखाई॥ कांन्हजहांकेतहांरहेसखियनिसम
झाई॥५॥ इतनेहीकेकेंमनमाहिंबांहलेंआई॥ सूरजप्रभुकोंलें
तहांराधाहिखराई॥६॥ रागरामकली॥ राधास्यामहिंसेषिआई
महमांनदृढबांधीवीचिनेकापेंजाई॥१॥ रिसहिंएसभईमग
नसुंदरिस्यांमअतिअकुलात॥ चकृतकेंजकिरहेठठकाहि
नआवेंबात॥२॥ दृष्टिव्याकुलनंदनंदनसखीकरतविचारसु
रदेऊमिलेजैसेंकरोंसोईउपचार॥३॥ रागकांन्हरों॥ सखीएक
गईमाननिपास॥ लखतिनहिंकछुभावताकोंमिटीमनकी
आस॥१॥ कहूंकासोंकोंनसुनिहेंरिसतिनातिअचेत॥ बुझिसो
चतित्रियाठाडीनेंकनहीसुचेत॥२॥ स्यांमव्याकुलअतिहिं
आतुरएहिंकियोंहरुमातु॥ सूरसहचरिकहतिराधावडीव
तुरसुजान॥३॥ रागकांन्हरों॥ नाहिंनेंरीअतिहठनीकों॥ मौंका॥ सु
धोंसुनहुब्रजसुंदरिमांनिमनावोंनागरपीकों॥१॥ सोइअति
रूपसुलछननारीरीझेजांहिभांवतेजीकों॥ प्यासेप्रांनजाइ
ज्योंजलविनुपुनिकहाकीजेसिंधुअमीकों॥२॥ तैसेंजोमानु
तजहुगीभांमिनिरविकोरसमिकांमपलपीकों॥ कीजेंकहीं

www.vallabhacharya-agrahara.org

समें वितु सुंदरि भोजन पीछें अचवन घी कों ॥ ३ ॥ सूरसुरूपगार
वनो वनके जांनति हों अपने सिरटी कों ॥ जाके उरें अनेक अ
कासत ससि हि कहां उर कमल कली कों ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ चितई
कमलनेंनकी कोर ॥ मनमथ वांन दुसह अनियारे निकसे फूटि
हियें वोहि ओर ॥ १ ॥ अति व्याकुल धुकि धरनि परें जिमि तरुन त
माल पवनके जोर ॥ कहुं मुरली कहुं लकुट मनोहर कहुं पटुक
हूं चंद्रिका मोर ॥ २ ॥ स्वन बूडत स्वन हीं स्वन उछरत विरह सिंधुके
परे झकोर ॥ प्रेम सलिल भीज्यो पीरें पट पर्यौ निचोरत अंचरा छोर
॥ ३ ॥ फुरें न वचन नेंन नहिं उघरत मांनहु कमल भए विन भोर ॥ सूर
सु अधर सुधारस सींचहु मेंटहु सुरस्यांम रसिक सिरमोर ॥ ४ ॥ राग नट
तेरे नेंन कि धोंरी वांन ॥ पामारें ज्यों मुरछि परे घर वेगों करि सारंगा
प्रांन ॥ १ ॥ खग पर कमल कमल पर कदली कदली पर हरि ठां
म ॥ हरि पर सरवर सरवर पर कलसा कलसा पर ससि भांन ॥ २ ॥ सा
सि पर बिंब कोकिला नाचि वकी रुकरत अनुमांन ॥ चिवि चिवरा
मिनि दुति उपजति मधुप जूथ अरस मांन ॥ ३ ॥ तून नाग रि सव गुन
नि उजागर पूरन कला निधांन ॥ सूरस्यांम तारे रसन कारन व्या
कुल परे अजांन ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ पहिले ही तुरू सिवे की नाहीं ॥ वरष
त मेह में दिनां के हित प्रीतम हूं राखि मिलाहीं ॥ १ ॥ जेत मालग्रीष
म रितु डाहीं ते तरुवर अपटांहीं ॥ जे जल विन सरितापें पूरन मि
लन समुद्र न जांहीं ॥ २ ॥ जोवन धन हैं घोस चारि कों समुझि चतु
र मन मांहीं ॥ सूर सुनत उठि चल हूं राधिका दें दूती कहें वांहीं ॥ ३ ॥
राग सोरठि ॥ राधे हरि रिपु क्यों न छिपावति ॥ मेरु सुता पति पति
ताके सुत ताको क्यों न मनावति ॥ १ ॥ हरि वाहन ता वाहन उपमा
सोतें धरें दुढावति ॥ नव अरु सात बीस तोहि सोहत काहें गहरु
लगावति ॥ २ ॥ सारंग वचन कह्यो करि हरि कों सारंग वचन नि
भावति ॥ सूरदास प्रभु दरस विना तुव लोचन नीर वहावति
राग विलावल ॥ एहिं तेरे ब्रज वन वाग ॥ सुनि राधिका करें व वि
टप की साखा एक अमी फल लागा ॥ १ ॥ स्यांम अरुन कछु अधि
क पीत छवि वरनि जाय नहिं अंग विभागा ॥ अति सुपक्व मुरली
के परसत उडुखुडु परत उमगि रस रागा ॥ २ ॥ ब्रजवनिता वरवारि
कनक मय रोकें रहत सुधा सुर नागा ॥ तुव प्रताप छूय सकत
न सुंदरि सुक मुनि मर्कट कोकिल कागा ॥ ३ ॥ मेंमालि निज तन

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. निजलजुगयोंसीचतमुह्य परेकरराग॥ सूरसुप्रमउठिभे
॥१५२ टिपरस्परपितुपितुपितुरवपाएवढभाग॥४॥ राग रामकली॥
रसिकराधेबोलीनंदकुमार॥ दरसनकोंतरसतहूंलोच
नतूंसोभाकीधार॥१॥ खंटरीटमृगमीनमधुपमिलिरंभार
चिअनुसार॥ गोरिसकुचिससिविरपाकियोंरथमेरुलुप्यों
वडितार॥२॥ कोंनहेतनेंमिथ्योंसिनामितविछुरीकोंनविचा
र॥ मंदाकिनिमानोंसिरधरिकेंरुद्रनिकरीपुकार॥३॥ राख्यौं
मेलिपिठीतेंपरधनहरंजुकियोंविनहार॥ सूरदासप्रभुसों
हठकीनोंउठिचलिकोंनसवार॥४॥ राग विलावल॥ जलसुत
प्रीतमसुतरिपुवंधवआयुधआलनविमरवभयोंरी॥ मेरु
सुतापतिवेसुतमाथेंकोटिप्रकासरिसायगयोंरी॥१॥ मारु
तसुतपतिअरिरिपुवासीपितवाहनभोजनसुहाई॥ हर
सुतवाहनअसनसनेहीमांनहुअनलदेहलाई॥२॥ उदधि
सुतापतितासकरवाहनतावाहनकेसेसुहावें॥ सूरस्यांमभि
लिधर्मसुवनरिपुतात्रवनारहिलसीलवहावें॥३॥ राग अडा
नों॥ मोहननीकोंरीभातिनीकोंतासोंनरुसनकीजेंहितुकें
मनायलीजेंहूसनहूसनदीवेकरेंनारिमनीकों॥१॥ भ्रातिहूमा
निनीजेजेनेतेउमेंमनायदई भ्रातिहीकठिनहठदेष्योरीनों
त्रियकों॥ दूसरीजामिनीगईसोतोपोनहठीलीभईसूरनिर
खिमुखदेखोंप्यारीपीकों॥२॥ राग विहागरो॥ औरसखीएक
स्यांमपठाई॥ हरिकोंविरहदेखिभईव्याकुलमानमनावन॥
आई॥१॥ वेठीआयचतुरईकाछेंतहांकछुनहीलगाई॥ देख
तिहोंतवऔरदसाकछुवृतिवारंवार॥२॥ मनमनखिजति
मानिनीयाकोंकोनेंयहांपठाई॥ सूरसवनिकछुमांनमना
योंसोसुनिकेंयहांआई॥३॥ राग मलार॥ सुनिरीसयांनीत्रियारु
सिवेकोंनेंमलीयोंपावसदिननिकोउऐसोहूंकरतरी॥
दिसिदिसिघराउठीमिलिरीपियसोंरुचीनिडरहियोहूंतेरों
नेंकनडरतरी॥१॥ चलिएरीमेरीप्यारीमोकोंभावेंरेंनहूपीप्रा
नहूतेप्यारोंपतिधीरनधरती॥ सूरदासप्रभुतोहिदेवोंचा
हेंदिनचितहसिकोंनमिल्योंतेरोनेंमटरतरी॥२॥ राग म
लार॥ सेजरचिपचिसाज्योंसघनकुंजनिकुंजविनचरननि
लागपोंछनियांधरकिरही॥ हाहाचलिप्यारीतेरोंप्यारोंचो

www.vallabhacharya-agrahara.org

किधौंकिपरेंपानकीखरकपियहियमेंखरकिरह्यौ॥२॥वातनिध
रतकांनतानहिंतेंमोंहवानतउनचलनिवांमआंखियांफरकि
रह्यौ॥सूरदासमदनदहंतपियप्यारीसुनिज्योंज्योंकह्योंत्योंत्यों
वरुउतकोंसरकिरह्यौ॥३॥रागकेदारौ॥तुतेंमोसोंवातनिकह
तिमाईचलेंगीकह्योंते॥काह्केकोंगहरुकीजेंविनुरपकह्योलीजें
दीजेंजायउतरुमेंआईह्योंजह्योंते॥४॥अनेंमंवीमानिनीयह्यपा
ह्नपूतरीभईवेंनेनवदतिओरजरानतह्योंते॥आईह्योंसपत
खाइजातनपरतपायसूरदासप्रभुनवलपह्योंते॥२॥रागसा
रंग॥होंतोंदूहुनिवगडेरिकीनी॥इतनेंएपठवनइमवेनाहिंमां
नतह्योंदूहुनिचकडोरिकीनी॥१॥कोधमेखसुखसुदेसनेंनमि
छविकोहिनआवेंआतुरह्वेंउठिधाईरावरेलीनी॥तामसरस
लोचनहावभावबिनाकरेमानेंनमानिनिमानरंगभीनी॥सू
रजप्रभुरायसिरोमनिआपुहिंचलिरेखोंकोंगनायकानवी
नी॥२॥सारंग॥होंपियरीझिआई।गईह्योंमनुछिडावनपियारी
फिआई॥१॥ऐसीछविराजतहेंमोंपेंसवरनीनाहिंजाई॥आप
हिवलियेंवदनरेखियेंजोलोंरहेंनिठुराई॥सूरस्यामप्यारी॥
अतिराजतिराजवरीदुहूई॥२॥रागकल्यान॥मैंतुमहसनखेलन
धांऐगईअवन्यारेन्यारेअनबोलेह्वेरहेंदोउ॥इनतुमहखेके
रहेंगिरिधरउनअनबोनीअंचलउरमाइमुखजंघलगाय
रिवेउं॥१॥नीचवहाईकरिधरनीनखकरोवतिएहांपियातव
हांएकटकधूंधरतनचितेरह्योआहिंकह्योंह्योंकरोंअवमो
ऊं॥सूरदासप्रभुप्यारेओरकोंभेटिजायलीजेंछांडोंछांडोंक
हनदेउऔरनमानेंकोऊ॥२॥रागईमनि॥अजहूंरेंनितीनिजा
महेंजूकाह्केकोंहरखरातस्यांमजू॥मनोंवाकीप्रकृतिलियेंल
खिकेंह्योंवातजोपेंरिसदेखिह्येतौघरीकुंल्नागिहेंतिहारीप्या
रीलाडिलीवांमहेंजू॥१॥पेंजाकियेंजानितनहिंअवलिएआव
तिह्योंमेरेतोतिहारेंसुखहेंयातेकोंनकामहेंजू॥२॥रागसा
रंग॥जह्योंवेठेमाधोंतह्योंतेंबुलाईराधेजमुनानिकटसीतल
छांईऔ॥आछीनीकीलागतिकसूभीसारीगोरेतनुपरम
चतुरिचलिहरिपहिंओ॥१॥दूतीएकगईमोंहनपेंजायकह्यो
यहपियकहिओ॥सूरदासमुनिचतुरराधिकास्यांमरेंनिकुंज
वनमहिओ॥२॥रागईमनि॥रसमेंरिसकीवातनवेरसकीजेंना॥

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू॰सा॰ भामिनीह्वोंपठईतोहिलेंनसांवरेतोहिबिनकछुनसुहात
॥२६३ ह्वाह्वाकरततेरेपाइनपरतिह्वोंछिनुछिनुनिसिघटतजात
१॥सूरस्यांमतेरोमगजोवतअतिआतुरअकुलात॥१॥राग बि
हागरो॥उतरुनदेतिमोहनीमोंनकेंरहीरी॥सुनिसबबातननें
कहूंनमटकीरी॥१॥अबधोंचलेंगीकबरजनीगईरीसबस
सिवाहनघरनीवेदेखिलटकी॥नेंनपीकरेअलोलधरेंरी
पांनिकपोलभुवनखलितबहनकछुमटकी॥२॥मुग्धबधु
रीमटकाहेकोंपरीहेंहठपरमभांवतीतूनागरनटकी॥भुवम
मोंनआएजुसपतमुनिबहुरिवेररह्योंहेंतमचुररटकी॥
सूरसखीजायबलिराधिकाकुंवरिखिलिआजुछबिनीकी
तेरआछेनीलपटकी॥३॥राग बिहागरो॥सर्वरीसर्वबिहानी
तोहिमनावतिराधारानी॥शुक्रउदेंहोंनलग्योजागेतमचुर
टेरिआईजुमगानी॥१॥प्रफुलितकमलगुंजारकरतअलिपी
रीपहेंफटीकुमुदिनिकुमिलानी॥सूरस्यांमवनसुरछिपरेहेंमा
नुनिवारोमोपरक्योंउहरानी॥२॥राग बिहागरो॥स्यांमाप्यारीबो
लनलाग्योतमचुरघटिगईरजनी॥अखिलमनमोहनअजना
यकठाढेसजनी॥१॥ठाढेहेंकुंजद्वारेलालितवेनुबजाईयो
श्रवनसुनतिकेसेंरहतिकेसेंतोहियेहसुहाइयो॥२॥तुमकुं
वरिव्रखभांनकीकछुनेहप्रीतिनजांनहुं॥कोहिपठईहरितो
हिकोहूनचितआनहुं॥३॥नंदनंदनकह्योअैसेंसुंदरीह्यांआइह्वों
औरनाहिकाजबनमेंनेंकमधुरसुरगायह्वों॥४॥सूर
प्रभुहिविचारिमनमेंप्रीतिसोउरलाइए॥यहेंपुनिपुनिक
हतिराधामनवांछितफलपाइए॥५॥राग केदारो॥मोंहनते
रेआधीनभएरीसकवतेंकीजतुरीगुनआगरीनागरी॥तेरे
अनउत्तरसुनिसुनिस्यांमहसीहंसिदेतनेंकचितेंइतनाग
री॥१॥तेरोईभागसुहागतेरोईअनुरागनेरेहीमाथेंरतीतरु
पउजागरी॥सूरदासप्रभुतेरोमगजोवततूहीतूहीरटला
गीजैसेंमुरानिभूलीबागरी॥२॥राग नट॥कुंजसदनमेंठाढेदे
खोअवियनिभरितवमेंजाउगीवालि॥मोपेंनदेखपरेंखरे
दुमआगरगाहेंअकेलेनेंकतूंठाढीहोंढिगचलि॥१॥तेरोरीव
दनप्रफुल्लितअंबुजहसिसूकेनेंनामेंदेखअतिआतुरअलि
सूरदासनंदनंदनप्यारेन्यारेनेंकनकीजेंह्वांह्वादूरिकरो

www.vallabhacharya-agrahara.org

मानेंमलि॥ ५॥ रागकेदारो॥ नेंरमानिवेहूनेंरी मानुनीकोंलाग
तश्रैसेहिराहिएजोलौंलालहीलेंश्राउं॥ श्रोरनिकीहांसीखे
लतिहूंगोंरूपाईमाई विरसमेंयहरसयहसुखमेंमनिश्रानि
दिखाउं॥ १॥ उलटिपियपेंजाउनोनमचौपचढाउसोरहकला
कोंसासिकहुविगासाउं॥ सूरदास प्रभुगिरिधरनसोंहिलिमि
लिपियामिलिवेकोंयहसुखरूपश्रनूपमपाउं॥ २॥ रागवि
हागरो॥ कहतिस्यांमसोंजायमनायोंनमानेंजू॥ कहांरहीमन
घालिकहांश्रनुमानेंजू॥ १॥ कहांरहीमनघालिवेछिभेदमेंनहि
लखिसकी॥ श्रापहांवहडह्यांवैसेंजातश्रावनहोंपकी॥ २॥ नें
कहूंजोकह्योमांनेंकोरिभोंतिनमेंकही॥ हाहाकरिमनुहारिसु
नतरिसगही॥ ३॥ कहांवैठचलेंवनिहैंश्रपुहूंनाहिमांनिहौं॥ तुव
कुवरघरहीकेवारेश्रवकछुजियजांनिहौं॥ ४॥ वेगिचलिएश्र
नखिजेहैं तुमरहांवहजरतिहैं॥ वाकेजियकछुश्रोरकपटक
रिधरिहैं॥ ५॥ राधिकाश्रतिचतुरजांनोंजाहमाढिगहीरहैं॥ कहं
जोमुखफेरिवैठीमधुरमधुरवचनेंकहें॥ ६॥ सूरप्रभुश्रवकेनेंना
चेंकाछजेसोंतुमकछो॥ कहियतसुनपरवीनकोधविषमछों॥
७॥ रागविहागरो॥ सुनियहस्यांमविरहभरे॥ वारवारगगननिहा
रतकवहूंहोतखरे॥ १॥ मांनिनीनाहिमानुमोच्योंदूसरीनिसिश्रा
नु॥ तवपरेमुरछायधरनीकांमकस्योंश्रकाजु॥ २॥ सखिनतव
भुजगाहिउचाएकह्योवारहोन॥ सूरप्रभुतुमचतुरमोहननमिले
श्रपनेगोन॥ ३॥ रागविलावल॥ स्यांमचतुरईकहांगवाई॥ श्रवजा
नेंघरकेवारेहोंतुमश्रेसेंकहारहेमुरझाई॥ १॥ विनाजोरश्रपनी
जोंवनिकैंकैंसेंसुखकियोंचाहत॥ श्रापुनरहतश्रचेनभएकों
उतमांनिनिमनकाहेदाहत॥ २॥ अहईरहौंकहेंगीकतहुंजायर
हेवहनायक॥ सूरस्यांममनमोहनकहियततुमहौंसवहीगुन
केलायक॥ ४॥ रागरामकली॥ तवरच्योंहरिदूतीरूप॥ गएजहांमां
निनिराधात्रियासवांगश्रनूप॥ १॥ जायवैठेकहतसुखयह तूंय
हांवनस्यांम॥ मेंसकुचितहां गईनाहीफिरिकहीपतिवांम॥ २॥
सहजवातेंकहतमांनोंश्रवमईकछुश्रोर॥ तुइहांवेउहांवैठर
हतएकहिठोर॥ ३॥ कहैंमोसोकहांउपजीवेरटततुवनोंम॥ सु
नतिहैंकछुवचनराधासूरप्रभुवनधांम॥ ४॥ रागरामकली॥
राधेतेंश्रतिमांनकस्योंयहकहिहरिपाछिनानमनहिमनपूरव

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥ सू॰सा॰ पापपर्‌यौ ॥ ४ ॥ पहिलि आपनी कथा चलाई जब त्रिय भेख धर्‌यौ
॥ २८५ ॥ तब तें हि रूप अनूप सु सुखि सुनि त्रिभुवन चित हर्‌यौ ॥ २ ॥ मोहे
असुर महामद माते सुर सुख अमृत भर्‌यौ ॥ सिवगण सहित स
मेत महामुनि कौ व्रत तें न टर्‌यौ ॥ ३ ॥ तो तनु की छबि निरखि स्म
र सिव छूत जो जो न गर्‌यौ ॥ जेहि नार्‌यौ नग कां मसु माधव तो रे
ह छ जात न र्‌यौ ॥ ४ ॥ राग विहागरो ॥ इनौं अमना हि न तब हू भयौ
मुनि राधिका जितौ अम मो कौं तें एहि मानु रयौं ॥ १ ॥ धरनिधरी
विधि वेद उधार्‌यौ मधु मो सत्र हयौ ॥ हुजन नृप कियो दुसह दुख
मेट्यौ बलि कौं राज लयौ ॥ २ ॥ तो र्‌यौ धनुक स्वयंवर कीनों रावन
अजित जयौ ॥ अघ बक बच्छ अरिष्ट केसि मथि दंवानल अचयौ
३ ॥ त्रिय वपु धर्‌यौ असुर सुर मोहे कौ जग जो न रुयौ ॥ नम्यौ न हीक
हूं यार समें जेहि सिर सहज नयौ ॥ ४ ॥ गुरुसुत मृतक को आनि ज
आए सायर सो धिलयौ ॥ सूर सुबल अब तो हि मिना वा न मोहि स
ब बिसरि गयौ ॥ ५ ॥ राग विहागरो ॥ राधिका तजि मानु मया करि
तेरे चरन सरन त्रिभुवनपति मेटि ... पत हौं हि कलपतरु ॥
जिनि के चरन कमल मुनि बंदित सो तेरो ध्यान धरें धरनीधर
अहो बावरी कहां तें कीन्हे ... न मप ठेरियो वैरि निघर ॥ १ ॥ तु
मन मारि बैठी नागरि तुम सुंदरि बैठी सुंदरवर ॥ वे ह ऐतौ
दुख हरन सब निसि तूं ब्रखभानसुता हरि कौं हर ॥ ३ ॥ मैं तु
कि कछु कह्यौ वा हि तिहूं उन हि जांनि मो ही सौं लर ॥ तब ही स
र निरखि नैंन निभरि आयो उघरि लाल ललिता छर ॥ ४ ॥ रा
ग बिलावल ॥ स्यांम चतुर ई जांनति हौं ॥ ए गुन तुम अज हूं न हि
छाडे इनि छंदनि में मांनति हौं ॥ १ ॥ तुमर सबार करन अब लागे
जे सब तेउ पहिचानति हौं ॥ वे बातें अब दूरि गई नूतें गुन गुनि ग
नि गांनति हौं ॥ २ ॥ यह कहि बहुरि मानु करि बैठी जिय ही जिय
अनुमांनति हौं ॥ सूर करौं जो ई मन भावें इहें बात कहि भांनति
हौं ॥ ३ ॥ राग विहागरो ॥ यह कहि बहुरि मानु कियो ॥ रिसनि घर घ
र होति बाला जोग नैं मा लियो ॥ १ ॥ कहति मन मन बहुरि मिलि
हौं अब न करौं बिलास ॥ ध्यांन धरि विधि कौं मनावें लै लिकर
धरि सास ॥ २ ॥ त्रिया कौं जिनि जनम पाउं जिनि करें पतिनारि ॥
जनम तो पाखानमांगो सूर गोरय सांभि ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥
स्यांम चले पाछिता य कें अति कीनों मांन ॥ व्याकुल रिस मन टेषि

www.vallabhacharya-agrahara.org

केंसवगयोंसयांन॥२॥वैठेसीसनवाइकेंविनधीरजप्रांन॥दू
तीतुरतवुलायकेंपठईदेंप्रांन॥२॥विरहव्यकेवसहरिपरेत्रिय
कियोंअनुमांन॥धीरधरोंमेंजानिहोंकरिएकसुज्ञान॥३॥सांव
धांनकरिकेंगईदूतिकासुजांन॥सुनमहाव्रहमानिनीमानोंपा
खांन॥४॥ राग धनाश्री॥ अंसपरायोंदेंरी॥मेरीसिखसुनिराधि
काधिकमनमेंन्पावचिनेंरी॥१॥आपआपनीतिपिवाईसुहि
अचवतअमरसवेंरी॥हरसुरेससुरशेषसमुझिजियकोंगअ
भुमानकेंरेंरी॥२॥वहरूठोससिजानिवदनविधुरच्योविरंचि
इहेंरी॥सोप्योसुपनविचारिस्यांमहितमोतरहिलटिलेंरी॥३
जाकोंजहांप्रानीतिसुरसोंसवेसुनहांसचेंरी॥सिध्यसुधानि
धिअर्पिअवहितुठिविधुपुनिपुनितुपचेंरी॥५॥ राग विहागरों
राधिकाहरिअतिप्रियतुम्हारें॥रतिपतिअसनकालप्रहआए
ठिआदरकरिकेहहमारें॥१॥आसनआधीसेजसराकेंरेंसुख
पेंहपरहरलियपखारें॥अरघादिकआनंदप्रमतमेंललितलोल
लोचनजलधारें॥२॥धूपसुवासनप्रानवसकरिमनमोहन
हसिदीपउजारें॥वचनरचनमुवासंगअवरअंगप्रेममधुरर
सपरुसिनिनारें॥३॥उचितकेलिकटुतिकत्यागिपटुअमल
उल्लटिअंकमहठिहारें॥नवछतछारकसायकेंचगरहवंव
नसर्पिसमर्पिसवारें॥४॥अधरसुधाउपरेंसमीकसुचिविधु
पूरनमुखवाससवारें॥सुरसुकृतसेंनोखिस्यांमकोंवहतप
नयहव्रतप्रतिपारें॥५॥ राग धनाश्री॥ अवमोहिजांनिएसीकी
जें॥सुनिराधिकाकहतमाधोंयोंवूझियेंडरसोलीजें॥१॥ससुर
चांपिवांधिभुजवंधननंदनाराचसरमतकिरीजें॥भोंहच
ढाएसायदसनदसिअधरसुधाअपनेमुखपीजें॥२॥श्रवनि
निकरेंविलंवभामिनीसुरिसकरोंजेहिगातपसीजें॥गंथपग
ननिगहिमृदुगांठिरेंछूटिनकवहूंश्रमजलभीजें॥३॥सुनिस
खिसुमुखिपायलागतिहोंदंपतिअरसपरसतनुछीजें॥स
रस्यांमसंगमिलिरसविलसहुजोवनसुफलरहेंसुनिलीजें
॥४॥ राग गोंड मलार॥ गहेंओंटमानुहारवभांनवारी॥तुलेंनरुखंग
सुरपतिसहितसुरनिसोंतुलेंकंचनमेरुरहिनिहारी॥२॥निर
विर्धेवासरचंदहोंइवेरुडुलेंसवनखतयहेंसोयभारें॥धर
निपलटेंसिंधुमरजादकोंतजेंसेसससिरडुलेंनहिमानावें॥२

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. बांझसुतजनेंउकठेकाठपल्लवेंविफलतरुफलेंबिनमेघपां
॥८५ नी॥ सूरयहसुनहुंवरुअचलचलचलकाकहतिवांनी॥३॥
रागकान्हरो॥ एकेमनहीमनदूतियहअनुमानकरें॥ कासोंक
हैंसुनेंकोमेरीकेसेंकह्योंपरें॥४॥ हरिपठईमोकोंआतुरकैस्य
दूजियसोचकरें॥ कैसेंवचनकहौंयाआगेंयहअनुमानकरें
५॥ चतुरचतुराईफवेंनयासोंसुनिरिसप्रतिहिकरें॥ सूरसहजही
मांनमनाऊंसोयहकवहुकरें॥६॥ अथमानलीला॥ रागमलार
मानिमनायोंराधाप्यारी॥ दहियतमरसनदहननायकहोपीर
पीरतेंन्यारी॥१॥ तजोमुकतहिओररसनेंअवकहिकेसेंरूसी
विनहीसिसिरतमकतामसतेंतुमसुखकमलविदूसी॥२॥ सु
नियतविरदरूपरसनागरिलीन्हीपलटिकछूसी॥ तेरेंहूतीये
मसंपतिसखीसोसंपतिकेहिमूसी॥३॥ उनततनचितेंआपतन
चितवहुअहोरूपकीरासी॥ पियआपनोंनहोइनऊंजोईमसे
इयेंकासी॥४॥ तुमतोंप्रांनप्रांनवल्लभकेंतेतुमवरनउपासी॥ सु
निहूंकोउचतुरनारिकतकरतिप्रेमकीहांसी॥५॥ ज्योंज्योंमोंन
भईतुमउनकेंवाढीआतुरताई॥ कान्हआंनवनितारतसुनिसु
निजियपेंछिनिठुराई॥६॥ हियेंकपाटजोरिजउताकेंबोलतनही
बुलाई॥ हगधाराधारहरलागीचितचातककीकन्हाई॥७॥ जोपें
मांनतिमानपियासोंतोंवरिमांननहोई॥ हियतेंवारिप्रेमरतिन
वनिहोंअंतभावतोमोई॥८॥ तोयोंरीपियनेहगरवतोलारवक
हंकिनकोई॥ काहूलियोंप्रेमपरचोंवहचतुरनारिहेंसोई॥९॥
कंतहोंरहीनारिनीचीकरिदेखतलोचनफूले॥ मांनहुकुमुद
मुदितउडपतिसोंकियेऊर्ध्वमुखफूले॥१०॥ वेनोहिनदेखभांन
नंदिनीसेवतजमुनाकूले॥ तेरेंतनकमांनमोहनकेसवेंस
यानपभूले॥११॥ अहोइंदुवदनीसुनिसजनीकतपलकनिप
लजोरें॥ तुवमुखरसआसकेप्यासेहरिकेनेंनचकोरें॥१२॥ ते
हेंवलभामिनीवदलनहिउपजतकोमहिलोरें॥ सुनिअनतहते
चतुरनागरेंतेंतनकमांनभएभोरें॥१३॥ तवदूतीफिरिगईस्यांम
पेंवेसेंकह्योंकाजकहांसरियें॥ कीजेंकहांचांउअपनीकतय
हांमसूसनिमरियें॥१४॥ अपनीचोंपआपउठिआएकेंरहेंआ
गेंठाढे॥ भूलिगएसवचतुरसयानपदुनेजोवहगुनगाढे॥१५॥
डोलतिनहिंबोलेंनबुलाएमनहुचित्रलिखिकाढे॥ पहोंनकों

मनारीनागरसोंहूं घरहीकेवाढे ॥१६॥ निवह्योंमरंश्रोरहीकों
हूठयहूपरकीतिंतुह्मारी ॥ श्रापुनहींश्रधीनह्वैंठाटेदेखिगोवर्द्ध
नधारी ॥१७॥ प्रानह्निपियाहूहूसनोंकेमोंसुनिवृखभांनदुला
री ॥ कहूंनभईसुनीनाहूंदेखीरहूंतरंगजलन्यारी ॥१८॥ रिसहूस
नोंमिलनपलकनिकोंश्रतिकसूमरंगजेसो ॥ रहेंनसदांछूट
तछिनभीतरप्रानश्रोसत्र्वनतेंसो ॥१९॥ वैहेंपरममलीनाकि
एमनउठिकहिमोंहूनकैसो ॥ घरश्राएश्रादरनचूकिएवेंठीदू
धश्रचेंसो ॥२०॥ वेंतोभवरभावतेंवनकेश्रोरवेलिकोंतैसी ॥
कीजेंमांनमदनमोंहनसोंवातकहेंहूसिनेंसी ॥२१॥ तुमजान
हूकेंलालतुह्मारोंतुमहिंउनहिंहूंजेसी ॥ वाहीतेंतुमभरमभ
रीहोंवेठाढेतुमवेंसी ॥२२॥ नोवनजलवरषाकीनरिंज्योचाहि
रिनाकोंश्रावें ॥ श्रंतश्रवधिहीलोंनतोंजोकोटिकलहूसिउठा
वें ॥२३॥ वल्लभकोंवल्लभकोंमिलिवोंतुमहिंकोंनसमुझावें ॥ लें
चलिभवनभावतेंहिंभुजगाहिंकोंकहिंकारिदिखावें ॥२४॥ रु
किठलीह्यांतेंमनिहांतीकोंनेंमिखेंछुटाई ॥ लेकिनिजाहिंभव
नश्रपनेंह्यांलरनकोंनसोंश्राई ॥२५॥ कांपनिरिसनिपीठिदेंवें
ठीसहूचरिश्रोरवुलाई ॥ कछुसीरीकछुताती वातनिकांनहूं
हिंदेंतिदुहाई ॥२६॥ कवहूंवालेंधरिदरपेंनमोंहनकेंरहेंश्रागेंठा
ढी ॥ पटुश्रंतरनहिंछिविनिहारतिइतेंमानमनगाढी ॥२७॥
तलफतफिरेंधरनिहिंधीरजविरहूश्रनलकोंडाढो ॥ इतनाग
रीउतहिंवेनागरिइनिवातनिकोंचाढो ॥२८॥ वडोंवडाईकों
प्रतिपालेंवडोंवडाईछीजें ॥ ताकेवडोंवडीसन्मानतवें ह्वेवडे
ताकीजें ॥२९॥ तूंवृखभांनवडेकीवेटीतेंश्यामएजीजें ॥ राखहू
वेरहिंएंगाहिंमोसोवैरह्निपीठिनदीजें ॥३०॥ भामिनिश्रोरभुवं
गिनिकारीइनकेविषहिंडरइए ॥ रांचेहूंविरचेंसुखनाहींभूलि
नकवहूंपतिश्राइए ॥३१॥ इनकेवसमनपरेंमनमोंहनवहुतन
तनकरिपइए ॥ कामीह्वेयकोंमश्रातुरतेहिंकेमेंकेंसमुझइ
ए ॥३२॥ जेजेप्रेमछकेमेंदेखेतिनहीनचातुरताई ॥ तेरेमांन
सयांनसखीतोहिंकेसेंकेंसमुझाई ॥३३॥ परिहेंकोंधविनग
भांवरिमेंवुझिहेंनहींवुझाई ॥ हेंजुकहतितेंवारिवावरीत्रिन
तेंश्रागिउठाई ॥३४॥ वहुर्योंभएसहचरीमोहूनेताकिश्राय

॥ मू॰सा ॥ ९८६

नीघातें॥ लागेकांनसखीकेधोखेंकहूनकुंजकीवातें॥३५॥
सुधिकरिदेखिहूसनोंउनकोंजवखाईहांहातें॥ आपपेरप
टपीरनजांनतिभूलीजोवननातें॥३६॥ वाहूनभयोसुन्योंनहि
देख्योंतनुतेप्रांनअबोलें॥ होतकहांहैंआलसहूंमिसछिनु
घूंघटपटखोलें॥३७॥ पावतिकहांमानमेंकहांगवावतिहे
हूसिवोलें॥ कांलिहिप्रांननाथतुमप्यारेफिरिहोंकुंजनिडो
लें॥३८॥ कहांरहीअतिक्रोधहिएधरिनेंकनरयारयानी॥ अ
गह्योंजांनिमदनमोहनतवुवातवातअसिरानी॥ हितकी
कहेंअनखलागतिहेंसमझहुभलेसयानी॥ मनकीवोंपमा
नुकीजनुकहधोरेहीगरवांनी॥४०॥ रहीमूंदिपटसोंहहा
भामिनिनेंकनवदनउघारें॥ हपिहितवचनरसालकहिनया
हनज्योंवूंदतुतारें॥४१॥ धरेंग्रीवपटसनमुखकरिनेंकनकोप
निवारें॥ जाआधीनदेवसुरनरमुनिमोदोनलपुकारें॥४२॥ व
नगावेंखनवेंनुवजावेंकमलभृंगवनमांहीं॥ खनपाइनितन
हांपसारेंछुवननपावेंछांहीं॥४३॥ वनरखनलेहिवलायवां
मकीलालचकपिललचांहीं॥ कहूअंनकीआंनसोंहदैंखनख
नहांहांखाहीं॥४४॥ कवहूंकवेठिनिकटवुसमावालिअपनें
करपहिरावें॥ जोइजोइवातभावतिहिभावेंसोइसोइवात
चलावें॥४५॥ जिनविजिनरुखकरेंलडेंतीतितहीआपुनआ
वें॥ नांचतिजाकेडरनिभुवननेंछिनेंसुकमांननचावें॥४६॥ जि
निनेंननिमेखतदुखभूलेतेदुखनेंनसमोवें॥ नोसुखसकल
सुखनिकोंरानासासुखनेंकनजोवें॥४७॥ जेहिलिलारत्रिभुव
नकोटीकोंसोपाइनितवसोवें॥ रावहिजांहिसनकअरुसंक
रविरचेंताहिविगोवें॥४८॥ एतेमानभएसवमोहनवोलतके
हुकठुराई॥ दीपकप्रेमक्रोधमारुतछिनुपरसततनिवूझिराई
४९॥ इतनागरीनवलनागरउतभिरेसुरततरनसोऊ॥ नेंनक
टाछवांनअसिवरनखवरषिनिदानेरोऊ॥५०॥ हूटेहांसके
चुकिरदरकीघाइनमुरेंनकोऊ॥ अगत्योंतेजनतरनिपरवीकी
लाजलजानेदोऊ॥५१॥ एहिडरहहनपितनवरझ्योंटेंकहांक
होंचतुराई॥ मुरयोंकांमअप्रमहूमुरयोंमुरईवेरुमुराई॥ पति
अरुप्रियाअपारप्रतिविंवतज्योंजलदर्पनझांई॥ अवजिनि

www.vallabhacharya-agrahara.org

कहूं हियेमें कोहूं वू हरि परें कठिनाई ॥ ५२ ॥ करजोरें बिनती क
रें मोंहून कहोतो यो सिर नाऊं ॥ सेवक निज प्रांनप्रिया कों यह क
हि पत्री लिखाऊं ॥ तेरी सों वृखभान नंदिनी अनुदिन तुव गुन गा
ऊं ॥ अब जिनि मानु करें मो मोहो इहुं मोंन करियाऊं ॥ ५३ ॥ हसिक
रि उठि प्यारी उर लागी मांन मेंन दुख पायो ॥ तुम मन रेंहु आंन
बनिता सों में मन काहि लगायो ॥ लेंके लाय उर लाय अंक भरि
पिछलो दुख बिसरायो ॥ स्यांम मांन हूं प्रेम कसोटी प्रेम हूं मान
सह्यो ॥ ५४ ॥ छूटे बंद छुटी अलकावलि मरगजे तन के बागे
अंजन अधर भाल जाबक रंग पीक कपोलनि पागे ॥ बिनगु
न माल पीठि गडि कंकन उपटि उठे उर लागे ॥ रसिक राधिका
के सुख कों सुख लूट्यो स्यांम सभागे ॥ ५५ ॥ नवल गोपाल नवे
ली राधा नए नेह वस कीनो ॥ प्रांननाथ सों प्रांनपियारी प्रांन
पलटि सो लीनो ॥ बिबिधि बिलास कलारस बीधि उभें अंग
परवीनो ॥ अति हित मान मान तजि मानिनि मन मोहन सुख दी
नो ॥ ५६ ॥ श्री राधा कृष्ण केलि कौतूहल श्रवण सुनें जो गावें
तिनके सदा समीप स्यांम नित हीं आनंद बढावें ॥ कबहुंन जा
हि जठर पातक जिनकों यह लीला भावें ॥ जीवन मुकति सूरसो
जन नें अंत परमपद पावें ॥ ५७ ॥ राग गौड मलार ॥ राधिका बस्य
करि स्यांम प्यारो ॥ बिरह गयो दूरि जिय हूं रख हरिके भयो सह
स मुख निगम जिहि नेति गायो ॥ १ ॥ मानु तजि मानिनी मेंन कोंन
बल हूं लीयों करत तनु कें तके त्रास भारी ॥ कोक बिद्या निपुन स्यां
म स्यांमा बिपुल कुंज गृह द्वार ठाढे मुरारी ॥ २ ॥ भगत हित हेत
अवतार लीला करत रहत प्रभु तहां निजु ध्यांन जाके ॥ प्रगट
प्रभु सूर ब्रजनारि कों हि नव धेंद्रत मन कों सफल संग ताके
॥ ३ ॥ अथ लघुमान लीला ॥ राग मलार ॥ सखिन संग वृखभांन कि
सोरी ॥ चली न्हांन आ तहि उठि गोरी ॥ १ ॥ जाके घर निसि बसे कन्हा
ई ॥ ताघर तहि हि बुलावन आई ॥ २ ॥ ठाढी भई द्वार पर जाई ॥ कहे
तहां ते कुंवर कन्हाई ॥ ३ ॥ औचक मिले न जान तकोऊ ॥ रहे चकि
त इत उत तें दोऊ ॥ ४ ॥ फिरी सदन कों तुरत हि प्यारी ॥ नंदनंदन की
सुरति बिसारी ॥ ५ ॥ भई बिकल तन रिस अति बाढी ॥ रहि गई सखी
निरखि सब ठाढी ॥ ६ ॥ रहि गए ठाढे स्यांम ठगे से ॥ सकुचाने उर सो
च पगे से ॥ ७ ॥ नवें देख हरि अति मुरझाये ॥ नवसखि यनि गहि भुज स

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥ सू.मा ॥ मळायो ॥ ५ ॥ उलटि भई सब ह्रुपिकी धाई ॥ देके बाहु प्रियांजहां ल्या
॥ ९८ ई ॥ ६ ॥ देखि स्यांम आई जहां राधा ॥ बैठी मौन तृष्टाय अगाधा ॥ ७ ॥ पि
सहि के रसमगान किसोरी ॥ भई स्यांम मति देखत भोरी ॥ छाटे बकि
तचित अकुलांही ॥ मुखते वचन कहे नहि जांही ॥ व्याकुल लखि
नंदलालको सखियनि कियो विचार ॥ अबरोऊ जैसे मिलें करि
ये सो उपचार ॥ ८ ॥ अनि मिस नारि अबेतको सुनि हैं का सों कहे ॥ इ
तये धरत न चेत परी रुठा वन वानि इन ॥ २ ॥ प्यारी निकट गई स
क आली ॥ छाट पौरि रहे बन माली ॥ हृ कनि मांनकी नोंतें प्यारी ॥
तूं न जांनत तें फिरी कह्यारी ॥ तो हिलन न जनु गयो डुराई ॥ मुरछि प
रे धरनी अकुलाई ॥ ते प्रेमें चितयो कछु उनको ॥ नैक हु चेन रह्यो
नहि तिनको ॥ ते रैनेन अरी अनि यारे ॥ किधों बान खरसांन सवा
रे ॥ मोहू कमांन नतान यों मारें ॥ कौ कारि गये प्रान पियारे ॥ घायल नि
निमूर्छित गिरिधारी ॥ अमी वचन अनमी विष प्यारी ॥ बहु नायक
वेतूं नहि जानें ॥ तिनसों कहूं इतो दुख मानें ॥ बाहु गहें हू पिको ढि
गलावें ॥ अब वेनिन्न प प्राध स्तमावे ॥ बाहु निवाहू तुम ह्यों कि ना
जाई ॥ मो सो बांह गह्यों बन आई ॥ कालिहि सों हू मोहि उन दीनी
आजहि यह करनी पुनि कीनी ॥ देखि बकी उनके गुणन निजनैं
ननि मुख पाय ॥ तिनें मिलवत मोहि अब बांह गह्यां चलि आय
मिलों न तिन सों भूलि अब जो लों जीवन जियों ॥ सह्यों विरह को
सूल बरनाची बालाजरों ॥ २ ॥ में अब अपने मन पाह्यानी ॥ इन
के पंचपनपीयांनी ॥ कब हूं नैनन अंजन लाउं ॥ मृगमद भूलि न अं
गा चढाउं ॥ हरत्त वलें पट नीलन धारों ॥ नैनन कारे घनन निहारों
सुनों श्रवणन अलि पिक बांनी ॥ नील जलज परसों नहि पांनी ॥
सुनत प्रिया की बात सुहाई ॥ हरखत छाटे पौपि कन्हाई ॥ सखी कह
तियों हठ नहि कीजें ॥ हरिसों ऐसो मान न कीजें ॥ तूं हें नवलन
वल गिरिधारी ॥ यह जोवन हे दीरिन चारी ॥ लाग लाग जो कर
कों जल छीजें ॥ सुनिरी या को गर्भ न कीजें ॥ नंदनंदन सुख सासिसु
खकारी ॥ तू रिनेन चकोर पियारी ॥ हुतो प्रेम धन तो यह भारी ॥ सो
अब काहि ते कियो कहूंपी ॥ कहू लि हुती हू सोन हि कवही ॥ सो अ
बहू सतहें नवनवही ॥ सुनि हैं सुघर नारि जो कोई ॥ कहि हैं हंसी
प्रेमकी सोई ॥ मनकियो जे भावते सों न भांवतो होय ॥ उरते प्रिस
वत प्रेमकी अंत न भांवतो सोय ॥ लालकहो किनिकोय प्रियसने

www.vallabhacharya-agrahara.org

ह्जोमोयहें॥ चतुरनारिहूंसोय लियोप्रेमपरचोकिनहु॥३॥ तुम
वेएकनरोय पियारी॥ जलतेंतरंगह्वेतिनहिन्यारी॥ रसहूसनों
श्रोसकनजेसें॥ सरितनरहेवाहियेतैसें॥ तजिश्रभिमानमि
लहिपियप्यारी॥ मानिराधिकाकहीहमारी॥ चुपनरहीतिकहे
करतिमनावन॥ तुमश्राईहोंवातवनावन॥ वहुतसहीघर
श्राईयानें॥ सुरतिरिखावतिपिछिलीवानें॥ मोसोंवातकहु
तिहेंकाकी॥ जाहुघरनश्रवकछुहेंवाकी॥ कोउनकीछांवो
तचलावत॥ हेवेश्रवतुमहीकोंभावत॥ तुमपुनीतवेश्रहुश्र
तिपावन॥ श्राईहोंसवमोहिमनावन॥ यहकहिरहीरोसभ
रिभरी॥ गईसखीजेजहांविहारी॥ कह्योंजाइहरिसोंहरुवाई
श्रसुचतुरईकहांगवाई॥ विनानिजजाघनचलहिललोरे॥
कैसेंचहतनकियोसुखप्यारे॥ हेमनमोहनतुमवहुनायक॥
नागरनवलसकलगुनलायक॥ नववोलेहरिरीझुकसजो
री॥ तेरीसोंव्रखभानकिशोरी॥ तुहीहिंनविनजीवनमोकों॥ स
हाकरतश्राराधनतोकों॥ तुममानिलसेतुहीश्राभूषण॥ मोष
नतेरेवचनपियूषण॥ तेरोइगुनमैंनिसदिनगाउं॥ श्रवनजि
मानहदेंसुखपाउं॥ करजोरेविनतीकरिभाख्यो॥ कहतसीस
चरननपरराख्यो॥ यहसुनिकछुप्यारीमुसिक्यांनी॥ तवबोली
उठिसखीसयांनी॥ सुनहुस्यामतुमहोंरससागर॥ रूपसीलगु
नप्रीतिउजागर॥ तुमतेंप्रियानेंकनहिंन्यारी॥ एकप्रानद्वेदेह
तुमारी॥ प्यारीयेतुमतुममेंप्यारी॥ जैसेंदर्पनछांहविहारी॥ र
समेंपरेविरसजहांश्राई॥ होयपरतितहांश्रतिकठिनाई॥ श्रव
केंहमसवरेतिमनाई॥ परसोंप्यारीचरणकन्हाई॥ श्रवरूष
यहोंजोरिपिधारी॥ रामरामतोवहुपिहमारी॥ जवपरसेप्या
रीचरणपरमप्रीतिनंदनंद॥ छुट्योमानहरखीप्रियामिट्यों
विरहदुखदंद॥ उरश्रानंदवढायप्रेमकसौटीकसिपियहि॥
श्रवगुनमनविसरायमिलीप्रियाउठिस्यामसों॥४॥ हरषि
मिलेहोउप्रीतमप्यारी॥ भईसखीसवनिरखिसुखारी॥ तवरो
उवटिसखीश्रन्हवाये॥ रुचिरसिंगारसिंगारवनाये॥ मधु
रमिष्टभोजनमनभाये॥ रुकनएकैंथारजिमाये॥ दियेपान
श्रचवनकरवाये॥ सुमनसुगंधमालपहिराये॥ लेवीराश्र
पनेकरप्यारी॥ दीनोंविहसिवदनगिरिधारी॥ तवहिसुफ

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥मू.मा. लहूहिजीवनजोंन्यो॥ परमहूरखउरमेंनरआंन्यो॥ मिलिवैठे
॥१६८ दोऊप्रीतमप्यारी॥ तवसखियनआरतीउनारी॥ अतिआनं
दभरेदोउराजे॥ अरसपरसनिरखतछबिछाजे॥ पायेवसक
रिकुंजविहारी॥ विहसिकह्योंतवपियसोंप्यारी॥ सुनहुस्यांम
वरषाऋतुआई॥ रचहुहिंडोरोशुभसुखदाई॥ हेमनपियाकि
मारहमारे॥ सवमिलिझूलहिंसंगतुमारे॥ सुनितियवचन
स्यांमसुखपायो॥ असेंकहिहरिमानछुडायो॥ तियामानह
रिअसेछुडयोंभक्तहितलीलाकरी॥ निगमनेतिअपारगु
नसुखसिंधुनटनागरहरी॥ यहमांनचरित्रपवित्रहरिको
प्रेमसहिततजुगावहीं॥ करहिंआदरमांननितकोंसंतजनसु
खपावहीं॥ राधारसिकगुपालकोंकौतुहलरसकेलि॥ व्र
जवासीप्रभुजननकोंसुखदकामतरुवेलि॥ सुफलजन्म
हेंतासजेअनुदिनगावतसुनत॥ तिनकोंसदाहुलासस्र
दासप्रभुकीकृपा॥ ॥ ॥ अथ श्री कृष्ण गोकुलतें मथुरा पधारे
सो लीला॥ राग धनाश्री॥ कछुएकघरआंसीरोंरह्योहरिहोरीहो
आजसिनिमथुराजाहु॥ पारवकरहुघरआपनेहरिहोकु
सलछेमनिरवाहु॥ १॥ यहकहिपिहोरीहो॥ एटेउरउनमानके
हु॥ सवनकिपोंमनपलपहो॥ २॥ सतुराजहीरेखनचली
फूलनकुसमअलेसो॥ वनेनवलनवनागरीनवजोवनन
वभूप॥ ३॥ नयोंसेंहूनितनाहसों नवसजसजेअनूप॥ इसों
रिसारिरिसाघोषमेंघरघरकरहिंआनंद॥ ४॥ नरनारीमिलि
जोवहीजसदहंदावनचंद॥ एकादसीएकप्रीतिसोंवलीजमु
नकेतीर॥ ५॥ वरनवरनवनिवनिचलीपीतअरुनतनची
र॥ द्वादशीअभरनद्वादशीसाजिचलीब्रजनारि॥ ६॥ हरिहल
धरहिंसुनावहीदेहिंनंदजूकोंगारि॥ तेरसितिथमेंतनमई
खिलतप्रीतमसंग॥ भरतभरावतलाजहीलजितकोटिअ
नंग॥ ७॥ चोदसिचतुरसखीमिली हलधरपकरेधाइ॥ सुख
मांडेंछांडेंनहींकाजरदेहिंवनाइ॥ ८॥ पून्योंपूरनप्रीतिकरि
हरिआएहरिचाइ॥ वलिभैयाकोंछांडहुंफगुवारेहोंमगाइ
९॥ मोहनपकरेकरिमनोंमुरलीलईछिनाय॥ राधासोंकरि
वीनतीहमहीरीजेमनाय॥ १०॥ नंदछिड़ावोस्यांमकुंजगामें
जसुलेहु॥ जसोमतिधरिब्रखभांनकेफगुवाहमारोदेहु॥ ११

जसुमति हँसि सव सखी सों राधे लीनी बोलि ॥ मेवा मिश्री बहु
दई सवन भरि चोलि ॥ २ ॥ होरी हुरा खिह्लाय के मोंहन फूले डो
ल ॥ गावत सखी निसंक ह्वै कहि कहि अमत बोल ॥ ३ ॥ पाट
सिंघासन बैठि करि अरु अभिषेक कराइ ॥ राजकरहु नित ला
डिले सूरदास वलि जाइ ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ अहो नृप छै अपि प्र
गट भए ॥ बसे नंद गृह गोकुल थापन कीयो सुदिन गाए ॥ १ ॥
तुम हूं को दुख बहुत जनम को छ्यामा रंग आरोपे ॥ ताछिन
तें सिसु सम्न देव की तेरही कर सोंपे ॥ २ ॥ जोपि राज काज सु
ख चाहे वेगि बुलाय न लीजों ॥ हरि जीति देउन की कीनी वि
धि जसहे मोई कीजों ॥ ३ ॥ ऐसें कहि वैकुंठ सिधारे कछु निशा
वि कराई ॥ सूरस्याम कुंन की बेइछा मन निमन यहै उपाई ॥ ४ ॥ रा
ग कल्यान ॥ तुम विन मेरे हि तून कोऊ ॥ सुनि अक्रूर पूरन नृप भा
खत नंद महरि सुत त्यों बहु रोऊ ॥ १ ॥ सुनि हरि वचन रोम हर
खित गात प्रेम पुलकि मुख कछु न बोले ॥ यह आयसु पूरव
सुकृत वस सो का हू पें जाउ न तोल्यो ॥ २ ॥ मोन रही वि परिहसि नृ
प भीनों मन हु सिंह मृग आय तलीनों ॥ यहि क्रम विन वे सुत
अहीर के रति रक तमन सकुचीनो ॥ ३ ॥ आयसु पाइ सखुरथ
कर गहि अनुपम तुरंग मध्ये थ तजो रह्यो ॥ सूरस्याम की मिल
नी सुरति करि मनु निरधनि निधि पाय विमोह्यो ॥ ४ ॥ अथ
नारदजी समसुचना लीला ॥ राग विलावल ॥ फाग रंग करि हरि रि
सराख्यौ ॥ रह्यो मन जुवतिन के कांख्यो ॥ १ ॥ सखा संग सब को
सुख दीन्हे नरनारीन को मन हरि लीनो ॥ २ ॥ जो जेहि भावता
हि हरि तैसें ॥ हित को हित के नव कों तेसें ॥ ३ ॥ महरि नंद प्रति
मात कहाये ॥ तिन ह्वी के हित तनु धरि आये ॥ ४ ॥ जुग जुग यह
अवतार धरत हरि ॥ हुरत्नाकर रता विश्व रहें भरि ॥ ५ ॥ धरनी पा
प भार भई भारी ॥ सुरनि लिये संग जाय पुकारी ॥ ६ ॥ त्राहि त्रा
हि श्रीपति रहें तारी ॥ राखि लेहु मोहि हर लगु वारी ॥ ७ ॥ राजस
रीति सुरनि कहि भाखी ॥ भये चंद सूरज तहां साखी ॥ ८ ॥ खी
रिसिंधु अहि सैन मुरारी ॥ प्रभु श्रवणनि तहां परी गुहारी ॥ ९ ॥ दे
व जान्यों कमला के कंता ॥ दनुज भार पुहमी में मंता ॥ १० ॥ सिंधु
मथ्यं वाणी पर गांसी ॥ भुक अवतार कह्यो अविनासी ॥ ११ ॥ म
धुरा जन मग गोकुल हि आये ॥ मात पिता सुत है तैं कहाये ॥ १२

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥स.सा.॥ नारदकहियहसुनाई॥ ब्रजलोगनिसुखरियोंकन्हाई॥१३॥ नंदनं
॥२९९॥ दनग्वालकजांन्यों॥ गोपीकांमरूपकरिमांन्यों॥१४॥ प्रथमपि
वतपैवकीविनासी॥ तुरतसुनततनपभयोउदासी॥१५॥ एहिअं
तरजेदनुजसंघारे॥ एहिअंतरलीलावहुधारे॥१६॥ कोमहिमाक
हिसकेंतुम्हारी॥ बालतरुणसुखन्यारीन्यारी॥१७॥ धन्यधंन्यब्र
जकेवासी॥ वसकीन्हेजिनिब्रह्मउदासी॥१८॥ अकलकलानि
गमहूतेन्यारे॥ तेजुवतिनसंगवननिविहारे॥१९॥ आज्ञादईमो
हिप्रभुदीनों॥ यहअवतारजवहिंभुवलीनों॥२०॥ दैत्यदहनसुर
कोहितकारी॥ अवभयोप्रभुकंसप्रचारी॥२१॥ यहसुनिहंसेसुर
निकेनाथा॥ तवनारदगाईयहगाथा॥२२॥ श्रीमुखकह्योजायस
मुझावहु॥ नृपप्रायसुकरिमोहिबुलावहु॥२३॥ अंजुलिजोरिदेव
मुनिहूरखे॥ कृपावचनतिनसोंहरिवरखे॥२४॥ तुरतचलेनारद
नृपपासा॥ इहैंबुद्धिमनकरतप्रकासा॥२५॥ संकर्षणहृदयप्रग
टाई॥ जेवानीऋषिगायेसुनाई॥२६॥ आदिपुरुषअद्वैतविचारी
प्रोषरूपहरिकेसुखकारी॥२७॥ हरिअंतरजामीजगताता॥ अनुज
हैतजगमांनतनाना॥ इहेंवचनऋषिधरकहिआव्यो॥ सुनिसुनि
श्रवणहृदैंहरिराख्यो॥२८॥ तुमजनमेंभुवभारउतारन॥ तुमहों
अखिललोकके तारन॥ तुमहोंसवसंसारकेसारा॥ जलथलज
हांतहांविस्तारा॥२९॥ यहहरिकह्योअंतमेवांनी॥ सोतुमकहत
वांतमेंजांनी॥ कंसनिवारनहमकहआउं॥ केसगहुंपहुंमीघिसि
टाऊं॥३०॥ एहिअंतरगये मुनिनृपपासा॥ मनमारेंमुखकेउदा
सा॥ हरषिकह्योमुनिनिकटबुलाये॥ आदरकरिआसनबेठाये
केसेंमुखक्योंमनरिषिमारे॥ कहचिंताजियवढी तुम्हारे॥३१॥ ना
रदकह्योसुनोहोराउ॥ कहांबेठेकछूकरोउपाउ॥ त्रिभुवनमेंतु
मसरिकोएसो॥ देषोनंदसुवनब्रजजेसो॥३२॥ करतकहांलखा
नीएसी॥ यहतुमकोंउपजीकछुनेंसी॥ दिनदिनप्रवलभयोंय
हभारी॥ हमसवहितकीकहैंतुम्हारी॥३३॥ तवगर्वितवोलेनृप
वांनी॥ कहांवातनारदतुमगांनी॥ कोरिदनुजमोसरिमोपासा॥
जिनकोंदेखितरनितनुत्रासा॥३४॥ कोटिकोटितिनकेसंग
जोधा॥ कोनीवेंतिनकेतनुक्रोधा॥ म.छ्नानिकेवलकहांवखा
नों॥ जिनिकेदरसनकालउरानों॥३५॥ कोटिधनुर्द्धरसंततदासें
वचेंकोंनातिनकोंगुहकारें॥ एककुवलयात्रिभुवनगामी॥ ९९

www.vallabhacharya-agrahara.org

ऐसें औरकि तिकहेंनांमी ॥४३॥ ग्वालसुतनकीकथाचलाव
हु ॥ यहवानीकहिकह्यांसुनावहु ॥ अनालोगब्रजकेसवमेरे
सेवाकरतसदारहेंनेरे ॥४४॥ तातेसकुचतहोंउनिकाजा ॥ वा
लकसुनतहेनजियलाजा ॥ भलीकरीयहवातसुनाई ॥ सह
जवुलायलेउदोउभाई ॥४५॥ औरसुनहुनारदमुनिमोसों ॥ अव
गानिलागिकहींकछुगोसों ॥ कितिकवातवलिरामकन्हाई
मोदेखतअतिवालडराई ॥४६॥ अवसुकालिअवउनहिवुला
ऊं ॥ कहिपठऊंव्रजसहितमगाऊं ॥ औसप्रजाव्रजआनिवसाऊं
आपनेजियकीखुरकमिटाऊं ॥४७॥ तिनपरक्रोधकहामेंपाऊं
रंगभूमिगजचरणरूदाऊं ॥ मेरेसममरकोंवेनाहीं ॥ यहमुनि
केनारदमुसिकांहीं ॥४८॥ सत्यवचननृपकहतप्रचारे ॥ अवजा
नेउनितौतुममारे ॥ यहकहिमुनिवैकुंठसिधारे ॥ त्रिभुवनमें
कोवलहितुमारे ॥४९॥ कंसपरयोमनपहेंविसोरा ॥ रामकृष्ण
वधकहेंखभारा ॥ दनुजहरेंहरिइहैंउपायो ॥ नारदकहीसुनतत
मनआयो ॥५०॥ अवमारननहिगहरूलगाऊं ॥ मथुराजहांतहां
वलछांडऊं ॥ धकधकातजियवहुविसमारें ॥ कोमारोंसोवुधि
विचारें ॥५१॥ सूरजप्रभुअविगतअविनासी ॥ कंसकालयहवु
द्धिप्रकासी ॥५२॥ अथ अक्रूर श्रीगोकुल भेजे ॥ रागमारू
नृपतिमनयहेंविचारयो ॥ कोमारोंदोऊनंदढुटौना एहीं
आनिअरों ॥१॥ कमलकेहतआपचढिधाऊं इहेंविचारकरों
मांतहिवसमेंवधीपूतनायहगुनमनहिडरों ॥२॥ फुनिसाह
सजियजिनकहिगावौंताकोंकालसह्यो ॥ सूरस्यामवलिसु
महरतेनेकनहीविसरयो ॥३॥ रागसोरठ ॥ महरिढुटौनामालि
रहे ॥ जनमाहितेअपटांवकरतहेंगुनिगुनिहदेंकहें सुरछात
॥ दनुजसुतापतिलेंहिसंघारीपेंपीवततरिनमांत ॥ गयोप्र
तिज्ञाकरिकागासुरआइगिरयोसुरछात ॥२॥ तणासकट
छिनमेंहिसिंघारोंकेसीहन्योंप्रचारि ॥ जेजेगयेवहुरिनहि
देखेसवहिनउपेमारि ॥३॥ जैसोजैसोकीरीनिदहूनिसंघारोंवा
तनहींकछुओर ॥ सूरनृपतिसोंचलतयहमनमनदहेंकरत
मनहोर ॥४॥ रागमारू ॥ नंदसुतसहजवुलायपठाऊं ॥ पूपांम
रामअतिसुंदरकहियतदेखनकोजमगाऊं ॥१॥ जेहेंकोंनप्रे
मकरिल्यावेंभेदनजानेकोई ॥ महरमहरिसोंहितकरिल्यावें

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥ सू॰सा महाबचतुरजोहोई ॥ २ ॥ एहिअंतरअक्रूरबुलायो अतिआतुरम
॥ २०० हाराज ॥ सूरचलेमनसोचबढायें कोंनकरेंएसोकाज ॥ ३ ॥ रा
ग ॥ धना श्री ॥ अतिआतुरनृप मोहिबुलायो ॥ कोंनकाजएसोहेंअ
टक्योमनमनसोचबढायो ॥ २ ॥ आतुरजायपौरिभयेठाढेका
होपोरियाजाइ ॥ सुनतबुलायमहलहीलीनों सुफलकसुत
गयेधाइ ॥ २ ॥ कछुडरकछुधीरजधारेंगयोंनृपतिकेपास ॥ सू
रसोचमुखदेषिडरानोऊरधलेतउसास ॥ ३ ॥ राग मारू ॥ सोच
मुखदेषिअक्रूरभरमें ॥ माथकरनायकरजोरिरहेठाढेबोलि
लीनोंनिकटवचननरमें ॥ २ ॥ आपुहीकंसतहदूसरेकोंन
हींत्रासअक्रूरजियकह्याकेहें ॥ नृपतिजियसोचजान्योंहरेंआ
पनेकहतकछुनहींधीआंनलेहें ॥ २ ॥ निकटबेठाइसबबात
तेंहीकह्योगयेतेभाखिनारसबीरें ॥ सूरसुतनंदकेहदेसा
ललसरेमंत्रयहतनहिअवेइनहिमारें ॥ ३ ॥ राग मारू ॥ सुनहु
अक्रूरयहबातनिहचेंकरोंआजुमोहिभोरतेचेंननाही ॥ श्यां
मबलिरांमयहनांमसुनितांममोहिकाहूपठवहिजाहितिनहि
पांही ॥ २ ॥ प्रीतिकरिनंदसों सहजबातकहेंतुरततल्यावेंदहूं
निनपतिबोलें ॥ देषिबेकीसाधबहुतसुनिगुनाविपुलअति
सुंदरसुनेरोझअमोलें ॥ ३ ॥ कमलजलबतेंउरगाल्पाएपीछसुनेंइहे
बकसीसअबइनहिदेहू ॥ सूरप्रभुस्यांमबलिरांमकोंअनहीं
बचनइनकेसुनायहूरषपेहें ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ यहबांनीकहिकें
ससुनाई ॥ तबअक्रूरहियेंभयोंधीरजउरधारों बिसराई ॥ मनम
नकहतकह्याचितबेठोसुनिसुनिबेंसीबानी ॥ अपनोकालआ
पहीबोल्योंइनकीमीचतुलानी ॥ २ ॥ हरषिवचनअक्रूरकहेंते
बतुरतकाजयहकीजें ॥ सूरनांहिआयसुकरिपाऊं भोरहिते
नेहिरीजें ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ तबअक्रूरकहतनपअंगेंधन्य
धन्यनाररमुनिज्ञानी ॥ बडेपात्रब्रजमेंदोउहमकोंसुनहुदेव
तीकीबिनआंनी ॥ २ ॥ महाराजतुमसरिकोंऐसोतऊजगत
यहबलतकहांनी ॥ अबनाहिबचेकोधनपकीन्होंजेहेंछिनकि
तबाल्योपानी ॥ ३ ॥ यहसुनिहरषभयोंगर्वानोंजबहिकहीअ
क्रूरसयांनी ॥ कालिबुलायसूरदोउमारोंबा/बारभाषतयहबा
नी ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ कंसनृपतिअक्रूरबुलाये ॥ बेठिएकांत
मंत्रदृढकीन्होंरामकृष्णदोउबंधुमगाये ॥ २ ॥ कहूंमल्लकहुंग

www.vallabhacharya-agrahara.org

जदें रारवो कहूं धनुषवाहू वीर ॥ नंदमहरि के बालिक मोरें क
रखत रहत सरीर ॥ ३ ॥ सुनहि वु लायवी चढी मारो नगरन आ
वन पावें ॥ सूरसुनन अक्रूर कहत नृप मनमन मों जव दा
वें ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ इहें मंत्र अक्रूर सों नृप रें निविचारी ॥ मा
तनंद सुत मारि होंय ह कह्यो प्रचारी ॥ १ ॥ कपि विचार मन गजा
मलों मंदिर पग धारे ॥ कह्यो जाहु अक्रूर सों भये आलस भारे
२ ॥ तुरत जाय पलका परो पलक निरुव कानो ॥ स्याम राम
सपने खरो तहां देखि उरानो ॥ ३ ॥ अति कठोर है उ काल से भर
म्यो अति रुरु क्यो ॥ जागि परो तहां कोउ नहीं जिय ही जिय सस
क्यो ॥ ४ ॥ चौंकि पर्यो संग नारि के रानी सब जागी ॥ उठी सबें अ
कुलाय कें देखें विभ्रम सब लागी ॥ ५ ॥ महाराज रुरु के कहा सपने
बोसंके ॥ सूरश्याति हि व्याकुल भये थर थर उर कंपे ॥ ६ ॥ राग बिला
वल ॥ महाराज क्यों आजु ही सपने रुरुकाने [illegible] अब ही आ
य कें देखि बिलखाने ॥ १ ॥ कहां सो बपुरो सो पर्यो ऐसी पहुमी को
काको सुधि मनमें करो कहि ये अपजी को ॥ २ ॥ रानी सब व्याकुल
भई कछु भेद न पावें ॥ नक आपुन महूं जाहि कह्यो वह नहीं जनावें
३ ॥ सांवधान करि पोरियां प्रति द्वारें जगावें ॥ सूर त्रास बल स्याम के
नहि पलक लगावें ॥ ४ ॥ अथ कंस जी कुं स्वप्न ॥ राग बिलावल ॥ उनने
दहि सपनो भयो हरि कहूं छिपाने ॥ बालि मोंहनको उलें गयो सु
नि कें बिलखाने ॥ १ ॥ बाल सखा रो वन तके हें हारि तो कहूं नांही ॥
संगहि संग खेलत रहे यह कहि पछि तांही ॥ २ ॥ दूत एक संग लें
गयो बालि सम कन्हाई ॥ कहां ठगोरी सी करी मोंहनी लगाई ॥ ३
बाली के देख के गये हम देष त ठाढे ॥ सूरज प्रभु वो नेकु रहें अति
ही मये गाढे ॥ ४ ॥ राग सोरठि ॥ व्याकुल नंदसुनत यह बानी ॥ धरनी
मुरछि परी अति व्याकुल चित्र सज सो रानी ॥ १ ॥ व्याकुल गोपी
ग्वाल सब व्याकुल व्याकुल ब्रज की नारी ॥ सुनी बात बलि राम
स्याम हि लें गयो दूत एक दरव कपी ॥ २ ॥ धरनी परति उठति फुनि
धावति रोहि नि अंतर न रंग जो गे ॥ धकधका उरनें न अवत जल
सुत अंग परसन लागे ॥ ३ ॥ सकल सुनि जसुमति अति आतुर
कहां महरि भ्रम पायो ॥ सूर नंद घरनी के आगें यह भ्रम नहीं
सुनायो ॥ ४ ॥ अथ बंस कुं स्वप्न ॥ राग कल्यान ॥ एक जांम नृप कों नि
सि जुग ने भई भारी ॥ आपुन हूं जाग्यो संग जागी सब नारी ॥ १ ॥ क

www.vallabhacharya-agrahalaya.org

सू.सा. वहु उठत वैठत पुनि कवहु सेज में सोवें ॥ कवहूं अजिर ठाढे है रा
५०२ ॥ सो निसि खोवें ॥२॥ वार वार जोतिक सों घरी बूझि आवें ॥ एक जाइ
पहुचे नहि औरु एक पठावें ॥३॥ जोतिक त्रिय त्रास परयो कहां धा
त करिहें ॥ सूर क्रोध भरयो नृपति काके सिर परिहें ॥४॥ राग कल्या
न ॥ व्याकुल तें रैनि कटी वची घर वाकी ॥ एक एक छिन जांम
जांम ऐसी गति ताकी ॥१॥ काजे हैं ब्रज कों मन करें के हि पठाऊं
जा सों कहि नंदसुवन आज ही मगाऊं ॥२॥ अब नहि राखों उठा
य वैरी नहि नान्हों ॥ मारों पग गपे रुद्राय मन ही अनुमानों ॥३॥
पठऊं अक्रूर हि कों ए सों नहि कोऊ ॥ सूर जाय गोकुल तें ल्यावें
निरे ऊ ॥४॥ राग विलावल ॥ अहुन उदें अति ही अक्रूर बुलाये आ
पक घ्यों प्रतिहार एक सुनि के संग धाए ॥१॥ सोवत जाय जगा
य कें कही बात प्रकासा ॥ आय सु मांथें मानि कें ऊठि चले उदासा ॥
२॥ नृपति द्वार पर सवरे देखत तिसिर नायो ॥ कही [illegible] वास कों में नरें
सिरो पांव मगायो ॥३॥ अपने कर कसि कें दयो सुफलक सुत ली
नों ॥ हाथ जोरि कें नृपति कों परनाम सु कीनों ॥४॥ सुख अक्रू
र चित्त भयो हिरदें विलखांनों ॥ असुर त्रास जिय अति परयो
कहां कहें सयांनों ॥५॥ सुरत नहि रथ पलन नाथ कें अक्रूर हि दीनों
आय सु सिर पर मांनि कें पानु रद्धें लीनों ॥६॥ विलम करहु जिनि
नें कहु अब ही ब्रज जाहु ॥ सूर काज सरि आवहूं जिनि रैनि वसा
हु ॥७॥ राग विलावल ॥ सुनहु देख एक बात जनाउं ॥ आय सु भयो
तुरत लें आवहु ताते फेरि सुनाऊं ॥१॥ वलि मोहन वन आन जात
ही जो उन कों नहि पाउं ॥ रहें अनुन संग रह वसि कें कालि आन
लें पाउं ॥२॥ यह कहि चले नृपति हूं मांन्यो सुफलक सुत रथ हांक्यो
सूरदास प्रभु ध्यांन हृदें धरि गोकुल तन कों नाक्यो ॥३॥ राग गौ
री ॥ सुफलक सुत मन परयो विचारा ॥ कंस न्रवंस महे यह त्यारा
नगर मांझ रथ हांकी नो ठाढो ॥ सोच परयो मन मन अति गाढो ॥
२॥ मंत्र कियो निसि मेरें साथा ॥ ल्यावन कहे वलि अरु ब्रजनाथा ॥
३॥ गज मुष्टिक चांणूर निहारयो ॥ व्याकुल नीर नेंन टरि उठरयो ॥४॥
अति व्याकुल वलिराम कन्हाई ॥ कहां करों कछु नहीं वसाई ॥५॥
कैसें आनि देउं में जाई ॥ मो देखत मारें देउ भाई ॥६॥ मारें मोहि वीर
लें मेलें ॥ आगें कों अपने कन्ठ लें ॥७॥ सूरदास प्रभु अंतरजांमी
सुफलक सुत मन पूरन कामी ॥८॥ राग कल्यान ॥ सुफलक सुत हृ

www.vallabhacharya-agrahara.org

देंध्यांनकीनोंअविनासी ॥ हरनकरनसमरसबेंसबघटके
वासी ॥ १ ॥ धन्यधन्यकंसहिमोहिजिनिपठायो ॥ मेरोंकरिका
जमोचआपकोंबुलायो ॥ २ ॥ बहुगुनिरथपहोंचियोंनगर
पहोंपाछें ॥ कछुसकुचनकछुहरखनचल्योसांगाकाछें ॥ ३ ॥
बहुरिसोचपर्योंहरसरछिनमगमाला ॥ हरख्योंअक्रूरसर
मिलिहेंगोपाला ॥ ४ ॥ राग गौरी ॥ दछिनहरसरेखिमृगमाला
अतिआनंदभयोंतेहिकाला ॥ १ ॥ एहीबनमिलिहेंगोपाला
स्यांमजलदतनुअंगरसाला ॥ २ ॥ ताहरसनतेंहोउनिहाला
बहुदिनकोंमेटोंजंजाला ॥ ३ ॥ मुखससिनेंनचकोरबेहाला
तनुत्रिभंगसुंदरनंदलाला ॥ ४ ॥ बिबिधिसुमनहरयेसुभमा
ला ॥ सारसहूतेनेंनबिसाला ॥ ५ ॥ निहचेभयोंकंसकोंकाला
सूरजप्रभुत्रिभुवनप्रतिपाला ॥ ६ ॥ राग आसावरी ॥ दाहिनीहोंदे
खतमृगनिकीमालहि ॥ मनोंयहसुगणअबहिएबनइनि
भुजभरिभेटेंगोपालहि ॥ १ ॥ निरखिबनतुत्रिभंगपुलकिसक
लअंगअंगाधरनिअंकुसजेसेंपाइपावसकालहि ॥ परिहों
पाइनिजाइभरिहेंअंककमलाइमुखनेजमीजोबेलिचढति
तमालहि ॥ २ ॥ परसिहेंप्रेमअपानंदसोचिकेंकामनाकंदकरिहें
प्रगटप्रीतिप्रेमप्रवालहि ॥ बचनरचनहंसमुखदसुखनिवा
सकेंसुफलफलितफलअमलरसालहि ॥ ३ ॥ स्फुरितसुभसुबा
हूलोचनमनउछाहफलिकेंसुकृतफलफलितेंहिकालहि
निगमकहततेनिशिबनसकतबेनिसूरसुहृदंलगायलेंहें
ताइपालहि ॥ ४ ॥ राग कान्हरो ॥ आजुजायदेखिहोंवेचरन ॥ सी
तलसुभगसकलसुखदातादुसहदबनदुखहरन ॥ १ ॥ अंकुस
कुलिसकमलसध्वजचिन्हतअरुनकंजकेरंग ॥ गोचारनबन
जातपायहेंगोपसखनिकेसंग ॥ २ ॥ जाकोध्यांनधरतसुरमु
निजनशिवविरंचिशिवईस ॥ तेईचरणप्रगटकरिपरसोंइनि
करअपनेसीस ॥ ३ ॥ निरखिसरूपराहिनिरहिसकिहोंरथतेंउत
रिहोंधाइ ॥ सूरदासप्रभुउभेभुजाभरिहसिभेटिहेंउठाय ॥ ४ ॥
राग नट ॥ जबसिरचरणनिधरिहोंजाय ॥ कृपाकरिमोहिटेकि
लेहेंकरनिहदेंलगाय ॥ १ ॥ अंगसुलक्षितवचनगादगदमन
हिमनसुखपाय ॥ पेमघरउछलितद्वहेंनेनअंसुवहाय ॥ २ ॥
कुसलबूझतिकहिनसकिहोंबारबारसुनाय ॥ सूरप्रभुगुन।

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥सू.सा. ध्यानअंतरकोंगयोपंथभुलाय॥३॥ राग आसावरी॥ मथुरातें
॥२०२ गोकुलनहिंपहुंचेसुफलकसुतकोंसांझभई॥ हरिअनुराग
देहसुधिविसरीरथवांहनकीसुरतिगई॥१॥ कहांजातकित
मोहिपठयोंकाहेमेंएहिसोचपर्यो॥ दरसहुरिसाश्यांमपरि
पूरनहृदेंहरखआनंदभर्यो॥२॥ हरिअंतरजांमीयहजांनी
भगतवछलवांनोंजिनकों॥ सूरमिलेंजोभावभगतके
गाहरनहींकीनोंछिनकों॥३॥ राग कल्यान॥ वृंदावनग्वालनि
संगगोधनिहरिचारें॥ अपनेंजनहेतकाजव्रजकोंपगधारें
॥१॥ जमुनाकेरिपारगायस्यांमदेतहेरी॥ हलधरसंगसखा
लयेंसुरभीगनघेरी॥२॥ धेनुदुहनिसखनिकह्यौंआपुदुह
नलागे॥ वृंदावनगोकुलबिचजमुनाकेआगे॥३॥ भगतहे
तश्रीगोपालयहसुखउपजायो॥ सूरजप्रभुदरसनसुफल
कसुतपायो॥४॥ राग कान्हरो॥ सुफलकसुतहरिदरसनपायो
रहिनसक्योरथपरसुखव्याकुलभयोंसहमनभायो॥१॥ भुव
परह्वैगिरिनिकटहि फिरआयोचरननिसिरमलगायो॥ पुलकअं
गलोचनजलधाराश्रीमहहरिसिरमायो॥२॥ कृपासिंधुक
रिकृपाकिलेहसिलियोंभरयाकुलाइ॥ सूरदाससुखमोइजा
नेंकहेकहांमें गाय॥३॥ राग केदारो॥ हरखिअक्रूरहेरेहेंला
पें॥ मिलेतेंहिभावविचितवनिचिनप्रेमसुभक्तवछलनाम
तोंकह्यों॥१॥ कुसलपूछतप्रसन्नवचनअमृतरसनसुनि
पुलकिअंगअंगकीनों॥ चितआननहारुबुद्धिउरविस्तारह
तुजअवरलोंयहजवावदीनों॥२॥ भेदईभेदसबदईनबांनी
कहीनरतनवोलहेनदेहेंवाके॥ सूरप्रभुजफरकिमननेंनउछा
हलेंधरनिउद्धारहितवसीताके॥३॥ राग बिलावल॥ स्यांमकहे
कहिकेंउठेनपहमहिबुलाये॥ अतिहितकृपाहमपरकरीजो
कालिमरगाये॥१॥ संगसखायहसुनतहीचक्रतमनकीनों॥
कहांकहतहरिसुनतहींलोचनभरिलीनों॥२॥ स्यांमसख
निसुखहेरिकेंतवकरीसयानी॥ कालिचलोंनृपपेंरखियेंमं
कोजियआंनी॥३॥ हरखभयेहरियहकहेमनमनदुखभारी
सूरसंगअक्रूरकेहरिव्रजपगधारी॥४॥ राग रामकली॥ अ
तिकोमलबलिरामकन्हाई॥ दुहुनिगोरअक्रूरालियेंहसि
सुमनहुलेंहरुआई॥१॥ ग्वालसंगरथलीनेंआयेपहुचेव्रज

www.vallabhacharya-agrahara.org

कीरवो है ॥ देखन गोकुल लोग जहां तहां नंद दुठे सुनि रोरि ॥ २
निसि सपने को त्रसि नयहे प्रति सुन्यो कंस को दून ॥ सूरना
रिनर देखन धाए घर घर सो रस्यो अक्रूर ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ कंस नृ
प अक्रूर ब्रज पठाये ॥ गये आगें लेन नंद उपनंद मिलि स्याम
वलिराम उनिहूं देल्याये ॥ १ ॥ सब मिस्पंदन लियो देखि हरख्यो हि
यो कहत सब मन नाहिं मन कहुं आयो ॥ राज के काज को नाम
अक्रूर ताहि करे लेन को किधों नृप पठायो ॥ २ ॥ कुसल तेहि
वूझि लेगये ब्रज निज धाम स्याम वलिराम मिलि गये वाकों
चरण परव राइके सुभग आसन दियो त्रिविधि भोजन प्रास
न दियो ताको ॥ २ ॥ कियो अक्रूर तहं तरन दोउ मंगलें नारि न
र लोग ब्रज सबे देखे ॥ मनो आए सेग देखि एसे रंग मन नाहिं
न परस्पर करत भाखे ॥ ३ ॥ सांझि जे वनारि अचतुन के भये
प्राह्व दियें नमो नंद हूं रखि आगें ॥ से जबे हरि अक्रूर सों जो
रि करि लिपा कहकरी तब कहन लागे ॥ ४ ॥ स्याम वलिराम
को कंस बोलें नंद ले सुत न हम पाहुवे गे आवे ॥ सूर प्रभु र
स की साध प्रति ही मोहि कहो समुझाय जिनि गहरु लावे ॥
५ ॥ राग कान्हरो ॥ सुन्यो ब्रज लोग कहत यह बात ॥ चकृत भये
नारी नर ठाठे पांचन आवे सात ॥ १ ॥ चकृत नंद जसुमति भई
चकृत मन नहीं मन अकुलात ॥ देखें सेन स्याम वलिराम
हि सबें बुलावन जात ॥ २ ॥ पारब्रह्म अविगत अविनासी ॥
माया रहित अतीत ॥ मनो नाहिं पहुंचों निकहू की करत स
वें मन भीत ॥ ३ ॥ बोलत नहीं नेंक चित वत नाहिं सुफलक
सुत सो पागे ॥ सूर हम हिं हितकारी नृप बोले इहूं कहन ना
आगें ॥ ६ ॥ राग विहागरो ॥ व्याकुल भये ब्रज के लोग ॥ स्याम
मनहिं मन नेंक आनत ब्रह्म पूरन जोग ॥ १ ॥ कौन माता पि
ता को हैं कौन हैं पति नारि ॥ हंसत दोउ अक्रूर के संग नव
ल नेह विसारि ॥ २ ॥ कोउ कहति यह कहां आये कूर याकों वा
म ॥ सूर प्रभु लें जात जे हैं और संग वलिराम ॥ ७ ॥ राग विहाग
रों ॥ चलन चलन स्याम कहत लेन कोउ आयो ॥ नंद भवन
भनक सुनी कंस कहि पठायो ॥ १ ॥ ब्रज की नारि गृह विसारि
व्याकुल उठि धाई ॥ समाचार बूझन को आतुर ह्वै आई ॥ २ ॥ प्री
ति जानि हेत मानि विलखि वदन ठाढीं ॥ मान हुवे अतिवि

www.vallabhacharya-agrakera.org

॥सू॰सा॰ चित्र चित्रं सी लिखि काढी ॥ ४ ॥ ऐसी गाति ठौर ठौर कहूं तन न बनि आ
॥२०३ वें ॥ सूर स्याम बिछुरे दुख बिरह काहि भावें ॥ ५ ॥ रा॰ग कां॰हरो ॥ च
लत जांनि चितवति ब्रंजजुवती मानहूं लिखी चितेरे ॥ जहां सु
तत हां एक टक जो बनि फिर तन लोचन फेरे ॥ १ ॥ बिसरि गई
गति भांति देह की सुनत न श्रवन निटेरे ॥ मिलि जु गए मेंमा
नों पय पानी ह्वें निरखत नहीं निबेरे ॥ २ ॥ लागे संग गंवारे न मन म
के घिरत न के सेहू घेरे ॥ सूर प्रेम प्रंकुस आसा तजि नाहिन
इत उत हेरे ॥ ३ ॥ रा॰ सारंग ॥ सब सुरफां नेरी बलि बेकी सुनत
भनक ॥ गोपी ग्वालन नेंन जल ढारत गोकुल मांहू कें रह्यो भूर
चनक ॥ १ ॥ यह अक्रूर कहां ते आयो राहूत लग्यो देह अकमक
सूरदास स्वामी को बिछुरत घटत नहि चहें प्राण तनक ॥ २ ॥
रा॰ रा॰ कली ॥ देखि अक्रूर नर नारि बिलखें ॥ धरनि जनन जरा हे
त बोले इ न नहिं और नाहिं सबनि कहि मन तोषे ॥ महरि स्याकुल
दोपि पाय गहि लें परी नंद उपनंद सगा जु हूले कों ॥ राज को अंस
लिखि लेहु दूनों देहु मेंके हां करों सुहूदु निरखें ॥ १ ॥ कहति ब्र
जनारि नेंन नि निरी स्यामके इनहि को काज मथुरा कहां हैं ॥ स
र नया क्रूर अक्रूर कूर भये तु खरे खन न कहत कपटी महा है
॥ ३ ॥ रा॰ सारंग ॥ ब्रंजबासीन के रस बस स्यांम ॥ श्रीअक्रूर क्रूर बस मा
तृजी कोंन मिलो हलधर बलिराम ॥ १ ॥ अपनो लाग लेहु लेखो करि
जे कछु राज अंस के दाम ॥ और महा मिलें संग गति धायो न गर
कहां लगि कन को काम ॥ २ ॥ संतत साधु परम उपकारी सुनिय
त बडो नित हायो नांम ॥ सूरदास प्रभु पठइ मधुपुरी को न बिंधि
तु बास रजांम ॥ ३ ॥ रा॰ सारंग ॥ नहि कोउ स्याम हें राखें जाय ॥ सुफ
लक सुत बेरी भयो मो को कहति जसोदा माय ॥ १ ॥ मदनगो
पाल बिना घर आंगन गोकुल काहि सुहाय ॥ गोपी रही ठगी
सी ठाढी कहां ठगोरी लाय ॥ २ ॥ सुंदर स्याम राम भरि लोचन
बिन देखें सो उ भाय ॥ सुरति न हि लें चले मधुपुरी हिरदें सूल ब
ढाय ॥ ४ ॥ रा॰ सोरठि ॥ मोहन इतनों मोहि चितधरियें ॥ जननी दु
खित जांनि कीरि कबहूं मथुरा गवन न करियें ॥ १ ॥ यह अक्रूर कू
र कृत न पहिलें तुम हिलें न हें आयो ॥ तिनहि भये पुरखले पानि
क बिधि यह ठाठ बनायो ॥ २ ॥ मो सी माततात ब्रंजपति सों क
हत रहत न रोइ भाई ॥ ती सुख चलन कहति सुनि जीवति मे

www.vallabhacharya-agrahara.org

रोकछुनवसाई ॥३॥ सूरसरूपविलोकिजसोराधरनिपरमुर
झाई ॥ बलिबलिजाउंमुखारविंदकीबरुजातिरहौंकन्हाई ॥४॥ रा
गसारंग ॥ जसोदावारवारयोंभाखे ॥ हैकोउब्रजहितूहमारोचल
तगोपालहिराखे ॥१॥ कहांकाजमेरेछगनमगनकोनृपमधुपु
रीबुलायो ॥ सुफलकसुतमेरेप्रानहरनकोकालरूपव्हैआयो ॥
२॥ वरुयहगोधनकंसलेयसबमोहिबंदिलेमेले ॥ इतनोंमाग
तिकमलनेंननमेरीअखियनआगेंखेलें ॥३॥ कोकरकमलम
थानीगहिहेंकोदधिमाखनखेहें ॥ बहुरयोंइंद्रबरषिहेंब्रजपर
कोनमेरूकरलेहें ॥४॥ वासररैनिबिलोकेंजीउसंगलागिहलु
रायें ॥ हरिबिछुरतजोअसुरकर्मवसतोकिहिकेंढलगाउं ॥५॥ प
रीहेपिधरपरतिजसोदाअधरवदनबिलखानी ॥ सूरसुरसा
कहांलगिवरनोंदुखितनंदरानी ॥६॥ राग सोरठ ॥ सुफलक
सुतकेसंगसोंहरिहोतनन्यारे ॥ वारवारजननीकहेंमोहित
जोंदुलारे ॥१॥ कहांठगोरीएहिकरीमेरोंबालकमांग्यो ॥ इहाक
एकघिमरतिहोंमोतननहिजोघ्यो ॥ कंसकहोपरमाधिकेंसं
गमेलेजेहों ॥ धनुषजग्यहरिखरकेतुरतहिलेआहों ॥३॥ घर
घरगोपनसोंकह्योंकरभारसोरावहु ॥ सूरनपतिकेद्वारकों
उठिप्रातचलावहु ॥४॥ राग बिहागरो ॥ जसुमतिअतिहीभईबि
हाल ॥ सुफलकसुतयहतुमहिंवूझियेंहरतहोंमेरोबाल ॥
एदोउभेयाब्रजजीवनिहैंकहतिरोहिनीरोइ ॥ धरनीगिरति
दुरतिअतिव्याकुलकाहेराखतिनहिकोइ ॥१॥ निठुरभयेजव
तेंयहआयोघरहूआंखतनोहि ॥ सूरकहांनृपपासतुम्हारोंहै
मतुमबिनुमरिजोंहि ॥३॥ राग सोरठ ॥ कन्हैयामेरोछोहुविसा
री ॥ क्योंबलिरामकहतनाहीतुममेंतुम्हरीमहतारी ॥१॥ नवह
लधरजननीयरमोधातिमिथ्यायहसंसार ॥ ज्योंसांवनकी
बेलिफफडिकेंफूलतिहेदिनच्यार ॥२॥ हमबालकतुमकों
कहांसिखवेंकहूंतुमाहितेंजात ॥ सूरहदेंधीरजअबधारोंका
हेकोबिलखात ॥३॥ राग सोरठ ॥ यहसुनिगिरीधरनिझुकिमा
त ॥ कहांअक्रूरठगोरीलाईलीयेंजातदोउतात ॥१॥ वृद्धसमें
कीहरनलकुटियापायपुनउरनाही ॥ कछूनफातुमकोहै
यामेंसोचोधोंमनमांही ॥२॥ नामसुनततिअक्रूरतुम्हारोंक्रूर
भयेहोंआय ॥ सूरनंदघरनीअतिव्याकुलअसेंहिरोंनिवि

हानी ॥ ७ ॥ रा ॥ भै ॥ भोर भयौं ब्रजलोगनि कौं । ग्वाल सखा सबि
ब्याकुल सुनि कैं स्याम चलत हैं मधुपुर कौं ॥ १ ॥ सुफलक सुत
स्यंदन पलनावत देखेते हां बलि मोहन कौं । यह सुनि सुनि
घर तें उठि धाई नंद सुवन मुख जोहन कौं ॥ २ ॥ रोगिपरी गोकुल में
जहां तहां गाय फिरति पें रोहन कौं । सूर बरस कस भार सम्हार
त महरि चलत हरि मोहन कौं ॥ ३ ॥ रा ॥ रा ॥ कली ॥ चलन कह्यौ
त हें हरि आजु । अब हो गई अवधि सुनि आई करत गवन कौ
साजु ॥ १ ॥ को उ एक के सखा पर करि पठयौं कछु संदेस हैं हाथ ॥
सोलें चल्यौं हमारौ जीवनि सब निधि अपने साथ ॥ २ ॥ अब यह
सूलन जात सखी री सहि रहियें कपि लाज ॥ धीरज अवधि अ
सदेसें नंदनावत चले ब्रजराज ॥ ३ ॥ छांडै ब्रजगनी बन को आ
सा कें छांडे कुल कानि ॥ करियें बिनती कमल नयन सौं सुर
समौ यह जानि ॥ ४ ॥ रा ॥ रा ॥ कली ॥ चलत हरि अगज् रहें तन प्रान
कहां वह सुख अब उत्यो हैं सह दुखउर कोटि कुलिस समान ॥ १ ॥
चितवत नेंन चकोर सुधा बिधु देखहूं मुख छबि आन ॥ कहां
वह कंठ स्याम सुंदर भुज कर परिरंभ धर रसपान ॥ २ ॥ जाकौं जग
उपहास कियौं तब छांड्यो सब अभिमान ॥ सूर सो निधि बिछु
रत हें हम तें कठिन हें कमोन निरान ॥ ३ ॥ रा ॥ रा ॥ कली ॥ सुनें हैं स्या
म मधुपुरी जान ॥ सकुचनि कहिं न सकति काहू सों गुपत हृदे की
बात ॥ १ ॥ संकित बचन अनागत कोऊ कहि जु गई अधिरात ॥ नींद
न परें घटें नहिं रजनी कब उठि देखौं प्रात ॥ २ ॥ सुफलकसुत हम अ
सो छांडौ ज्यों जल पुरइन पात ॥ सूर स्याम संग तें बिछुरत हें कब
लौं हैं कुसलात ॥ ३ ॥ रा ॥ रा ॥ कली ॥ आगि निते बिरहागिनि तानी ॥ मा
धौं चलन कहत मधुबन कौं सुनें तपी अति छानी ॥ १ ॥ त्यागि हित नाग
रि नागरि बिरह बस जरति दिया ज्यों बाती ॥ जे जरि मरी प्रगट पावक
परि तें त्रिय अधिक सुहानी ॥ २ ॥ ढारति नीर नेंन भरि भरि बंदि
आकुल ता मरमांती ॥ सूर बिथा सोई पैं जानें स्याम सुभग रंग राती ॥
३ ॥ रा ॥ आ ॥ वरी ॥ स्याम गये सखि प्रान रहेंगे ॥ आस पर सज्यौं वा
तें कहियत ने सें हि बहुरि कहेंगे ॥ १ ॥ इंदु बदन रखानें नहमारे जा
नति औरच हेंगे ॥ बासर निसि वर्द्धूं हो तन पारे बिछुरन दह देंस
हेंगे ॥ २ ॥ एक कहें तुम आगें बानी स्याम न जाय रहेंगे ॥ सूरदास
प्रभु जसुमति कौं न जिमसु कहां लहैंगे ॥ ३ ॥ रा ॥ सो ॥ ठि ॥ गोपा

www.vallabhacharya-agrahara.org

ललालकी अवलंबन प्रांन ॥ क्रूरबचनउरक्रूरक्रूर संगलागे
मथुराजान ॥ १ ॥ क्रूरनामगुणक्रूरक्रूरमतिकाहेकोंगोकुलआए
क्रूरकंसनपवैरजानिमेरीनिधिलेंनपठाए ॥ २ ॥ बपबाप्रजननी
कहिमोसोंमांगनमांगतजोंन ॥ सूरतिनहिलेवेकोंआयेकरि
होंसूनेंभोंन ॥ ३ ॥ रा० कल्यान ॥ स्यामचलनचहतकह्यौंसखीएक
आई ॥ तबमोहनरथवैठेसुफलकसुतचलनचहतयहसुनि
सबचकितभईविरहदोंलगाई ॥ १ ॥ धुकिधुकिसबधरनिपरी
ज्वालाफरलतागिरी मनोंतुरतजलरवरषिसुरतिनीरपरसी
धाईसबनंदद्वारवैठरथपरदोउकुमारजसुमतिलोटतिभुवपर
निठुरहृदयरसी ॥ २ ॥ कोंनमातकोंनपिताआपब्रह्मजगधाता
राख्योनहिकछुनातनेंकनेहमांहीं ॥ आतुरअक्रूरचढेरसनाह
रिनाहरटेंसूरजप्रभुकोमलतनुदेखिचेंनमांही ॥ ३ ॥ रा० वि
लावल ॥ आतुररथअक्रूरचढे ॥ तबरसनाहरिनांमभाखिकें
लोचननीरमढे ॥ १ ॥ महरिपुत्रकरिसोरलगायोतरुज्योंधरनि
लुठाई देखतिनारिचित्रसीठाढीचितयेकुवरकन्हाई ॥ २ ॥
इतनेंहिमेंसबस्यियोंसबनिमोमिलिहेंअवधिबताई ॥ तन
कहंसेहरिमनजुवतिनकोंनिठुरठगोरीलाई ॥ ३ ॥ बोलतन
हीरहीसबठाढीस्यामठगीब्रजनारि ॥ सूरतुरतमधुबनप
गधारेंधरनीकेहितकारि ॥ ४ ॥ रा० धनाश्री ॥ कांन्हकहांधोंक
ह्यों ॥ वेगिसुवचनसुनायसखीरीनाहिनुपरतरह्यो ॥ १ ॥ कह्यों
करोंघोषतेंलैनिधिदूतदूरिनिवह्यो ॥ होंमतिहीनकरीवि
धितेहिंछिनुभूलीमरतनिरह्यो ॥ २ ॥ सबेंअजानभईजेहि
औसरकाहूरथनगह्यो ॥ सूरदासप्रभुहृपालाजकरिदुस
हवियोगसह्यो ॥ ३ ॥ रा० सारंग ॥ हरिविछुरतफाट्योनहियों
भयोंकठोरबज्रतेंभारीरहिकेपापीकहांकियो ॥ १ ॥ घोरि
हलाहलसुनिमेरीसजनीओसरतवनापियों ॥ मनसुधिगा
ईसमारनतनकीक्रूरदावअक्रूरदियों ॥ २ ॥ कछुनसुहाय
जबतेंनिधिविछुरीभवनकाजकोंनेंमलियों ॥ निसदिन
रटतसूरखालिहरीमरिवोंनतननिजातजियों ॥ ३ ॥ अथम
थुराचरित्रलीला ॥ रा० धनाश्री ॥ अनिलविरहआनिअ
तिताति ॥ मांधोचलनकहतमधुवनकोंसुनतकपातिहै
छाति ॥ १ ॥ धनितेंनागरिनहीमानतीहिंदेहजरातिजिमि·

www.vallabhacharya-agrahara.org

सू.सा. वाती ॥ सेवसंगमरहे ही अगारपावकजरि वहै जियकौं न मुहाती
१०५ ४ ॥ जानें कौन कहां सुख निकसत चिक लभई मरमांती ॥ सूरदा
स सोई पे जानें जो पहूं रस रंगराती ॥ ३ ॥ रा॰ धनाश्री ॥ गोपाल इत
नो मोहन धरियें ॥ जननी दुखित जांनि निदरन दरन मधुपुर गवन
न करियें ॥ १ ॥ वह अक्रूर भयौ हम कहां लेन इहां लौ आयौ ॥ नि
ठुरो भयौ कर्म बलपुर कौ विधि संयोग बनायौ ॥ २ ॥ चलनन
नि आयौ ब्रजवासी रहि न देह सुधि ज्ञान ॥ गोकुल के पहलौ
ग वन ने हरि तज्यौ खुद्ध अरु धान ॥ ३ ॥ फिरि चितयौ न वच्छ वधिव
ज्यौं हरि रह्यो प्रानपति आस ॥ सूरदास प्रभु कौ निहारि कें आ
ई सब ब्रजवास ॥ ४ ॥ रा॰ धनाश्री ॥ विनु परवहि उपगार कह्यौ क
हां जानें पहरावरमापति कबधौं मोंधलह्यौ ॥ १ ॥ इम हरमन
धु कि धरत चांपके परस्यौं न परन सह्यौ ॥ यह रस सि अब ऐसौ
लागत बिन मांखन प्रेम सह्यौ ॥ २ ॥ सारदचंद ज्यौं उगन भागनमें
राधा आंनि गह्यौ ॥ ता के बीच ननंनें ननदि मिलि अंजन रूप र
ह्यौ ॥ ३ ॥ विरह संधि वलि पाई मनें हरि हैं तिय वरन गह्यौ ॥
सकल गुलनि भय सूरज प्रभु सुख छवि मों अधिक रह्यौ ॥ ४ ॥
रा॰ धनाश्री ॥ परम वियोगिनी सव मिलि ठाढी ॥ ज्यौं जलही
न दीन कुमुदनि गगन लखि प्रकास की डाढी ॥ १ ॥ जेहि विधि मीन
सलील सों विछुरौ अति अधीन कुम्हिलानी ॥ सूखौं अधरसु
हूत नहि आवे वचन रहित मुख बांनी ॥ २ ॥ उन्नत स्वास विरह
विरहिन उर कमल चरन विलखांनी ॥ भीजत नैनन निमेष छि
न हूं छिन मिलन कठिन जियजानी ॥ ३ ॥ बिन वल बुद्धि विकि
लउन्नति है चलिन सकन पचिहारी ॥ सूरदास प्रभु औधिक
होनो प्रान नजति ब्रजनारी ॥ ४ ॥ रा॰ गोरी ॥ हरि बिन कौन सों क
हियें ॥ जो अक्रूर बोल्यो होति न के सोई गुनें गुन रहिये ॥ १ ॥ कासें
कहूं कहां कोउ कोरिहें ना हक अनल जुरहियें ॥ सूरदास प्र
भु सुख रस कों मगुजा वत रहियें ॥ २ ॥ रा॰ आसावरी ॥ हरि हि
न देख्यौ तौं मगन की मालहीं ॥ इन मगन अब नहीं इहि वनमें है
भुज भरि भेटि हों गोपालहीं ॥ १ ॥ निरखित तनु त्रिभंग पुलक
सकंकल अंग अक्रूर धरनी जैसे कालनि ॥ पयि हों पाइन जाय के
ठलगाय भुजनें चटतजाइ सैलनालनमालहि ॥ २ ॥ परसि प्रेम
आनंद सी विके कामना कहि हों प्रगट प्रभु पुन प्रवालहि

www.vallabhacharya-agrahara.org

बयनरयनहास सुमनसुखनिवास फूलतिफलअभरनत्र
यरमालहि ॥ स्फुरतसुभसुबाहु लोचनमनउछाहभक्तनयह
इच्छालोचनचलेप्रबालहि ॥ मनसुचितसबसुकृतमनोर
थचलसुंदरराजगतिउतालहि ॥ ४ ॥ निगमकहतिनेतिशि
वनसकतेतिसूरसुहृदेलाएजेहुदयालहि ॥ ५ ॥ राग नट ॥ चलन
चलनकहतहैंश्यामलेनकोउयहआयो ॥ नंदभवनमेंमनरी
सखिकपटीकेसहतपठायो ॥ १ ॥ ब्रजकीनारीगृहबिसारीस
कलजुलटीजुधाई ॥ पूछनकोसमाचारजसुमतिपेंआतुरह्वे
आई ॥ २ ॥ नियहिंजांनिसोचमिलिबिलखिबदनसबहीठाढी
मांनहुवेप्रतिचित्रचितेलिखिहेंकाढी ॥ ३ ॥ एसीपेंगतिठौर
ठौरकहतनबनिआवे ॥ सूरदासबिछुरनबिपतिबिरहका
हूनआवें ॥ ४ ॥ राग नट ॥ तबकनबिचारीरी यहबात ॥ चलननपैं
रागही मोंहनकीअबकहारीपछितात ॥ १ ॥ निरखिनिरखिमु
खरही मोंनह्वेचकितभईबिलखात ॥ जबरथभयोहरिअ
गोचरलोचनअतिअकुलात ॥ २ ॥ सबनिअजानभईउहिऔ
सरआतिठिकगहिसुतमात ॥ सूरदासस्वामीकेबिछुरेंकों
डीभरिनबिकात ॥ ३ ॥ राग नट ॥ चलनजांनिचितवतब्र
जजुवतीजांनोंलिखीचितेरनिह्लों ॥ जोईजोईजहांसोतहांत
ईइकटककाठीपिरिनिनहींमनफेरनिहलो ॥ १ ॥ बिसरीमति
गतिबचनाबिकसुनितश्रवणनिसुनतनटेरनिहूलो ॥ सूरद
सआसाअंबक्समबपुउलटेप्रभुकोंहेरनिहों ॥ २ ॥ राग पूरबी
देखिबेआवतहेंबनमाली ॥ जिनपहलेंपालनपोढनपेंप्या
बतपूतनाडाली ॥ १ ॥ अघबकबृषभबरूनकेशीनहिंसम
रतकपटीकंसकुचाली ॥ अबबिधुबदनबिलोकिसुलो
चनश्रवणसुननहीआली ॥ २ ॥ धन्यसुगोकुलनारिसूरप्र
भुप्रगटप्रीतिप्रतिपाली ॥ ३ ॥ राग पूरबी ॥ कहुंजातदेषेंपि
यमेरें ॥ जबतेंहपिमधुबनहिसिधारेकबहुंनफिरेंनफे
रें ॥ १ ॥ पथिकनचलनसंदेसनपावतमगजोवतभईउरो
ताबितुकोंनकरेंजुसूरजप्रेमजुवतिनिबेरें ॥ २ ॥ राग धना
श्री ॥ मोंहनतेंकनंदनंदनहेरें ॥ राखतहेंतातजननीकों
मरनसुपाललालमुरफेरें ॥ १ ॥ बिछुरनभेटदेहुटेढेहुं
इनिरषोंघोषजनमकोंखेरो ॥ सबधोंसाबाबुलायसंगके

www.vallabhacharya-agrahara.org

सू.सा. अपनीगायग्रानितुमघेरों ॥२॥ पाछेंचढहुविमानमनोहर
१०६ बहुरोंजदुपतिहोतअवेरों ॥ गाएनप्रांनसूरप्रहसुनिकपि
जतनजसुमतिवहुतेरों ॥३॥ रा॰ग॰ विहागरो ॥ भवनभयानक
लागेमाईस्यांमविना ॥ देखहिजायकाहिलोचनभरिनंदके
अंगना ॥१॥ लैंगयेअक्रूरक्रूरताहिकोंआजकेप्रांनधना ॥ कों
नमहाववकेंगहहुअपनेमेटेविघनघना ॥२॥ काहिउठायगोद
धरिलीजेंकोरिकरिमनामना ॥ सूरदासमोहनदरसनविनसु
खसंपतिसपना ॥३॥ रा॰ग॰ कान्हरो ॥ नंदहरितुमसोंकहाकह्यों
सुनिसुनिनिठुरवचनमोहनकेकैसोंकरिदुखसह्यो ॥१॥ छांडिस
नेहचलेमंदिरकतदौरिनक्यनगह्यो ॥ फाटिनगईवज्रकीछा
तीकेतइहसलसह्यों ॥२॥ सुरतिकरतमोहनकीवातेंनेंननि
नीरवह्यों ॥ सुधिनरही अतिगलितगातभयोंमनुडसिगयोंअ
ह्यों ॥३॥ कहसछांडिगोकुलकतआएचाखनदूधदह्यों ॥ तजेंन
प्रांनसूरदसरथलोंहूतोंजनमगह्यों ॥४॥ अथ म रा हु री
लीला ॥ रा॰ग॰ गोरी ॥ वहदेखोंआवतनंदनंदनवनमाली ॥ घनतन
स्यांमपीतपटसुंदरनैंनविशाली ॥१॥ जिनिपहलेंहीपलना
पौढतपेंपीवलपूतनाडाली ॥ अघवककरिछअरिष्टकेशीमपि
जलतेंकाढ्योंकाली ॥ जिनिहृतिसकटप्रलंबतृणाव्रतइंद्र
प्रतिज्ञापाली ॥ इनेंसपरअधीनमानतनहेंकपटीकंसकुचा
ली ॥३॥ अववितुवरनविलोकिसुलोचनश्रवणनिसुनतजु
आली ॥ धन्यतीयगोकुलकीनारीप्रगटेसूरप्रतिज्ञापाली
॥४॥ रा॰ग॰ सारंग ॥ मेरेकमलनयनप्रांनतेंप्यारे ॥ इनकोंकोंनम
धुपुरीपठवेंरामकृष्णदोउजनवारे ॥१॥ नसुधाकहेंसुनोंसु
फलकसुतमेंपयानममकंपिहारे ॥ एकहूंजांनहिसभाएन
कीगुरुजनविप्रनिजोहारे ॥२॥ मथुराअसुरसमूहवसतहें
करकृपानजोधारपियारे ॥ सूरदासस्वामीएलरिकाइनके
करेंखेमहन्नअखारे ॥३॥ रा॰ग॰ केदारो ॥ मथुराकेदुमटेरिवियतन्या
रे इतनीभूमिसंदेहमिलनकोसुनियततेरिपुकारें ॥१॥ नुमवि
नपयामनोहरमूरतिमदनवांनहमिमारें ॥ सूरस्यांमविनभ
एगोहवनगगनगननननिषितारे ॥२॥ रा॰ग॰ नट ॥ कहूंजातरे
छ्यांपियमेरो ॥ जवतेंहरिमधुवनहिसिधारेकवहूंकियोंनफे
रों ॥१॥ पंथिकनचलतनहेंदेमनपावतमगजोहतभएडेरों ॥ ना

www.vallabhacharya-agrahara.org

बिनु बोंन को जू सूरज प्रेम न जुवति निबेरों ॥२॥ राग नट ॥ मो को
नाह री बार भई ॥ जब तें हरि मधुबन हि सिधारे तब तें सुधि न लई
य ॥ कहां कीजें संगाति नीचे की मन अति दुखित भई ॥ चंदन चीर
अगिनि सम लागत सब सुधि ह्वै गई ॥२॥ सूरदास प्रभु दरसन
दीजे नेंक जमे याठई ॥ तेरी गति मो कोइ है सुमिरन अब कछु मां
न भई ॥३॥ राग सारंग ॥ [illegible] हियत हरि आजु ॥ अब
ही सखी देखि आई होंका तग बन को साजु ॥१॥ कोउ कंस कप
ट करि पठयो कछु संदेस टे हाथ ॥ सो अब लयें जात है निजु नि
धि बल करि अपने साथ ॥२॥ ऐसी बात जु नाहि न सखि री धरि
है हैं जिय लाज ॥ धीरज तें न हि रहे पियारी दृगि गाग्वे काज ॥३॥
पर हरि या जीवन की आसा अबगुर जन की कानि ॥ बिन लिख
री बलि कमल नयन पें सूर समें पहचानि ॥४॥ राग मारू ॥ सुन्यों
बसुदेव नंद सुवन आयों ॥ त्रिया सों कहत कछु सुनत है री
नारि रानिहूं सुपनें कैसें पायो ॥१॥ गाम अक्रूर श्री कृष्ण लेन को
आज्ञा पाय तुरत धायो ॥ रंगराज नों डिकें धनुष विडार कें रंगभू
मि रजा जीती पालों काहू वे रवि सायो ॥२॥ दयें लोचन ठारी न कं
पक हामांन कहां हम पाप कसि जन पीनो ॥ सो तो देखन भाए
ब्रजराज नैं वचें अब हीं मन कर्म चीनो ॥३॥ छोडि बंधन तें बसुदे
व की तो हि लाज न मरि मरी भलो ॥ कछु लिखि कर्म सो हे यबा
ही विधि हो निहोय सो मेटें न मूलो ॥४॥ राग रामकली ॥ तब ब
सुदेव हरखित गात ॥ स्याम रांम ह्री कंठ लगाए आनंद है भ्रा
त ॥१॥ अमर देव शब्द भयो दुंदुभि अति ही जे जे कार ॥ दुख द लि
य सुख दए दंनहि कल समंगल धारि ॥२॥ तुरत विप्रन बो
लि पठये धेनुकोटि मगाय ॥ सूर के प्रभु ब्रस पूरन पाय हर
ख बढाइ ॥३॥ राग परज ॥ रानी न परमोधि स्यांम मह्ल ढारत्रा
ए ॥ काल्ब्स ने मी उग्रसेन नि सुनत धाये ॥१॥ ढकि चरन पर्यौं
आय त्राहि त्राहि नाथ्था ॥ बहुतें अपराध परे छिमहु मोहि स
नाथ्था ॥२॥ महाराज कहि श्री मुख लिये उर लाइ ॥ हमकुं अप
राध छमहु करि हम ढिठाई ॥३॥ तबही सिंघासन पें उग्रसें
न धारे ॥ छत्र सिर धराय चवर अपने बर ढारे ॥४॥ ठाडे आधी
न भये देव देव भाखे ॥ अपन जान के प्रसाद साद राखि सराखे
५ ॥ मो कों कहां इती प्रभु विस्व मान स्वामी ॥ घट घट के जान

www.vallabhacharya-agrahara.org